प्रकाशक :

**श्री रामनिवास धाम ट्रस्ट**
शाहपुरा (भीलवाड़ा)







प्रथम संस्करण : ५०००



मुद्रक :

**श्री रामस्नेही मुद्रणालय**

॥ राम ॥

# प्रकाशन विभाग की ओर से !..

अन्तर्राष्ट्रीय श्री रामस्नेही सम्प्रदाय के वर्तमान पीठाधीश अनन्त श्री विभूषित पूज्यपाद स्वामीजी श्री रामकिशोरजी महाराज की वर्षो से हार्दिक उत्कट इच्छा थी कि प्रात.स्मरणीय परम पूज्यपाद १००८ श्री स्वामीजी श्री रामचरणजी महाराज, उनके पश्चात हुए पीठाधीशो एव अन्य महान् सन्तो द्वारा रचित साहित्य के मुद्रण एवं प्रकाशन हेतु 'श्री रामनिवास धाम' पीठ-स्थल का अपना स्वयं का मुद्रणालय होना चाहिए। परम प्रिय भक्त श्री मनुभाई मुरारजीभाई पटेल, निवासी पादरा, गुजरात, ने आचार्य श्री की इस इच्छा को मूर्त्त रूप दिया एवं आज 'श्री रामनिवास धाम ट्रस्ट' का अपना स्वयं का मुद्रणालय होकर रामस्नेही सत्-साहित्य का प्रकाशन एवं प्रचार का प्रथम प्रयास आपके सम्मुख प्रस्तुत किया जा रहा है।

प्रत्येक सम्प्रदाय की निरन्तरता एव अक्षुण मान्यता उस सम्प्रदाय से सम्बन्धित साहित्य के निरन्तर प्रकाशन एव प्रचार पर निर्भर होती है। अतः परम पूज्य १००८ आचार्य श्री स्वामीजी रामकिशोरजी महाराज के आशीर्वाद एव प्रेरणा से श्री रामनिवास धाम ट्रस्ट द्वारा सचालित विभिन्न प्रवृतियो मे श्री रामचरण

साहित्य एव वाणीजी के प्रकाशन एव प्रचार को मुख्य रूप से सम्मिलित किया जाकर इस शृखला मे यह पुस्तक प्रथम कड़ी है।

"श्री वाणीजी" श्री रामस्नेही सम्प्रदाय की एक महान पुनीत धार्मिक पुस्तक है, जिसका उद्‌गम अनन्त विभूपित श्री १००८ श्री स्वामीजीमहाराज का अनुभव है एव इसका आधार स्वामीजी द्वारा प्राप्त सांसारिक अनुभवो का ज्ञान है। अत. पवित्र 'श्री वाणीजी' का नित्य पाठ प्रत्येक रामस्नेही का मुख्य कर्तव्यहोना चाहिए।

वर्तमान आचार्य श्री-रामकिशोरजी महाराज द्वारा पुनीत वाणोजो के चयनित पदो का संकलन नित्य पाठ के लिये इस पुस्तक मे किया गया है। यदि प्रस्तुत संकलन का थोड़ा-सा भी लाभ पाठकों को प्राप्त होगा तो हम अपने आपको धन्य समझेगे।

चूकि श्री रामनिवास धाम ट्रस्ट प्रकाशन विभाग का यह प्रथम प्रयास है, अत मुद्रण आदि मे अनेक त्रुटियो का रह जाना स्वाभाविक है। आशा है नित्यपाठी सज्जन इन त्रुटियो को ध्यान मे न रखते हुए इस प्रकाशन का अधिक से अधिक उपयोग करेगे।

**प्रकाशन विभाग**

**श्री रामनिवास धाम ट्रस्ट**

**वसंत पंचमी**

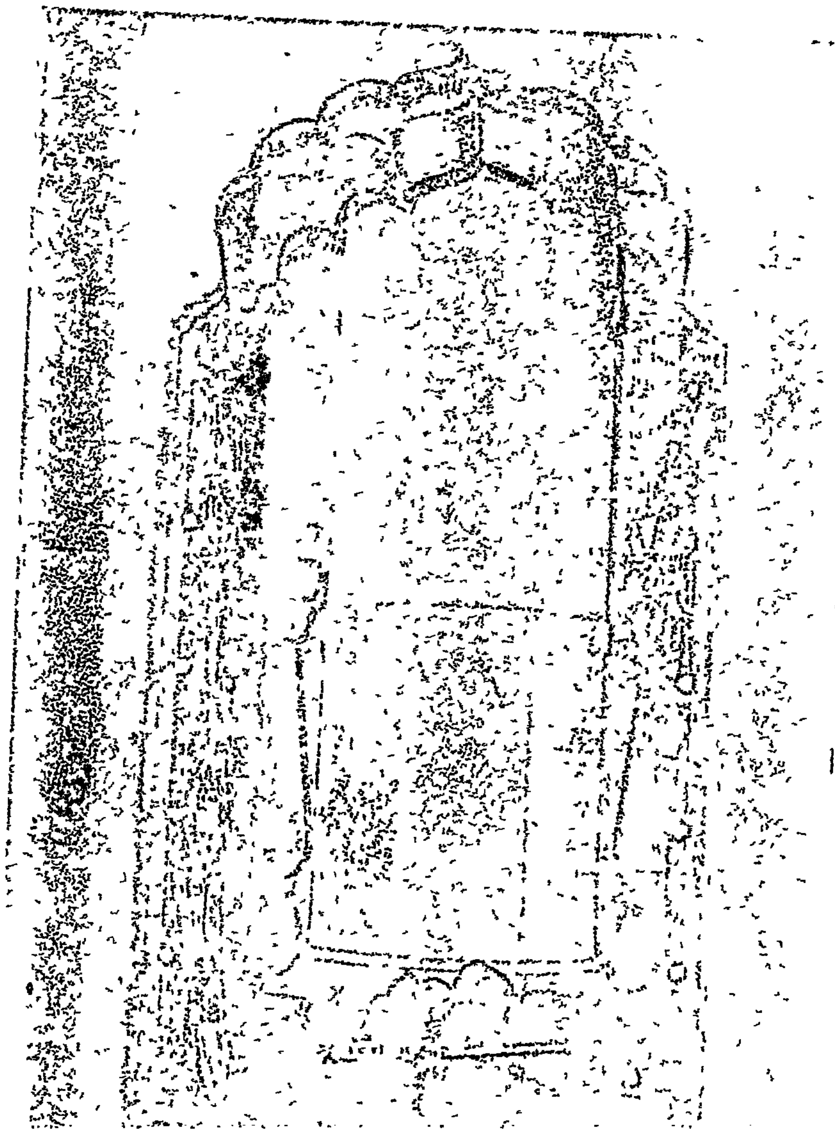
संवत २०४४



प्रात स्मरणीय पूज्यपाद श्री १००० श्री रामचरणजी महाराज

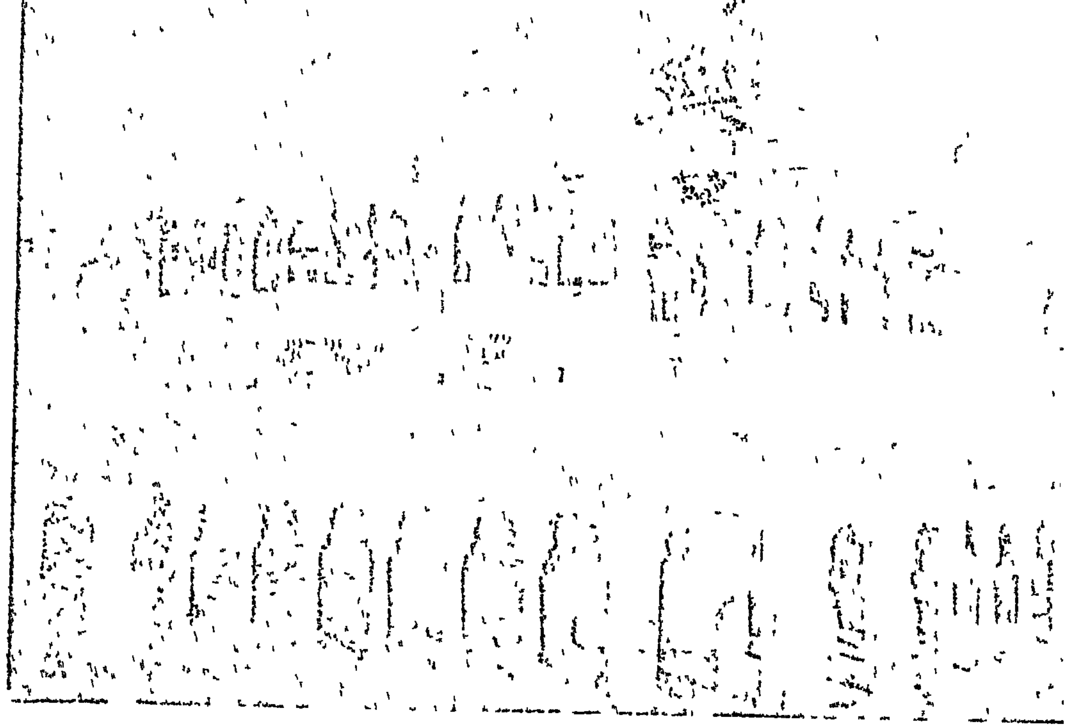
कालडा—कृष्णग ल (     र

५





स्वामीजी श्री १००८ श्री रामकिशोरजी महाराज, वर्तमान पीठाधीश



बारहदरी श्री रामनिवास धाम शाहपुरा (भीलवाड़ा)

राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम

# :: अनुक्रमणिका ::

राम

राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम

# अथ स्वामीजी श्री संतदासजी महाराज की अणभै वाणी लिख्यते

## प्रथम साखी गुरुदेव को अंग लिख्यते

स्तुति—अणभै पद प्रकाश के, दाइक सत्तगुरु राम।
अनन्त कोटि जनसा हिकी, ताहि करूँ परणाम ।। १ ।।

अग.—सतगुरु का एको शब्द, मन्न कोई लेवे मान :
तो सहज होत है सतदास, मुश्किल से आसान ।। २ ।।

सतगुरु कीनी सतदास, मुश्किल से आसान ।
राम राम की होइ रही, राम-रोम रज ध्यान ।। २ ।।

सतदास हमकू किया, सत्तगुरु वड ईसान ।
देह छूटाँ छूटे नही, पारब्रह्म सूँ ध्यान ।। ३ ।।

सतदास तिहूं लोक मे, एह शिरोमणि संत ।
पूरब जन्म का वीछड्या, सोही मिलाया कंत ।। ४ ।।

सतगुरु मेल मिलाईया, सुरत शब्द का सग ।
अब छुंटत नाही सतदास, लग्या करारी रग ।। ५ ।।

सतगुरु मिलिया सतदास, कटी भरम की पास ।
जम डर भागा जीव का, वस्या राम के वास ।। ६ ।।

भो भागा जम त्रास का, लागा सतगुरु बाण ।
चौरासी का संतदास, मिट गया आवण जाण ।। ७ ।।

सतदास हमकू दिया, राम–नाम ततसार ।
ले पहुँचाया मुक्ति कू, ऐ सतगुरु का उपकार ।। ८ ।।

सतदास सतगुरु कहे, सुणो हमारी सीख ।
राम छडि कर मति भरो, अगल–बगलकू भीख ।। ९ ।।

भाडी होती सतदास,जो सतगुरु मिलता नाहिं ।
बहुत जनम का आतरा, भागा इस भौ माहि। ।१०।।

रामरच्या जोव सतदास, चौरासी कू जाहि ।
गुरु का रचीया रामभजि, मिले राम कै माहिं ।।११।।

मिलताही समै मिलाइ दे, राम मिलण की राह ।
और सपत मे काहा करू, वाहा सतगुरु वाहा ।।१२।।

सतगुरु की महिमा अनन्त, मोपै कही न जाय ।
पगुतराम था सतदास, प्रगट दिया बताय ।।१३।।

सतगुरु मिलिया सतदास, कोई पूरव जनम के भाग ।
सुरत शब्द की शुनि विच, रहीउनमनी लाग ।।१४।।

सतगुरु के सदके करू, तन अपना सौ बार ।

संतदास सतगुरु दिया, एक राम का नाम ।
जगत भुलावरा भगतसूं, नही हमारा काम ।।१७।।

सतगुरु सिंहब सरुप है, सहजै ही गाजे ।
भेड सरुपी जगत है, भिडकै अरु भाजै ।।१८।।

सही जाइ नहीं जगत सूं, सतगुरु हंदी गाज ।
सतदास सोही सहै, सो लहै अमरपद राज ।।१९।।

सतगुरु संम्रथ सतदास, सदा रहत भरपूर ।
दिखलाचत उनसूं मिल्या, तेजपुंज का नूर ।।२०।।

सतगुरु सम्रथ सतदास, वड़ा वेद जग माहि ।
कठिण रोग जामण मरण, सो फिर आवे नाहिं ।।२१।।

।। इति ।।

# अथ साखी सुमरण को अंग लिख्यते

सतदास इक शब्द विच, जो मन रहै समाय ।
तौ चौराशी आवै नही, जमका धका न खाय ।। १ ।।

सब नामां मे राम नाम, जोति सरुपी एह ।
कोई जगावै ध्यान धरि, तो धरै न दूजी देह ।। २ ।।

पल-पल काची देह की, छीन होत है आव ।
नर क्यूं चूके सतदास, राम भजन का दाव ।। ३ ।।

जेते राम विसारिये, तेती गिनीये हाण ।
जेते राम चितारिये, तेती ही वृद्धि जाण ।। ४ ।।

जीवण मरण लग एक रस, रहे राम सूं प्रीत ।
संतदास नर देह की, वै गया ज बाजी जीत ।। ५ ।।

संतदास कोई इन्द्र सूं, नर वड भागी होय ।
राम नामकूं रात दिन, याद करत है सोय ॥ ६ ॥

राम नामकूं संतदास, याद करै जो कोय ।
मुक्ति लहै सुख में रहै, मनवाँछित फल होय ॥ ७ ॥

राम कृपा जब होत है, तब कह्या जात है राम ।
राम कृपा विन सतदास, होत नही एह काम ॥ ८ ॥

राम भजन की औषधि, जो अठपहरी खाय ।
सतदास रुचपच रहै, तो चौरासी मिटि जाय ॥ ६ ॥

राम नाम का सतदास, कर रे कर कुछ ध्यान ।
बेर-वेर नही आंवसी, मिनख जनम मिझमान ॥१०॥

गौरा कूं शकर दियो, अजर अमर धन एह ।
ताके पीछे संतदास, धरी न दूजी देह ॥११॥

राम नाम धन सतदास, लै रख्या मन माहि ।
अब तो राम प्रताप तै, कमी काहि की नाहि ॥१२॥

वरसंता ऊगै नही, मारग माहीं घास ।
राम कह्यासू सतदास, होय करमा का नाश ॥१३॥

आकाशा धूर कहत है, कहत पताला शेष ।
मध्य लोक विच सतदास, राम ही कहत महेश ॥१४॥

राम मन्त्र कूं सतदास, पढिये वारम्बार ।
राम बिना छूटै नही, नहचै नरक दुवार ॥१५॥

इम्रत पावै संतदास, पीवै नही संसार ।

सरीत लिखूं क्या सतदास, वाकी याही रीत ।
राम कहत अधम तिर्या, यूं मेरे परतीत ॥१८॥
अगन जलावे सतदास, वाको योही सुभाव ।
राम नाम त्यारे सही, लै कोइ भाव अभाव ॥१९॥
सुमरण कीजै सतदास, दीजै सुरति मिलाय ।
ररकार का ध्यान से, मुडै न मोडी जाय ॥२०॥
सतदास ससार के, नाम नाम सब एक ।
कण सरूपी राम है, कूकस नाम अनेक ॥२१॥
असत शब्द सू सतदास, गिर तिरीया जल मांहि ।
जिस दिन तो दूजा शब्द, लिखिया कोई नाहिं ॥२२॥
राम नाम गलतानप्रद, मिलै स होइ गलतान ।
एही करता सरुप हैं, ये ही परम निधान ॥२३॥
ररकार अनादि ब्रह्म, ये परम धाम विसराम ।
और सवेही सतदास, माया रूपी धाम ॥२४॥
वडा होता क्या वेर है, जो हरि पकडै हाथ ।
सतदास लकडी वधी, विन कूंपल बिन पात ॥२५॥
आठ पहर विच एक पहर, जे मुख राम कहाय ।
वाकी महिमा सतदास, मौपे कही न जाय ॥२६॥
आठ पहर बिसरे नही, पलक एक ही राम ।
वाका तो है सतदास, जीवत मुक्ति मुकाम ॥२७॥
गोकल मे गुजरी तिरी, राम नाम उर धार ।
सतदास साची कथा, देखी सव ससार ॥२८॥

॥ इति ॥

# अथ साखी वीनती को अंग लिख्यते

सतदास बड़ पतित है, तुम हो पतित उधार ।
लज्या तुम्हारा विडद की, तुम राखो करतार ॥ १ ॥

माया तेरी रामजी, तुमहीं प्रेरणहार ।
सतदास गरीव सूं, रखो दूर करतार ॥ २ ॥

जहाँ देखूं तहाँ रामजी, माया ही का झोड़ ।
संतदास की राख जो, तुम चरणां लग दौड़ ॥ ३ ॥

मेरे तो तेरा बिडदकी, है साची परतीत ।
तुम मति छाडो रामजी, अपणा घर की रीत ॥ ४ ॥

मैं तो तेरा रामजी, गुन्हेगार लख वेर ।
हाथ जोड आगे खडा, सतदास होइ जेर ॥ ५ ॥

मैं औगुण का पूतला, तुम गुणवता राम ।
औगुण दिशा निहारिहो, तो तीन लोक नहीं ठाम ॥ ६ ॥

सतदास विनती करे, सुणो अरज जगदीश ।
कीधा पाप अघोर मैं, सो गुन्हा करो वगशीश ॥ ७ ॥

संतदास गरीब है,, तुम हो वडे गरीव निवाज ।
ले निर वहिये रामजी, वाहां गह्या की लाज ॥ ८ ॥

मैं तो गूंगा बावला, कामी अरक्ल हीण ।
शरण तुम्हारी रामजी, तुम हो जांण प्रवीण ॥ ९ ॥

सतदास गरीवकूं, गोता दीजै नाहिं ।
अव बाहा पकडकर [illegible] ० ।

जनम जनम का सतदास, पालो कड़ तेरा ।
दूजा खावद रामजी, तो विन नही मेरा ॥१२॥

वालक जाई न ने डरू, सो हू तेरा अश ।
अगल वगल का सतदास, घर्‌या नही कोई वश ॥१३॥

रोवत रोवत जात है, पूत पिता की साथ ।
अब किरपा करके रामजी, क्यू नही पकड़ो हाथ ॥१४॥

रोवत रोवत पहूचीया, पिता पकड़ लीया हाथ ।
अव जाण न दैवै सतदास, चौरासी की साथ ॥१५॥

पिता हमारे राम है, सतदास है पूत ।
अरस परस दोइ होइ रह्या. जैसे उलझया सूत ॥१६॥

राम मिलण की सतदास, मेरी सरधा नाहिं ।
किरपा करके रामजी, आणि मिल्या मन माहि ॥१७॥

या तो तेरा रहण की, झू गी थोथी नाहिं ।
किरपा करके रामजी, आइ विरज्या माहि ॥१८॥

राम तुम्हारा नाम की, मै वलिहारी जाव ।
धोइ घाइ ऊजूल किया, वोहो गघा छा ठाँव ॥१९॥

गदा से वंदा भया, राम विसारत नाहिं ।
अन्धा घट था सतदास, चन्दा ऊग्या माहिं ॥२०॥

रिघ नही मागत रामजी, सिध भी मागत नाहिं ।
सतदास की सुरत ले, अटल रखौ तुम माहिं ॥२१॥

अरज करत है सतदास. मुख से एही भाख ।
अव शरण तुम्हारी रामजी, खुशी होइ ज्यू राख ॥२२॥

पकड़ गरीवी दीन होइ, मुख सूं कहिये राम ।
तव पावेगा सतदास, परम मुक्ति विसराम ॥२३॥

नाम विना वैकुण्ठ दै, तो मेरे कहि काम ।
नाम सहित दै नारगी, तो वोही बड विसराम ।।२४।।
मन की औषध मुक्ति की, राम नाम है एक ।
तन की औपध सतदास, करता करी अनेक ।।२५।।

।। इति ।।

# इक तार बोध लिख्यते

## स्तुती की साखी

अण मे पद परकाश के दायक सतगुरु राम,
अन्नत कोटि जन सहायकी ताही करु प्रणाम ।

## चौपाई

भज इक तार भरम मत भूले,, है एक तार सबन के दुले ।
विन इक तार किसी पतिव्रता, अक पीव विन सवै अवरता ।। १ ।।
राम राम की भक्ति द्रिढावे, विन इक तार राम नही पावे ।
वेद पढे पढ अर्थ बतावे, विन इक तार थाह नही आवे ।। २ ।।
विन अकुर बीज नही उगे,, विन इक तार हस क्यों पुगें ।
भटकत फिरत वस्तु नही लाद,ी विन इक तार वहो वकवादी ।। ३ ।।
गुरुप्रताप प्रेम रस साजै, ररकार सु अन हद गाजै ।

प्रान अपान पवन ले बाधे, बगला मिगला सुखमण साधे ।
अरर्थे उरर्थे सुरति लगावे, विन इक तार पीव नही पावे ।। ६ ।।
वेद पुराण शास्त्र सोधै, अर्थ करे कर जग परमाथे ।
जब लग वेद ताहा आकारा, केवल ब्रह्म वेद से न्यारा ।। ७ ।।
भेख भरोसे मत कोई भूलो, जेतो मतो ब्रह्म सू उलो ।
खट दर्शन का भेखन देख्या, रमता राम सकल पट पेख्या ।। ८ ।।
माया ब्रह्म सग नही कोई, अविचल राज करे अनभोई ।
जो उन गुरु इक तार वताया, ध्यान करे कर बहुत निपाया ।। ९।।
जैसे शिलता सिन्ध समाई, ऐसे हस ब्रह्म मिल जाई ।
है इक तार सजीवन बूटी, विन इक तार वात सव झूठी ।।१०।।
वात कहू तो कोई न माने, जिन पिछाण्या सो भल जाने ।
पूरव भाग प्रगटे आई उन, इक तार वो लख्या भाई ।।११।।
खर अखर का भेद निहारे, है इक तार सकल आधारे ।
भीतर राम जिभ्या परचावै, वेठ निरन्तर नाद वजावै ।।१२।।
वाजै नाद वाद सव छूटै, रररकार सुख हसा लूटै ।
ररकार इक तार ज स्वामी, राम राम मे अन्तर जामी ।।१३।।
दुहाः—सतगुरु से साचा रहे जो ई भजे इक तार ।
ररकार मील सतदास, सो हस उतारे पार ।। १ ।।

।। इति ।।

# अथ पद राग आसा

पद—सतो सतगुरु भेद बताया । ताते राम निकट ही पाया ।
टेर—तप तीरथ कवहु नहि कीना । पढ्या न वेद पुराना ।।

जतसत दोऊ अजव कहत है। सो सुपने नहि जाणा ॥ १

मूनी रह्या न दूधाधारी । मकर मास नहिं न्हाया
सुरतेतीसू एक राम विन। सो कबहू नही ध्याया ॥ २।

कासी गया न करवत लीन्हा । न गल्या हिमाला माही ॥
जन्त्र मन्त्र अरु नाटक चेटक । सोभी सीख्या नाही ॥ ३ ।

संजम किया न रैंण नहि जाग्या । करी न सेवा पूजा ॥
ना कुछ गाया ना कुछ वजाया । भरम न जाण्या दूजा ॥ ४ ।

राम नाम का अखण्ड ध्यान धर । अन्तर प्रेम जगाया ॥
सतदास चढि शून्य शिखर पर । इस बिधि अलख लखाया ॥ ५ ।

पद—सतो सतन का घर न्यारा । जिस घट भीतर अमी झरत है
एक अखण्डित धारा ।,

टेर—जहा घर नहो अवर दिवस नहिं रजनी ।
चन्द्र सूरज नहिं तारा ॥

जहा नही वेद पवन नही पाणी । जाहा न यो ससारा ॥ १ ॥

जहां काम न क्रोध मरे नही जामैं । नही काल का सारा ॥
जतसत तपस्या सोभी नाही । नही कोई आचारा ॥ २ ॥

सुरतेतीसू भोभी नाही । नही दसूं अवतारा ।
सतदास दीसत उस घर मै । सतो के सिरजणहारा ॥ ३ ॥

पद २—सतो उलटी कथा हम जाणी । देखत नही सुरति का अंधा ।
सिखर पर चढता पाणी ॥

टेर—देख्या ऐक पख विन हूसा । उडि वैठा आकासा ॥

कर बिन तूर जहां इक बाजै। सुणत श्रवण बिन घोरा ॥
संतदास इचरज की बाता। कोई जांणत है जन पूरा ॥३॥

## ❀ आरती ❀

ऐसी आरती करो मेरे मन्ना ।
राम न बिसरू एक छिन्ना ॥टेक॥
देही देवल मुख दरवाजा ।
वणीया अगम त्रिकुटि छाजा ॥१॥
सत गुरुजी की मैं बली जाई ।
निशदिन जिम्या अखण्ड ल्होलाई ॥२॥
द्वतिये ध्यान हृदय भया बासा ।
परम सुख जहां होय परकाशा ॥३॥
त्रतीये ध्यान नाभि मधि जाई ।
सनमुख भये सेवक जहाँ साई ॥४॥
अब जाई पहुता चौथे धामा ।
सब साधन का सरीया कामा ॥५॥
अनहद नाद झालरि झुणकारा ।
परम ज्योति जाहा होय उजियारा ॥६॥
कोई कोई सत जुगति यह जांणी ।
जन सतदास मुक्ति भये प्राणी ॥७॥

---

## अथ स्वमीजी श्री संतदासजीपरम धाम पध रि
## जिसमें का "कुण्डल्या"

अठारासे खट वर्ष में सत भये निरकार ।
बुध फागुण तिथि सप्तमो बार सनीसर्वार ।
बार सनीसर्बार डारके अनित सरीरा ।
प्रथमही मिल रहे जैसे घट भरीयो नीरा ।
परापरे पद लीनया भिन्न दृष्टि रूप आकार ।
अठारासे षठ वर्ष मे संत भये निरकार ।।१।

## अथ स्वामीजी श्री संतदासजी के शिष्य ..
## श्री कृपारामजी परम धाम प्राप्त भया
## जिसमें का कवित

अठारासे वत्तीस वर्ष भाद्र सुदी होई ।
छठ शुक्र दिन पहर ड्योढ उदोत जुसोई ।।
करत कूच किरपाल दर्श सबहीकूं दीन्हा ।
झूठी झूंगीडार परमपद वासजु कीन्हा ।।
सरणे सत दयाल के लग्र दातडे ~

# अथ स्वामीजी श्री श्री १००८ श्रीरामचरणजी म. की अनुभव वाणी लिख्यते

## प्रथम स्तूति का कवित

नमो राम रमतीत नमो गुरुदेव स्वामी,
नमो नमौ सब सन्त नाम रटि भये जु नामी ।
जिनके चरणो हेठि रहो नित शीप हमारा ,
तन मन धन अरु प्राण करूँ न्योछावर सारा ।।
राम सन्त गुरुदेव विन नही और आधार,
रामचरण कर जोड के वन्दे वारम्वार ।। १ ।।

नमो राम रमतीत सकल व्यापक घणनामी,
सब पोषे प्रतिपाल सबन का सेवक स्वामी ।
करुणामय करतार कर्म सब दूर निवारे,
भक्त विछलता बिरद भक्त तत्काल उतारे ।।
रामचरण वन्दन करे सब ईशन के ईश,
जग पालक तुम जगत गुरु जग जीवन जगदीश ।।२।।

आनन्दघन सुख राशि चितानन्द कहिये स्वामी,
निरालम्ब निर्लेप अकल हरि अन्तर्यामी ।
वार पार मध्य नाहिं कूण विधि करिये सेवा,
नहिं निराकार आकार अजन्मा अविगत देवा ।।
रामचरण वन्दन करे अलहअखण्डित नूर,
सूक्ष्म स्थूल खाली नही रह्या सकल भरपूर ।। ३ ।।

नमो नमो परब्रह्म नमो नह केवल राया,

नमो अभग असग नही कहूं गया न आया।

नमो अलेप अछेप, नहीं कोई कर्म न काया,

नमो अमाप अथाप, नही कोई पार न पाया ।।

शिव सनकादिक शेष लू , रटत न पावे अन्त,

रामचरण बन्दन करे, नमो निरजन कत ।। ४ ।।

कृपा राम कलि अरतरे, जीवन परम दरशन लहे,

जनकराय सम जाम लिप्त, होवे कहूं नाही ।

ध्रुव राजत वैकुण्ठ, यूं हि सब सन्तन मांही ।।

परमारथ परवीण, सम पीपा परमानो ।

हरि गाथा अम्बरीष, राम के प्रिय जानो ।।

रामचरण वन्दन करे, मायामांझ अलिप्त रहे ।

कृपाराम कलि अवतरे, जीवन परम दर्शन लहे ।।५।।

# स्तुति की साखियां

अनुभव पद प्रकाश के दायक सतगुरु राम ।

अनन्त कोटि जन सहाय की ताहि करुं प्रणाम ।। १ ।।

रमतीराम गुरु देवजी पुनि तिहूं काल के सन्त ।

जिनकू "रामचरण" की वन्दन बार अनन्त ।। २ ।।

सत गुरु "राम दयाल जन" घन आनन्द सुखकार ।

तिन कूं वन्दन "रामजन" करहूं नित निरधार ।। ३ ।।

अखण्ड राम गुरु सन्त जन मंगलमय सुख धाम ।

त्रिगुण पास वन्ध नाहि "चत्रदास" अनूप है ।
परिहा कर वन्दन "विधिदास" एक त्रय रूप है ।। ६ ।।
अज अक्रय आनन्द नित गुरु सन्त सद्रुप ।
"नारायणदास" वन्दन करे लख त्रय एक स्वरुप ।। ७ ।।
प्रणवत पूरण ब्रह्म कू गुरु सन्त सिर मोर ।
कर वन्दन "हरिदास" निज शीषनाय कर जोड ।। ८ ।।
नित्य निरजन रामजी सत गुरु सन्त समाज ।
"हिम्मत" हिरदे धारके करो सकल शुभ काम ।। ९ ।।
गुरु सन्त परमात्मा, तीनो रूप समान ।
दिल शुद्ध दिल मे ध्यान धर नित्य निवणता ठाम ।।१०।।
सतचित आनन्द राम है, सतगुरु सन्त मिलाप ।
"धर्मदास" वन्दन किया मिटेज तीनो ताप ।।११।।
राम सवे भरपूर है, सद्गुरु से गम पाय ।
"दयाराम" कर जोड़ के सन्त चरण चित लाय ।।१२।।
राम गुरु सर्वज्ञ हो, अधम उधारण राज ।
"जगरामदास" की राखज्यो तुम चरणो मे लाज ।।२३।।
रामगुरु अरु सन्तजन सब सिद्धि के दातार ।
"निर्भयराम" वन्दन किया उतर जाय भव पार ।।१४।।
राम गुरु अरु सन्त पद उर धर कर प्रणाम ।
दास जन लेहू शरण विनवे "दर्शनराम ।।१५।।

---

# अथ साखी प्रथम गुरुदेव को अंग

स्वामीजी श्री सन्तदास, जिनके किरपाराम ।
रामचरण ताकी सरण, सरया मनोरथ काम ।। १ ।।

रामचरण का सीस पर, स्वामी किरपाराम ।
जिनका हित परतापसू , मन पाया विश्राम ।। २ ।।

कृपाराम कृपा करी, हमकू किया निहाल ।
परउपगारी रामरत, मिलिया परम दयाल ।। ३ ।।

दया समदर 'स्याफ दिल, प्रेम भक्ति विशवास ।
रामचरण गुरु परसिया, कृपाराम निज दास ।। ४ ।।

कृपाराम कृपावत है, सवहिनकूं पोखै ।
जाकै जैसी चाहना, जिस विधि सतोखै ।। ५ ।।

कृपाराम कलिवृच्छ है, जे कोइ सरणै जाय ।
जाकै जैसो भावना, तैसा ही होइ जाय ।। ६ ।।

संत बिराजै दाँतडै, सरणाइ प्रतिपाल ।
रामचरण के उर बस, किरपाम दयाल ।। ७ ।।

राम दरगह दातडो, बहो जीवनकूं विश्राम ।
तप्त मेटि सीतल करै, स्वामी किरपाराम ।। ८ ।।

दत नारद सुखदेव से, और सबै अवतार ।
रामचरण गुरुकू करै, वन्दन वारम्वार ।। ९ ।।

काहा वरणू विसतार कर, सतगुरु गुणा पार ।

भार लिया ते बूडिया, भवसागर की धार।
रामसुमरि हलका भया, सो नर उतरया पार ॥१२॥

रामचरण सतगुरु बिना, कूण करे उपगार।
भवसागर की धारसे, तुरत लगावण हार ॥१३॥

नौका नाम बणाय कै, सत करै भवपार।
रामचरण जग नाचदै, ताते बूडैधार ॥१४॥

रोम-रोम विषसे भरया, निरविष कैसे होय।
राम सुधारस पायकै, सतगुरु करि है साय ॥१५॥

जैसी कोई न कर सकै, सो सतगुरु से होय।
रामचरण गुरु गारडू, सब विषतारै धोय ॥१६॥

सतगुरु बरस्या इन्द्रजू, दुखव्या रखी न कोय।
जैसी साखा नीपजै, तिसी भूमिका होय ॥१७॥

मोती निपजै सीपमैं, केल कपूरा होय।
रामचरण यह स्वातिका, जहर सर्प मुख सोय ॥१८॥

घमड़-घमड़ घन बरसिया, ऋतु बिन खाली खेत।
यू रामचरण गुरु क्या करै, जो सिख हो अचेत ॥१९॥

रामचरण सतगुरु साहा, पूंजी बगसण हार।
करै कमाई रैण दिन, तो शिख होय साहूकार ॥२०॥

टटपूज्या धनवत भया, सतगुरु सरणै आय।
रामचरण अब रामधन, मुक्ता खरचै खाय ॥२१॥

सतगुरुजी की पादिका, जे कोइ परसै ध्याय।
त्रिविधि ताप मिट जात है, उर सीतल हो जाय ॥२२॥

ता पदमे सन्त गरकहै, सोही पादिका जाण।
रामचरण दूजा भरम, सबही झूठी बाण ॥२३॥

रामचरण जिव कनककरण, मिल्यो जगत छारा ।
हडीमार सतगुरु मिल्या, सोधकिया न्यारा ।

सगा न सतगुरु सारसा, दगा न सम ससार ।
रामचरण एह सत्य है, कोइ सुगरा करै विचार ।

गुरु धोबी उस्तात बड, कसणी खूम चढाय ।
ज्ञान नीर सावुण शव्द, मनपट उज्जल थाय

पिवख पताल न पाईये, पिवख न चन्द्र अकाश ।
रामचरण हमपाईयो, अमृत सतगुरु पास ।

रामचरण बीजक विना, जो घरमैं धन होय ।
यू पूरा गुरुदेव विना, ततनही पावै कोय ।

रामचरण पूरा मिल्या, दीन्हा तत्व बताय ।
जन्म मरण का भयमिटया, सासा रह्या न काय ।

रामचरण सतगुरु तणा, ये देखो उपगार ।
भर्म कर्म सब मिटगया, पाया शव्द अपार ।

कीकर बीज अकूर है, अज्या सग ऊगै ।
यूं रामचरण गुरुदेव मिल, हरिकै पद पूगै ।

रामचरण सतगुरु दिया, चत्र बेदका भेद ।
ताहि साध सुखिया भया, मिटी पढणकी खेद ।

चत्र पष्ट नव अष्टदश, उभै अखर मंडाण ।

न भक्ति वैराग दे, जीव करै भवपार।
रामचरण समर्थ गुरु, मेटै जमकी मार ॥३६॥

रु समर्थ दीर्घ वुधी, सायर जिसा गभीर।
शिख सीगीमछ होय पिवै, हरिसुख मीठी सीर ॥३७॥

---

# अध साखी सुमरण को अंग लिख्यते

रामचरण के शीस पर, एक निरजण राम।
रात दिवस रटवो करै, नही आन सू काम ॥ १ ॥

रामचरण रसना रटै, आंन धर्म नहि आस।
रामचरण अविगति रता, सुमरै सासू सास ॥ २ ॥

रामचरण इस जीव का, वारस एकोहि राम।
ताहि सुमर सुख लिजिए, दूजा तजि वैकाम ॥ ३ ॥

रामचरण भज रामकू, यो सबका सिरजनहार।
राम छांडि कर मतिवहै, आंनदेवकी लार ॥ ४ ॥

आनदेव आदर नही, रामचरण मुखराम।
रात दिवस रटवो करै रंरकार सूं काम ॥ ५ ॥

रात दिवस रटबो करै, आणै मन इकतार।
रामचरण मति वीसरै, ररकार आधार ॥ ७ ॥

रामभजन विन गति नही, समझ मन वारंवार।
रामभजन सूं भय टलै, जामें फेर न सार ॥ ७ ॥

स्वासा भागै जीवका, करै राम सूं हेत।
इतनाही मैं वहोत है, जे कोइ जाणै चेत ॥ ८ ॥

रामचरण चित राम सू, लाग रह्यो लिवलीन ।
इण विधि कोई लागसी, जिन कारज कर लीन ।। ६ ।

तन मन तोनहचल करै, सजम आसण साधि ।
शुद्ध ब्रह्म मै सुरति रह, छाड सकल बकवास ।।१०।

जीमुख इमृत पीजिए, जी मुख विषक्यू खाय ।
रामचरण बकवाद तज, राम नाम ल्यो लाय ।।११।

राम राम रटवो करै, रात दिवस इकधार ।
आगै ही सुख होयगा, रान तणे दरबार ।।१२।।

सुमरण साचा सार है, झूठा जगत विहार ।
झूठा तज साचा गहै, तब जीवा होय उधार ।।१३।।

भजन विना छूटे नही, रामचरण भवपासि ।
जे चाहै दीदारकू, तो रटिए सास उसास ।।१४।।

रसना रटिए राम को, जडिए नही कपाट ।
रामचरण मुखमूद कै, खाली रहे निराट ।।१५।।

जो आहार मुखसे करै, तो तिरपति होवै अन ।
खुध्यान भागै प्राणकी, रख्या सुरतिमे अंन ।।१६।।

रामचरण रसना रटै, तो लहै राम रस स्वाद ।
प्यासा मूढो भीचि कै, जनम गुमावै वाद ।।१७।।

उभै सहस रसना रटे, सौभी थाकै नाहि ।
जाकू भीच्या क्यू बणै, एक जीभ मुख मांहि ।।१८।।

सुमरण करिए राम का, तजिकै मान अमान ।

शील दया सनोष धन, रामभजन की प्यास ।
रामचरण वाकै सही, होसी ब्रह्म प्रकाश ॥२१॥

राम नाम ततसार है, याविन और कुछ नाहि ।
रामचरण जप रामकू, मिलै रामही मांहि ॥२२॥

जो कोइ सुमरै रामकू, जाका निरमल चित ।
वलिहारी मे राम की, काटै मैल अमेत ॥२३॥

जो कोइ सुमैरे रामकू, जाका मन वसि होय ।
सदकै जाऊ नामके, शत्रु पकड दिया मोय ॥२४॥

जो कोइ सुमरै रामकू, जाका दीर्घ मत ।
वारी जाऊ नाम पर, रक किया धनवत ॥२५॥

मलीन मत्रको पाठ पढि, जरख वुलावे वाम ।
रामचरण साचै शव्द, क्यो नहि आवै राम ॥२६॥

सिर वाछ्या मत्र पढया, कपडा पटक्या दूर ।
रामचरण जरख दोडके, आया वाम हजूर ॥२७॥

राममत्र मुखसू पढै, कनक कांमिणी त्याग ।
मनकी आटी तव मिटे, तव राम उठै घट जाग ॥२८॥

रामभजत भो भागिया, निरभै हूवा मन ।
रामचरण सो सुमरिए, अवकाचा तणा जतन ॥२९॥

काचा सव कल जायगा, साचा राम अखड ।
रामचरण सो सुमरिए, तज पडपच पाखड ॥३०॥

——

# अथ साखी बीनती को अंग लिख्यते

रामचरण की बीनती, सुणो एक अरदास ।
सरणाकी प्रतिपाल कर, काटो जम की पासि ॥ १ ॥

रामचरण अवगुण भरया, तुम वहो गुणा की खान ।
अवगुण सब ही वगसियो, राम तुमारो जान ॥ ६ ॥

जे तुम अवगुण चित धरो, तो मेरी जीवन नाहिं ।
रामचरण की सुरतिकूं, राखो चरणा मांहि ॥ ३ ॥

रामचरण की बीनती. सुणज्यौ दीनदयाल ।
अविगति गति माता रहै, कदै न झंपै काल ॥ ४ ॥

जे तुम त्यारो भक्तकूं, तो भरी जीवन नाहि ।
राम उधारो पतित, तो हम खुमी रहै मनमाहि ॥ ५ ॥

पतित निवाजण रामजी, मैं जाण्या उरमाहि ।
रामचरण पतिता पतित, पाछा फेरया नाहि ॥ ६ ॥

मै अपराधी जीव की, पीव करी प्रतिपाल ।
रामचरण संतोष दे, कागा किया निहाल ॥ ७ ॥

अपराधी साधी नही, हरि हरिजनसू रीति ।
अधम उधारण रामजी, तजी न अपनी प्रीति ॥ ८ ॥

मैं निर्बल वुधि वल नही, कामी कुटिल निकाम ।
सरणै ले निरबाहज्यो, रामचरणकू राम ॥ ९ ॥

आप करता रामजी, कुलखण कितीक वात ।
वडे वडे अघवत कू, तुम राखे दोजिग जात ॥ १० ॥

गुन्हेगार वहो जन्म को, खूनी वदी नान।
वदे ऊपर महरकर, काटो वद दिवान ॥ १२ ॥

हम सू बणी न वंदगी, वध्या ई ससार।
रामचरण कू रामजी, बूडत ल्योह उवार ॥ १३ ॥

अदल किया उवरु नही, मुजमे गुन्हा अपार।
रामचरण कह रामजी, तुम चुक निवरण हार ॥ १४ ॥

तुमतो रामदयाल हो, मैं अनाथ निरधार।
रामचरण कह रामजी, वेग लगावोलार ॥ १५ ॥

रामचरण कह रामजी, मेरा गुन्हा विसार।
पिता परिहरै पूतकू, तौ जीवै कूण आधार ॥ १६ ॥

जगत अधेरो वाग है, विविधी पुलफलरग।
रामचरण मन भंवर होय, जहा किया परसग ॥ १७ ॥

मोह विधक जाली जगत, मैं मृग पडयो तामाहि।
फद काटण कू रामजी, तुम विन दूजा नाहि ॥ १८ ॥

---

# अथ साखी विरह को अंग लिख्यते

ज्यू चात्रग घनकू जपै, शसि कू जपै चकोर।
रामचरण रामै जपै, जैसे पथी भोर ॥ १ ॥

सीप जपै ऋतु स्वातिकू, आरतवती पीव।
रामचरण रामै जपै, तुम विन तलफै जीव ॥ २ ॥

रातदिवस तलफत रहै, रामवैद तुम आव।
रामचरण वाधी विरह, कियो कलेजै घाव ॥ ३ ॥

भस्मकरै तन आपणी, सती विपैकी प्रीति ।
विरह अग्नि मै नित जलै, ए विहरनि की रीत ।। ४
बिरह अग्नी अपटो अधिक, दपटी रहती नाहि ।
रोंम रोम पर जल रही, रामचरण तन माही ।। ५
विरहवधी विस्तारकर, फैली सब घटमाहि ।
रामचरण क्यू ही किया, बुझती दीसै नाहि ।। ६
विरह अग्नि सव तन दह्यो, लोही रह्यो न मास ।
रामपियारे दरस बिन, नाभि न वैठै सास ।। ७
रामचरण बिरह रोगकी, पीडन जाणै कोय ।
कै विहरनि का प्रीतमा, कै जाघट बिरहा होय ।। ८
सुखिया सव ससार है, बिरही चित उदास ।
जीव वसै नित पीवमै, कद हरि पूर्वे आस ।। ९
दूजा दुख सबही सहू, पिव दुख सह्यो न जाय ।
रामचरण विरहनि कहै, वेग मिलो हरि आय ।।१०
दुखी तुमारे दरस विन, तुम क्यू रहे लुकाय ।
कै दरसो कै तनतजू , तुम विन रह्यो न जाय ।।११
तुम तो रामदयाल हो, कछू चूक हम माहि ।
रामचरण मन एक होय, तुमसू लागै नाहि ।।१२
राम निरजन निकट है, माया पडदै दूर ।
विरहनिका पडदा मिटै, तौ दरसे पीव हजूर ।।१३
सुन्दरि सूती नीदभरी, विरहा दई जगाय ।
निसिदिन पीव पुकारता, पीव सम्भाली आय ।।१५
वहोत दिनाका बीछडया, मिल्या सनेही राम ।

# अथ साखी प्रेमप्रकाश को अंग लिख्यते

प्रेम भाल भीतर खुची, वाहर दीसै नाहि ।
रामचरण कसकत रहै, निसिवासर उरमाहि ॥ १ ॥

विरह अग्नि शीतल भई, जव भया प्रेम प्रकास ।
रामचरण अव पाईया, मनवै प्रेम निवास ॥ २ ॥

प्रेम लहरि ऐसे वहै, जैसे सिन्धु तरग ।
रामचरण ता छोलसू, भीजत है सव अग ॥ ३ ॥

प्रेम खुल्या तव जाणिये, मन का पलटे रग ।
काम क्रोध व्यापै नही, कूडा करै न सग ॥ ४ ॥

प्रम खुल्या तव जाणिये, गुण तज निर्गुण होय ।
लोक वेद मुरजाद की, सक न मावै कोय ॥ ५ ॥

प्रेम खुल्या साई मिल्या, विरहनि भई निहाल ।
रामचरण दु ख वीसरया, निसिदिन रहत खुस्याल ॥ ६ ॥

प्रेम-प्रेम सवको कहै, प्रेम लखै ना कोय ।
प्रेम जहां लज्या नही, लज्या प्रेम न होय ॥ ७ ॥

आपना साई परसता, लाज करो मति कोय ।
सर्ग करै ससार की, तो साई मिलण न होय ॥ ८ ॥

करमछार सव वह गई, आई प्रेम लहर ।
रामचरण अव दरसिया, तन मन उज्जल नूर ॥ ९ ॥

रामभजन परताप तै, पाया प्रेम निवास ।
रामचरण निर्भय भया, मिटी काल की त्रास ॥१०॥

---

## अथ साखी पीव पिछाण को अंग ९

पीव पिछाणा हेसखी, कैसे लखै चहन ।
मिटेस पीडा सव निसाँ, प्रेम झकोल्याँ नैन ॥ १

पीव पीछाण्या हे सखी, काया नगरी माहि ।
रामचरण गाढा गह्या, वाहर भरमै नाहि ॥ २

पीव पीछाण्याँ हे सखी, आदि अत का सैण ।
भयाजु मन का भावता, कासू कहिये वैण ॥ ३

पी तो गलि पाणी भयो, अहू छोड गई वाण ।
रामचरण तव जाणिए, पिवसू भई पिछाण ॥ ४

---

## अथ साखी परचा को अंग लिख्यते

चोकी भजन प्रताप की, सत कह गये च्यार ।
रामचरण या सत्य है, दूजा भरम असार ॥ १ ।

रेसना कठ रस पीयके, हिरदै सुख विलास ।
नाभि कमलमें उलटिकै, सुरति गई आकास ॥ २ ।

सुरति गई ब्रह्माण्डकू, परसि त्रिकूटी धाम ।
रामचरण वादेसमै, सता कियां मुकाम ॥ ३ ।

अनेक जन्म जपतप करै, जोगी जोग समाधि ।
ज्ञान भक्ति वैराग विन, लहैन तत्व अगाध ॥ ४ ।

गिगन गरज उमंगी घटा, सुखमणि नीर चरत ।
रामचरण सायर भरया, जहाँ हसा केल झरत ।। ६ ।।

हस मिल्या प्रेम हस सू, अतर रही न रेख ।
ओतप्रोत भया एक रस, लखही हुवा अलेख ।। ७ ।।

अण समझया मुसकिल घणा सता मुसकिल नाहि ।
रामचरण रटि रामकूं, मिले रामही माही ।। ८ ।।

बहता मन रहता भया, भजता सिरजण हार ।
रामचरण कहिए कहा, यो अदभुद सुख अपार ।। ९ ।।

उठत वैठत जागता, सूता सुमरण होय ।
रामचरण ररकार धुनि, बाहर लिखै न कोय ।। १० ।।

गिगन मडल सेजा खुल्या, प्रगटया सुखमणि नीर ।
रामचरण ताकी लहरि, सीतल सकल शरीर ।। ११ ।।

तत दरस्या मत ना रहै, पाया सुख अपार ।
रामचरण मत पथका, कूँण उठावै भार ।। १२ ।।

रामचरण पिव परसिकै, सुरति भई गलतान ।
जैसे पाला नीरमे, गति के भया समान ।। १३ ।।

रामचरण पिव पईया, तव निरजन आवै ओर ।
सो सुख पिवकी सेझपर, सो नही दूसरी ठोर ।। १४ ।।

---

# अथ साखी साधसंगति को अंग लिख्यते

सगति कीजै साध की, सवही छोडि जजाल ।
रामचरण तब पाइए, निर्भय ठोड अकाल ।। १ ।।

संगति कीजै साध की, मन की दुवध्या खोय ।
रामचरण इक पलकमे, लोहा कचन होय ॥ २

लोहा सू कचन करै, सो पारस परमान ।
कसणी दे मन निर्मल करै. सोही सत सुजान ॥ ३ ।

पारस मिल कचन भया, अन्तर रहा सनेह ।
रामचरण यह सतजन, सतरूप करि लेह ॥ ४ ।

पारस सगति करै, लोहा वरस हजार ।
रामचरण अतर रहया, पलटै नांहि सार ॥ ५ ।

ऐसे सगति साधकि, जे मन देवै नाहि ।
रामचरण या जीव का, कर्म किसी विधिजाहि ॥ ६ ।

रामचरण चन्दण सगति. पलट्या नीव पलास ।
ऊंच वध्या पलटै नही. अतर पोला वांस ॥ ७ ।

साध शब्द मानै नही, अपणा मन की टेक ।
रामचरण कैसे लहै. सगति तणो विवेक ॥ ८ ।

सगति जाकी जाणिये. तन मन अरपे दोय ।
रामचरण साधू शब्द, राखै हिरदै सोय ॥ ९ ।

सत सगति सीतल करे, तीन ताप हर लेहि ।
रामचरण यह सत जन, इमृत बरसै नेह ॥१०।

इमृत बरसै सत जन, सुगरा पीवै अघाय ।
रामचरण गुरु ज्ञान विन, नुगरा प्यासा जाय ॥११।

सत सगति सबसूं भली, नित ही कीजै जाय ।

लोहा जलसू धोइये, तो दूणा लागै काठ ।
रामचरण पावक दियाँ, निर्मल होय निराट ॥१४॥
ऐसे सतगुरु तापदे, तो शिखका निकसै खोट ।
करै कुसांमदि जीव की, तो रहै ठोठ का ठोठ ॥१५॥
मसि पावक अरु सोहिगी, पुनि फुका तणी ।
रामचरण एता मिल्या, मैल कनक को जाय ॥१६॥
सतसग सरवर रामजल, कोइ साधू वाधै घाट ।
करम कचोई आत्मा, बहतीरोकै वाट ॥१७॥
घाटै होय जल पीवता, कोइ विधक करै अतराय ।
रामचरण सुगरा सुखि, घाटोदे मुकलाय ॥१८॥
रामचरण पारस परस्ता पच गुण पलटया जोय ।
वरण मोल मल कठोरता, लोहा कहैन कोय ॥१९॥
पारसरुपी साधसग, अहूं करम सब जाय ।
मन निर्मल भक्ता कहै, जहाँ तहाँ मुहुगै भाय ॥२०॥

---

# अथ साखी काल को अंग लिख्यते

रामचरण तूं चेतरे, कहा सावै असराल ।
पकड शब्द समसेरकू, खडो सिराणै काल ॥ १ ॥
कालतणा मे मिटगया, छूटा भर्म जजाल ।
रामचरण निरभै भया, पाया शब्द अकाल ॥ २ ॥
पावक ग्रासै तेलकू, दीवा वाती ढग ।
काल गिरासै आव नित, स्वार्थ कर्मा सग ॥ ३ ॥

ज्यूं सिरकावै बाति कूं, त्यूं त्यूं तेल बले ।
रामचरण वधता कर्म, हसि हसि काल गिले ॥ ४

तेल सुकत सूजे नही, देखै जगत उजास ।
रामचरण करता कर्म, भ्यासै नही विणास ॥ ५

आव घटत है तैल जिमि, वडो कहै सवकोय ।
रामचरण पूरो हुवा, मिदर अधेरा होय ॥ ६

तैल छता कोइ चेतज्यो, पीछै होय अधार ।
रामचरण पहला दिना करिए भक्ति विचार ॥ ७

चक्की चालै कालकी, निसिदिन आठू जाम ।
सुरनर सबही पीसिया, रामचरण बिन नाम ॥ ८

दोय पुड जमी आकाश है, पुनि दोय लोभरु मोह ।
पीसै जगका जीव कू, सासो सोग अदोह ॥ ९ ।

ओछा जलकी माछली, जैसे यो ससार ।
रामचरण भय काल है, निसिदिन लागोलार ॥ १० ।

माया ओछी नीर है, जीव माछली जाण ।
रामचरण भय काल है, भीडी राम पिछांण ॥ ११ ।

रामचरणई कालकी, तीन लोक मे घात ।
रामभजै सो ऊबरै, दूजा चुण चुण खात ॥ १२ ।

राम भजन परताप सू, काल न घालै घात ।
धरी देहसो विणासी, ज्यू तरुवर पाको पात ॥ १३ ॥

काचा तूटै काल बस, सो फिरभुगतै मार ।

ब्रह्मा डरपै सू, तो नरकी कितियक आव ।
रामचरण भज राकू, ज्यू जमका लगे न दाव ।।१६।।
रामचरण ब्रह्मा डरै, काल वजावै गाल ।
सदा कालका गाल मैं, सो क्यू फिरै खुस्याल ।।१७।।
रावण सा जोधा गिल्या, उसा नही अब कोय ।
देखो गाफिल राम सू, रहया वचीता होय ।।१८।।
जेता दीसै दष्टि मैं, सब कू खासी काल ।
राम भजै सो ऊवरै, भजन होय रिछपाल ।। १९ ।।
रामचरण काचै किलै, वैठि करै अभिमान ।
काल पकडले जावसी, ज्यू चीतो ले जाय श्यान ।। २० ।।
ऊचा किला चुणाय करि, वैठा होय निसक ।
काल पछाड़े पलकमैं, राजा गिणै न रक ।। २१ ।।
अधकूपगृहमै पडयो, वध्यो माया जाल ।
ज्यू दादुर विषहर गिलै, ऐसे ग्रासै काल ।। २२ ।।
रामचरण गृहकूपमै, प्राणी अति वेहाल ।
स्वप्नै सुख दर्से नही, उरसासा को साल ।। २३ ।।
सासो खावै जीवकू, काया सोखै नारि ।
रामचरण आगे कहा, अवही नरक मझारि ।। २४ ।।
सुख पावै साई भज्या, छूटे गृहकी जाल ।
रामचरण साई तज्यां, सुख नही तीनू काल ।। २५ ।।

---

# अथ साखी चिंतामणी को अंग

छत्रपति घर सोहतो, कुजर धूँरणै शीश ।
मनुप जन्म कदि पायहू, कद भजिहू जगदीश ।।

मनुष्य जन्मकूँ पायकै, भज्यो न सिरजनहार ।
रामचरण वा गयद को, नफर किया कर्तार ।। २

रामसुमर हुसियार होय, सोवै कहाँ गिवार ।
रामचरण मोसर यह, मिलै न दूजी वार ।। ३

यह सेसर ऐसी सवी, मिलै न दूजी वार ।
चोक पलटि फिर पाइ है, मनुप जन्म अवतार ।।

रत्न अमोलक अजवछा, परण मर्कट न पाय ।
दाता नीचै चावि करि, पीछै छिटकाय ।। ५

रत्न अमोलक करचढयो, पारख विन क्या होय ।
रामचरण अज्ञान नर, दियो विषय सग खोय ।। ६

राम कहोर वावरै, जन्म अमोलिक जाय ।
मति भूलो धनधाम मे, ज्यासो सव छिटकाय ।। ७

रामभजन रुचि ऊदजै, जदि पारस परमारण ।
रामचरण यह विषयसग, रत्न न दीजै जारण ।। ८

लख चोरासी भुगता, राखी नरकी आस ।
रामचरण अब नर भयो, लागी गृहकी त्रास ।। ९

राम कहै ते मानवी, राम बिना सब रोझ ।
रामचरण जो कहा भयो. उघडयो नरको खोज ।२०

पाई जिनकी सुफल है, जो राभमजन करि लेह ।।११।।

रामचरण इक राम है, सबकी जीवन मूरि ।
यांकूं तजि आनै भजै, जाका मुख पर धूरि ।।१२।

रामचरण इक राम बिन, दूजी कहै न बात ।
याकूं कोइ मानें नही, जाका शिरपर लात ।।१३।

भजन छाडि भर्मत फिरै रामचरण संसार ।
सगति करि खाली रह्या, जाकू वार न पार ।।१४।

रामचरण ससार सू, राम कह्यो नहि जाय ।
झूठा झामर झोलमैं, फिर फिर गोता खाय ।।१५।

भर्म कर्म सू लग राह्या, राम न कहै लगार ।
रामचरण कहै क्यू मिटै, चोरासी की मार ।।१६

साई सू सन्मुख रहै, कर्मकूं दे पूठ ।
रामचरण नरदेहका, वैलेसी लाहा लूट ।।१७

मुख सू रामरटया करै, कर सू कूछ अन देह ।
रामचरण ये दोयकरि, अत न रहसी देह ।।१८

चोरासी लख भुगततां, दतवसूं दुख नाहि ।
रामभजन परताप सू, निर्भय पदकै माहि ।।१६

रामचरण कूड़ो जगत, मीठी देदे खाय ।
भीड पड़या जमदूतकी, सब दूरा होय जाय ।।२०

धन जोवन ससारसूं, बाधे अधिक सनेह ।
रामचरण हरि भज विन, श्वान पूछ नरदेह ।।२१।

रातो विषय विकार सूं, हरिरस मोंतो नाहि ।
रामचरण वा जीवको, फिट जितव कलि माहि ।।२२

---

# अथ साखी उपदेश को अंग

साखि एक सतगुरु कहैक, कोइ सुगरा करै विचार ।
माया सू रुचि ब्रह्म बिसारे, ताकू बारनपार ॥
माया चचल ब्रह्मथिर, जांणै सब ससार ।
स्थिरछाडे चचलगहै, जासू होय खुवार ॥
नवजोगेश्रवर आईया, देण जनककू ज्ञान ।
क्षण भगुर तन जाणकै, दोडि कीयो सन्मान ॥
झूठी माया जाणकै, पूछयो जनक नरेश ।
ऋषभ पुत्र परसनभया, किया ब्रह्म उपदेश ॥
जीवण झूठो जाणके, गुरु प्रसाद लियो शीश ।
दृढ वैराग्य उपाय कै, भजै चरण जगदीश ॥
सब सुख दुख समजाणकै. मायासूं रुचि नाहि ।
जनक जन्म साफल कियो, मिल्या ब्रह्मपद माहि ॥
जनकपुरी पिंगला बसै, आशावधी अपूर ।
रामचरण सतगुरु बिना, लहयो ज्ञान भरपुर ॥
आशा तजि शीतल भई, प्रगटयो पूरण ज्ञान ।
गुरु मिलिया तृष्णा बधै, सो जासी नरक निवान ॥
नाम नाव केवट गुरु, किया बहुत उपगार ।
ई मोसर तिरिया नही, जाको वारन पार ॥
नरपखडग नारद मिल्या कीया मुहूरत पार ।

मेलिया जगलजाटकू, साधू गेरीखनाथ ।
रामचरण चोथै जन्म, गहकर काढयो हाथ ॥१२॥
गाध शब्द तब मानियो, मोक्ष भयो तत्काल ।
रामचरण क्यू उधरै, जो साध बचन दे टाल ॥१३॥
रामभिलणकै कारणै, तज्यो भरतरी राज ।
रामचरण भी त्यागसी, जाका सरसी काज ॥१४॥
हयदल गयदल पैजला, छत्र छतीसू राग ।
सुख त्रीया तजि हरिभज्या, धन उसका बडभाग ॥१५॥
देखो कलिका मानॅवी, सुगते दु ख कलेश ।
रामचरण तोहि नांतजै, कोइ कोटी करो उपदेश ॥१६॥
मानवतन दुर्लभ मिल्यो, अरुभाग मिल्यो सत्सग ।
समझपाय सतगुरु कह, अब जन्म न कीजै भग ॥१७॥
रामराम सब कहतहै इन्द्रया दहन कोय ।
रामकहै इन्द्रया दहै, तो आवा गवरण न होय ॥१८॥
कहा मदिर मढिया कहा, कहा वनगिरा गुफा ।
रामचरण भज रामकूं, येनरतनतणा नफा ॥१९॥

---

# अथ चन्द्रायण बीनती को अंग लिख्यते

शरणां की प्रतिपाल राम अब कीजिये ।
भव बूडत गह बाह काढि मोहि लीजिये ॥
तुमहो दीनदयाल दया कर न्हालियो ।
परिहा रामचरण सू राम विघन सब टालियो॥ १ ॥
माया तणा विघन्न वहुत है रामजी ।

भजन करै अतराय भुलावै नामजी
तुम समर्थ अव जाण करु कहा वीनती ।
परिहा रामचरणकी राम न आवै हीनती ।। २
राम एक अरदास हमारी मानियो ।
कामी कपटी कूड आपणो जाणियो
जे छोडो तुम हाथ ओर नही ओटजी ।
परिहा रामचरण रखि सरण बक्ष सब खोटजी ।।३
कहा करु अरदास सकल विधि जाणि हो ।
अतर गतकी पीड पीव पहिचाणि हो ।
भवमोचन भगवान ढील नहिं कीजिये ।
परिहा रामचरण की वाह नाथ गह लीजिये ।।४।

---

# अथ चन्द्रायणा साध को अंग लिख्यते

भजै निरजन राम तजै सव कामना ।
श्रद्धा शील सतोष शीश गुरु थांमना ।
साच वाच वैराग्य नही कहु रागरे ।
परिहा रामचरण सो भक्त जगत सुख त्यागरे ।।१।
जगत जाल कू तोडि तजै धन धामरे ।
भर्म कर्म सब डार भजै इक रामरे ।।
विषय वासना जाल पह्यास्वादरे ।

माया काम कूजाल इनूंकी जणिरे ॥
अष्टजाम मुखराम भजन अधिकाईये ।
परिहां रामचरण सो साध शिरोमणि गाईये ॥३॥
परकारज कै हेत करै उपकार रे ।
रामनाम धन देत असे दातार रे ॥
उलज्या कूं सुलजाय आप नि स्वारथी ।
परिहा रामचरण सो साध बडे परमारथी ॥४॥

---

## अथ चन्द्रायणा साधु संगति को अंग लिख्यते

सत्संग सुगम उपाय ध्यान के कीजिये ।
उभै दु.ख मिटजाय इसो पद लीजिये ॥
ज्ञान गरीबी पाय भजै नित राम रे ।
परिहाँ रामचरण उर क्रोध न व्यापै काम रे ॥१॥
सर्व दु ख मिट जाय कियां सत्सग रे ।
तृष्णा तर्क विकार न व्यापै अग रे ॥
तिरिया को कर त्याग गहै नहि दाम कूं
परिहां रामचरण ये धार भजै नित राम कू ॥२॥
शब्द करद दे सत समझले आप रे ।
कर्म काटि कर दूर न व्यापै माप रे ॥
जिनका कदमा लगि लेत है सीत रे ।
परिहा रामचरण कह साच रहै नहि भीत रे ॥३॥
भीत गये सब दूर भर्म भये नाश रे ।

राम शब्द की सीर प्रेम प्रकास रे॥

भूलां की गह वांह वताया पथ रे।

परिहा रामचरण कलिमाँह इसाहै सन्त रे॥

---

## अथ चन्द्रायणा प्रथम गुरुदेव को अंग

सतगुरु शरणै आयके काज कर लीजिये।

काम क्रोध मद लोभ मोह तज दीजिये

गुरु उचरै मुख वैन हृदय धर राखिये।

परिहां रामचरण मुख राम रैण दिन भाखिये॥

सतगुरु सिरजणहार जिमू शिर नाइये।

चरणामृत चित लाय सीत नित पाइये

अज्ञा आनन्द होय कर्म सब ढाइये।

परिहां रामचरण करजोड़ काल मिट जाइये॥

दुखो जीव वेहाल जगत की जालरे।

सन्त चरण की शरण करी प्रतिपाल रे

शीतल किया सुभाव धरया कर शीश रे।

परिहा रामचरण निज नाम दिया वक्षीसरे॥

लिहाज रूप गुरुदेव बण्या भव सिन्धु मै।

रामचरण शिख पार करै इक पलक मै

नाव छाडि ससार वह गया धाररे।

परिहा जिन पाया गुरु नाव ...

# अथ चन्द्रायण सुमरण को अंग लिख्यते

रामनाम को ध्वान उर धाररे ।
काम क्रोध मद लोभ चयार रिपु माररे ॥
पकड़ शील सन्तोष दोष सब त्यागिये ।
परिहा रामचरण पच सावि भजनसू लागिये ॥१॥

भजन किया भय जाय भर्म ना रहे ।
लहे आगममका भेद शव्द साची कहै ॥
नही आवै परतीति सुरतिकू जोयरे ।
परिहा रामचरण सतराम हृदा विच पोयरे ॥२॥

रसना रटत लगाय ध्यान हिरदै घरो ।
जीवा सब निर्वैर दुख द्धया परिहरो ॥
गहो साच विश्वाव कुदुबुधिकू मारिये ।
परिहा रामचरण नरदेह इसी विधि तारिये ॥३॥

मानुष देहि पाय भजत है रामकू ।
अचल पद मे आय लहै सुख धाम कू ॥
ऐसा भजन प्रताप दु:ख कहु नाहि ।
परिहा रामचरण कह साच सदा सुख माहिरे ॥४॥

---

# अथ नाम समर्थाई को अंग

आभा केरी छाँह सीतका कोटरे ।
ओस नीर यू जान आनकी ओटरे ॥

ज्ञान भाण मारुत उदै उडि जायरे ।
परिहा रामचरण भज राम सबल शरणायरे

निरधारां आधार सकस शिरताज है ।
अनाथूं के नाथ गरीबनिवाज है ॥

अन्त कालकी वार छुडावै कालसू ।
परिहा रामचरण भजराम बहुत खुस्याल सूं

अनाथूं के नाथ निज्जन रामजी ।
निश बासर रटि ताहि और तज कामजी ॥

तबही होयज पार धार तज गन्दगी ।
परिहाँ रामचरण कह साच सार है बंदगी ।

जुग जुग ही मे भई भक्त मैं भीड रे ।
साहि करि तत्काल प्रगटवो नीड रे ।

साहिब सदा सुचेत दास कै साच रे ।
परिहा रामचरण होय बेर जाण उर काच रे ॥

राम करै नही सहि भक्त को भीर रे ।
तो भक्ति भग होय जाय बधे नही धीर रे ॥

भक्त बिच्छल ता विडद भक्त पछ सोय रे ।
परिहा रामचरण यह साखि भरै सबको रे ॥५

रामनाम परताप सुरति कर जोय रे ।
या बिन तारक नाहि दूसरो कोय रे ॥

जड्ड तिरे जल मांही लिख्यो ररंकार रे ।

# अथ सवैया प्रथम गुरुदेव को अंग लिख्यते

राम को नाम मुकुट मेरे शिर ता उपमा वरणी नही जावै ।
याहीमें जोगजिगादि तुलाव्रत सजम ने तपै सव आवै ।।
याहीमे तीरथ भेपस्वरुप सनातन धर्म योही सत गावै ।
होय कृपाल दियो गुरुदेवजी रामचरण सोही मनभावै ।।१।।

किरपाल दयाल कियेजु निहाल तोडी जगजालरु पाय लगाये ।
कहे सुख स्वाल करी प्रतिपाल दई सत चालरु पथ वताये ।।
हटे जमकाल मिटे दुखसाल नहीजु वेहाल तुमै पदध्याये ।
शिष्य खुस्यालसो गति मरालही रामचरण इसे गुरु पाये ।।२।।

## अथ सवैया सुमरण को अंग

रामहिराम सुनैगुनश्रवण रामहिराम कि कीरति गावै ।
रामहिराम करै नित सुमरण रामहिराम सू ध्यान लगावै ।।
रामकै हेत मनोतन अर्पण रामविनां नह्रिआंन सुहावै ।
रामचरण ये निर्मल धर्म है होय पुनीत परमपद पावै ।।१।।

रामकू गाय ले रामकूं ध्याय लै राम निरजन नाय लगारे ।
राम मनाय लै राम रिजायलै रामविना तेरो कोण सगोरे ।।
रामकू बूजिलै रामकूं पूजिलै रामविना सवओर दगोरे ।
रामचरण कै राम सदा शिर रामहिराम सम्हालि जगोरे ।।२।।

रामहीराम पुकारत रहो मन राम विना कोइ आशन पूरे ।
रामहिराम चितारत रहो चितचेतन रामसवै अमचूरे ।।
रामहीराम सम्हालत रहो सब राम सम्हाल हरै दुख दूरे ।
रामचरण कै रामसदा शिर रामहिराम पिछाण रहूरे ।।३।।

रामहिराम रटो निशिवासर काहेकू दूसरो थाट थटोरे।
ब्रह्म का अशकू ब्रह्म उपासना माया उपासना सोहि बटोरे।।
भर्मका जालमै कालवस गुरुज्ञान करदसू कटोरे।
रामचरण के रामसदा शिर ताहि सम्हाल कै स्वाद हटोरे।

## अथ नाम महिमा को अंग

जानि अजानि परै पण पावक सोसत मान जरैही जरैगे।
जानि अजानि छुरी छिवे पारस मैलविकार हरैही हरैगे।।
जानि अजानि पिवै कोइ अमृत जासके शोक टरैही टरेणी।
जानि अजानि रटै नित रामकू रामचरण तिरैही तिरै।।

## अथ सवैया विचार को अंग लिख्यते

आनदकद चिदानद व्यापक पूरणब्रह्म रहयो भरपूरा।
ज्यू धरनीर भरयो घृत क्षीरही दारक सू नहिपातक दूरा।।
हेमव पहुप तिलाँ मधि तेल गुरुसग हाथ लहे तत नूरा।
रामचरण भरे सबही पिड ज्यू ब्रह्मड प्रकाशक सूरा।।१

जल सू भर कुभ अनेक धरया रवि को प्रतिबिब परयो सब माँही।
पवन लग्या सेति नीर हलै कहूँ सूरज तेज हलै चलै नाँही।।
ऐसेही ब्रह्म आनद लहयो जीनदेह इन्द्री गुण व्यापै न काही।
देह अध्यासी कू सुख नही थिरनीर भया बिन नाँ दरसाही।।२।

## अथ सवैया साध को अंग लिख्यते

रामहि राम करै उपदेशहि रामहि जोगरु जिग्य पसारो।
रामचरण इसे कोइ साधु है सोही शिरोमणि प्राण हमारो ॥१॥

शील सतोष दयाउर आनद कर्म निकद-निकद पसारो।
साच गहै मनबाचगहै निजनाम लहै तत ज्ञान उजारो॥

आश दहै निरआस रहै वनवास गहै सुख सिन्धु सचारो।
रामचरण ये साधु के लच्छण लच्छ विना सोही भेप बिगारो॥२॥

घरको वनको अपमान नही कछमान नही तनको धनको।
हर्ष सोग दह्यो ब्रह्म ज्ञान गह्यो सगसाहि लियो हरिके जनको॥

गतकाम भयो रतराम रह्यो सबआन उपाव गयो मनको।
कह रामचरण इसे कोइ साधु कू दोष नही घरको वनको॥३॥

रामहिराम रटै निशवासर माया को शॉसो न आवत नेरो।
है जग मे जग नाहि लिपै जग जाल को दूर कियो सब घैरो॥

ते तनमे तन के गुण विरक्त सोधिलियो सुखको निजसेरो।
रामचरण वै साधु शिरोमणि है जिनको ब्रह्ममाहि वसेरो॥४॥

साध दशु दिश कू विचरै असे नीर विषै जैसे मीन रहावे।
नीरमैं खावत नीरमैं पीवत नीरहीमे मलमुत्र करावै॥

नीर अधार रहै नीशवासर नीरसू न्यारी मुवा मरिजावै।
रामचरण दुशदिश ब्रह्महि ब्रह्मज्ञानी ब्रह्ममय विचरावै॥५॥

## अथ सवैया साध संगति को अंग लिख्यते

कर रे मन सगति साधुन की जहा वुद्दि निरमल रामकूं गावै।
लोभरु मोह किरोध मैटै सब शील सतोष दया उपजावै॥

धीरजको रस पाय छकायदे काम कुवुद्धिकी लहरिन आवै।
रामचरण नरतन पायकै भाग वड़ो सत्सगति पावै॥१॥

जिनको मनुषातनु साफल है मिल साधुकी सगति राम कहै
निश वासर धार अमी अचवै विशिपया रस धार कभू न वहै।
उर आनदकद सदा परशै दुख जाल जगत की नाहि रहै
कह रामचरण इसोपद निश्चल राम दया विन कुण लहै ।।
और मिलाप मिलै नितही नित दुर्लभ मेन्न हरी जनको
त्रयताप मिटै जिनकै दरस्या मल धोयकै दूर करै मन को ।
जीव निर्मल हीयकै राम रटै कोइ कर्मा को नाहि रहै कनको
कह रामचरण दख्यो हम जोयके सत स्थान महा धनको ।।

## अथ सवैया चिन्तावणी को अंग लिख्यते

गाय रे गाय तूं रामकूं गायलै होय सुचेत सम्हाल धनी
जायरे जाय चल्या दिन जात है साह गरीबी उडाय मनीकू
लायरे लाय वुझाय किरोध की कामकूं जोत गुमाय गनीकू
रामचरण के राम सदाशिर ताहि पिछाण न छाडि छनीकू ।।
हे रसना रप छ डितत्र रस राम सुधा पिय क्यून ज
ईहि जीवका आज जजाल मिटै जमराय को दण्ड कभून ल
वनमाझ अवाज सुनै सिंह की अघ अवुकगै ज्यू जानि भ
कह रामचरण सुचेत रहोनित तोहिकू तो ठिग नाहि ठिगे ।।
भजरै मन रामनिरजन कूं सोच परयो घन ही वन
तुछ जीवन हेत उपाय करे नित आयु घटै छिनही छिनकै
तट तूटत ताल नही दरसै [illegible]

# अथ कवित प्रथम गुरुदेव को अंग लिख्यतै

अखै धर्म इकराम सोही सब संता गायो ।
कलिमे मे धरि अवतार संतजी भेद बतायो ।।
शिष साखा उरधार मिले सतगुरु पद मांही ।
भर्मी बिन बिश्वास भेप बल पहुँचे नांही ।।
रामचरण गुरुइप्ट की कोइ सुगरा राखे टेक ।
कहा भयो बिभचारणी तन पहरया साज अनेक ।।१।।
राम नाम सम तत्व और कहूं दीसै नांही ।
श्रुति समृति कू जोय खोजि या संतन मांही ।।
सब ग्रन्थन का सार सोधि सतगुरु मोहि दीन्हा ।
दलिद्र दूर निवार रंक धनवंत कर लीन्हा ।।
बडदानी किरपाल की मुख महिमा कहा भाखिये ।
रामचरण मन अर्पि कै सतगुरु चरणा राखिये ।।२।।
बडेसंत बरियाम साच समता के सागर ।
दीनबिछलर दुखहरण सरण सुखरासी आगर ।।
ज्ञान भक्ति वैराग ध्यान धन भरे भण्डारा ।
महापुरुष मन जीति नीति सतपरम उदारा ।।
इसे चहन चोकस लिया स्वामी किरपा रामजू ।
रामचरण ता चरण को खानाजाद गुलामजू ।।३।।
किया काग सू हंस वस कर्म दूर निवारया ।
रह्या आप अलिपत जीव सरणै निसतारया ।।
पाय परम संतोष पोख्से पेम जमाया ।
राम अखण्डित जाप पाप परसै नहि काया ।।

कालडा–कृष्णागल ( र
)

मनवेध्या निजमन्न सू गया मनोरथ काम ।
जिन रामचरण सूं येकरी सो छपै शिरनाम ॥"

फल्पवृच्छ गुरुदेव कल्पना दूर निवारे ।
भी चिंतामणि भाय चितधनी रंक उदारे ॥

भक्ति मुक्ति दातार शक कुछ नांही ताकै ।
अष्ट सिद्धि नवनिद्धि रहै चरणां नित जाकै ॥

कामधेनु हर कामना करे कुवेर निहाल ।
यूं रामचरण गुरुदेव से सुरतरु गो मणि चाल ॥"

## अथ कवित्त सुमरण को अंग लिख्यते

षटऋतु बारा मास रैण दिन सांझ सिकारो ।
मध्यकाल मधिरात सदा एकै रस प्यारो ॥

नित्यानित्य अखण्ड तासको अंत जु नाही ।
वर्णाश्रम नर नारि अंत सबहि कै माही ॥

दर्शन साध स्वरुपको रामनाम आधार ।
रामचरण अक्षर उभै भजै सो उतरै पार ॥१

रामरहया भरपूर दूर काहेकू फिरिये ।
अपणा घट कूं खोज रैण दिन सुमरण करिये ॥

ज्यूं गारा की कलणि नीर की सीर न दर्शै ।
कर्मां कै आवरण राम नेडो नहि पर्शै ॥

यूं चकमक मैं आगि पथर लग परगट होई

## अथ नाम समर्थाई को अंग लिख्यते

रभजन की ओट चोट चमकि नहि लागै ।
सिंघ गरज सुण त्रास चरत वनका जिवभागै ॥
ाँ भुजग का वास तहा मूशा न रहावै ।
जिस घर जाग्रत होय निकट तस्कर नहि आवै ॥
सरणारो बाज को डरै परेवा प्राण ।
रामचरण जम यू भगै लेत नाम निर्वाण ॥३॥
ै अग्नि सू सीत मिटै तिम दीपक कीया ।
मिटै भूख अन खाय मिटै तिरपा जल पीया ॥
जहर मणि लग्या मिटै मृति अमृत चाख्या ।
मिटै अनल की झाल तास पर जल के न्हाख्या ॥
चरण ऊमस मिटै पखा कर ले पवन सू ।
राम नाम सूं अघ मिटै जे कोइ सुमरे रसन सू ॥४॥

### छन्द भुजंगी

नमो गुरुदेव कृपा पूर कीन्ही,
नमो आपस्वामी अभै गत्ति दीन्ही ।
नमो वीतरागा सुधानाम पागी,
नमो योगध्यानी, समाधिसु लागी ॥
नमो ब्रह्मरुप, अरुप अलेखम्,
नमो आप पार, उतारे अनेकम् ॥
कहे रामचरण, नमोजी दयालम्,
कृपा पूर मोपै, करीहै कृपालम् ॥१॥

कृपा पूर मौपे कृपाल करीहै,
महा भीन होती दुराशा हरीहै ।
कियो दिल्लपाक विपाक निवारे,
दियो राम नाम सबै काम सारे ।
दिये ज्ञान भक्तिसनिर्वेद साजम्,
त्तिहू लोक भोग वताये निकाजम् ।
दियो तोख पोख विलोक दयालम्,
कहै रामचरण नमामी कृपालम् ॥२॥
बडे दानपती सबै रीति पोखे,
सदा सम्मदृष्टि कहीन बिदोखै ।
कहा रक राव गिणं एक भाव,
देवे चीज रीझ उदारस्वभाव ॥
मानो मेघ धारा नही भूमि देखै,
करै ज्ञान छोल सदा यू विसेखे ।
दयावान दाता बडही दयालम्,
कहे रामचरण नमामी कृपालम् ॥३॥
महा कान्ति भारी तपै ज्यू दिनेशम्,
सदा ज्ञानरुपी विदेही नरेशम् ।
मानू शान्त धीर वसिष्ट वखानम्,
नही मोह माया न कायाभिमानम् ॥
लिया जोग वैराग भक्ति पराहै,
सदा मिष्ट वाचा उचारे गिराहै ॥

ज्ञा तेज पुज शरीर वखानम्,
सवा नूर सानन्द शोभायमानम् ।
गतीत स्वामी अकामी अलेखम्,
जनामध्य आपै गुरु जो विसेखम् ।।
ां आप धीर हरे क्रोध ज्वालम्,
द्रवै सोम दृष्टि करते निहालम् ।
ां मधुर हांसी विलासीक ब्रह्मम्,
दिपै सत गादी अनादि सुवर्मम् ।।
ा पक्ष सांची अजाची अकालम्,
कहै रामचरण नमामि कृपालम् ।।५।।
तोर चरणा परयो नित्य स्वामी,
तुम्है सानुकूल भये अंत्रजामी ।
मोहि धीरं अभीरं किये है,
दोऊ हस्त शीश दयासैं दिये है ।।
आप शरणा सकरुणा सुणी है,
उदै भाग्य मेरो भली ये वणी है ।
ा मुक्त रुपा हनी जक्त जालम्,
कहै रामचरणं नमामी कृपालम् ।।६।।
ा रामरुपं गुरुजी अगाधै,
तुम्है सेव सानन्दसू सर्व साधै ।
ा ईश विष्णवादि अवतार धारै,
सदा एक महिमा गुरु की उचारै ।।
वेद वेदान्त सिद्धान्त जेता,
ब्रह्मलोक मध्ये धरे तत्र तेता ।

निजानन्द ध्यान गुरु को वखाने,
कहै रामचरण यह मन्त्र माने ।।७।।
लिपे नाँहि काहू फरगी ज्यूं मरगीहै,
इसी रीति तोला अनता गिरगी है ।
सबै घट्ट पूर मानो व्योम रूपा,
निराकार स्वामी अनामी अनूपा ।।
ऐसे गुरु आप अमाप अतोलम्,
नही वार पार अगाध अडोलम् ।
गुरु राम धाम महा सुक्खदानी,
कहै रामचरण स्तुति वखानी ।।८।।
रामभजन कर सजन सीख सुगरे मन मेरा,
सद सुख समता पाय जाय दुख दालिद तेरा ।
विषय वासनाँ नाश आश की त्रास विलावै,
गर्भावास को वास साशना फेरन आवै ।।
दीन दरग्ह दाद होय आदर सन्ता माहि,
रामचरग रटि रेग दिन पलहू तजिये नाहि ।।९।।

## अथ कवित बेविश्वास को अंग लिख्यते

अनचर कू अँन देत देत तृग तृग के चारी ।
मुक्ता देत मराल जीव दे जीव अहारी ।।
तनकरि पय पैदास वालसुत तास पिलावै ।

कहो काशी कश्मीर कहा लाहर मुलताना।
कहां भुज्ज गुजरात कहा दखिण दिखलाना ॥
आश पासि बल वांधि मोह माया भर्मावै।
जर्ण-जर्ण आगैजीव विविध विधि नाच नचावै ॥
दुखी दीन भटकत फिरै भाग्य भरोसो खोय।
रामचरण प्रालब्ध विन कछू न प्रापति होय ॥२॥

## तृष्णा को अंग

कूंभ कहाला भरै मूणि गाडी जल भरिहै।
कोठा भरै भडार खास खाई भरि सरि है ॥
भरै पेट पुनि कोट भरै घर सुत वित्त दर्स्या।
भरै कूप अरु बाय भरै दरिया घन वर्स्या ॥
रची ठाम भरि ऊबकै समै काल प्रापति पूरै।
रामचरण सतोष विन तृष्ण सख दशनां भरै ॥३॥

## अथ कवित साध संगति को अंग लिख्यते

सब साधन कै शिरै समझ सत्सगति कीजे।
तन मन धन त्रय थोक अर्प सत्तगुरु को दीजे ॥
अनन्य भक्ति निजनाम साध संगति मैं पावे।
मिलैन दूजी ठाम भर्म त्रयलोकी आवै ॥
रामचरण सत्सग सम ओरन दीसै कोय।
जहां निरुपण ब्रह्म को सदा सर्वदा होय ॥१॥
सत्सगति कै किये भर्म भय रहै न कोई।

मल विकार मिटजाय आत्मा निर्मल होई ॥
ज्यू पारश कू परशि लोह कचन होय जावै।
नाम रूप गुण मोल फेरकै आध बधावे ॥
पारश तो कचन करै सत सत करि लेहू।
रामचरण दानी बडे अभै अमर पद देहि
सतांको सत्सग सत किरपासूं पावै।
जिनके परसत चरण भर्म भय दूरि बिलावै॥
काम क्रोध मत क्रोध सोग सांशी सब दुमरै।
अभै पद विश्राम राम निशि वासर सुमरै॥
कृष्णदेव भागवत में महिमा कही बणाय।
रामचरण सोही भई हमकूं प्रापति आय
सत्सग को परवाह जिसो अमृत को सागर।
ताकै जलको छाक दूर होय दुख के आगर॥
जैसे समद अथाह थाह वाको नहि आवै।
यू सत ज्ञान भरपूरि बहुत जीवन कूं पावै॥
प्यासा पीवो ध्यायकै अणप्यासा रहो दूर।
रामचरण सत्सग कू नोदै जा मुख धूरि
सत बडे दरिया दयासं दीन निवाजै।
जिनकी अणभै लहरि गौड करि गहरी गाजै।
मुक्ताहल निज नाम दास हसा चुगि जीवै।

# अथ कवित उपदेश को अंग लिख्यते

गिरजा बुझे ईश को ईश तुमरो पिछणावो ।
जन्म मरण मिटजाय इसो कोइ तत्व बतावो ।।
शकर भये सुनाथ नाथ अपणो धन दीन्हो ।
गवरा प्रेम बधारि धारि हिरदा मैं लीन्हो ।
निजमंत्र निश्चय करयो आदि अंत शत कोटी को ।
रामचरण जाकूं भज्या जन्म मरण को छूटी कोर ।।१।।

राम राम मुख गाय राम गुण श्रवणां सुणिये ।
नर नारी यह जोग भोग गुण नाही गुणिये ।।
ज्ञान मुस्कला लाय दाग दिलका मल हरिये ।
सब सू रहै अनेह नेह काहू नहि करिये ।।
होय निरंतर हरि भजै तजि माया विस्तार ।
तो रामचरण कलि काल मै तिरता लगै न वार ।।२।।

कलू काल नर नारि रामहो राम भणीजै ।
ये साधनसति साधि आन सब झूंठ गिणीजै ।।
और जुगा शिरताज कलु शुकदेव बतावै ।
तुछ जीवण वड लाभ राम जे रसना गावै ।।
मनसा वाचा हरि भजै तजै जगत कुल नेह ।
रामचरण वाकी सुफल कलियुग में नरदेह।।३।।

मनुषा देहि पाय गाय मन राम पियारा ।
मै तैं माया मुनि मोह तजि होय नियारा ।
वडे दिशावर आय खेप रत्नां कि भरिये ।
ओर ठोर नाही मेल मुलक चतुराशी फिरिये ।।

रामचरण तो सू कहूं ये सुण धरिये कांन ।
खल मति बिराजै वावरे होय लाभ की हांन ॥४॥

## अथ कुंडल्या सुमरण को अंग लिख्यते

राम गरीव निवाज का विडद गरीव नवाज ।
दीन होय सुमरण करै जाका सरिहै काज ॥
जाका सरिहै काज काल का झगडा छूटै ।
राम नाम लै लाग भर्म का भांडा फूटै ॥
रामचरण यह राम नाम जग मै बड़ी जिहाज ।
राम गरीब निवाज का विडद गरीव निवाज ॥१॥
नाम नाम दरियाव है दूजा छीलर जाण ।
जहा काल करीर की गम नही कोई खेचा ताण ॥
नहि कोइ खैंचा ताण कीर का जोर न लागै ।
समन्द अथग जल पूर ताहि कैसै थागै ॥
रामचरण सुख पाईया मिटी भर्म की बॉण ।
राम नाम दरियाव है दूजा चीलर जाण ॥२॥
राम विनां भावै नहीं रामचरण की आन ।
जैसे मच्छी नीर सग बिछरत छांडै प्रांन ॥
बिछरत छांडै प्रांन पवन जे दूजो पर्शै ।
रसे मगन मस्तान राम जल चहु दिशि दर्शै ॥

:: रेखता ::

सारre सार इक सार सारा शिरै रामका नाम तिहु लोक प्यारा ।
पूररे पूर भरपूर घट घट रह्या पूरणाद कहु नाहि न्यारा ।।
नूररे नूर सब तासका नूरहै नूर विन धुरि होई जाय देही ।
शूररे शूर क्रम कूटि दूरा करै रामही चरण शिर राज एकी ।।१।।

---

# अथ ग्रंथ गुरु महिमा

स्तुति.— रमतीत राम गुरुदेवजी, पुनि तिहू काल के सन्त ।
जिनकूँ रामचरण की, वन्दन वार अनन्त ।।१।।
दोहा:— शीश धरु गुरु चरण तल, जिन दिया नाम तत्सार ।
रामचरण अव रैण दिन, सुमरै वारम्वार ।।२।।

:: चौपाई ::

प्रथम कीजे गुरु की सेव । ता सग लहै निरजनदेव ।।
गुरु किरपा वुद्धि निश्चल भई । तृष्णा ताप सकल वुझि गई ।।१।।
मैं अज्ञान मति का अति हीन । सतगुरु शब्द भया परवीन ।।
सतगुरु दया भई भरपुर । धर्म कर्म सासो गयो दूर ।।२।।
गुरु की पूजा तन मम कीजै । सतगुरु शब्द हृदय धरिलीजै ।।
सतगुरु सम दूजा नही कोई । जासूँ तन मन निर्मल होई ।।३।।
सतगुरु विन सीइया नही कोई । तीन लोक फिरि देखो जोई ।।
नारद पाया गुरु उपदेश । चौरासी का मिटया कलेश ।।४।।

गुरु विन ज्ञान कहो किन पाया। वैनसेन कर गुरु समझाया ॥
सतगुरु भक्ति मुक्ति का दाता। गुरु विन निगुरा दोजिय जाता ॥५॥
गुरु मुख ज्ञान सदा सुगरा पावै। निगुरा नर के सोच न आवै ॥
निगुरा का कीजै नहिं सग। ज्ञान ध्यान मैं पाडे भंग ॥६॥
सतगुरु सांच शील पिछ्णाया। काम क्रोध मद लोभ गुमाया ॥
गुरु कृपा सन्तोष हिआया। तृष्णा ताप मिटाया सुख पाया ॥७॥
गुरु गोविन्द सू अधिकाहोई। या सुनि रीस करो मत कोई ॥
प्रथम गुरु सू भाव वधावै। गुरु मिलिया गोविन्द कू पावै ॥८॥
दत दीगम्वर गुरु चौंवीस। सव ही का मत धरया शीश ॥
अपनी अकल आप समझाया। मति फुरण कू गुरु ठहराया ॥९॥
गुणवता गुण कदे नभूलै। कृत्यघ्नी दोजिग मे जुले ॥
सुगरा गरु कि सेन पिछाण। निगुरा नर वायक नी मानै ॥१०॥
शुकदेव व्यास गर्भ जोगेय। गुरु किया जिन जनक नरेश ॥
जन्मत मोह जीत वन गयो। तोभी गुरु विन काजन भयो ॥११॥
द्वादश वर्ष गर्भ तप कीन्हो। माया सूं मन रती न दीन्हो ॥
पिता व्यास जन्मत ही त्यागौ। नरपति गुरुसू सासो भाषयो ॥१२॥
त्याग विराग मत को पूरो। इन्द्रिय जीत काछ दृढ़ शूरो ॥
एती लछ अरु गुरु सू द्रोही। तो वाको दर्श करो मति कोई ॥१३॥
वाके दर्श वुद्धि सव नाशै। ज्ञान हीन अज्ञान प्रकाशै ॥
वा सग गुरु की अवज्ञा आवै। भत्ति हीन होइ नरका जावै ॥१४॥
गुरु भक्ता गुरु शिर पर राखै। गुरु को शब्द कवहुं वही नाखै ॥
वाको सग [illegible]

सब सतां की साख सुनिजै । तो गुरू कपट कदै नही कीजै ॥
गुरु को ब्रह्यरुप करि जानै । ताकी भक्ति चढै परमानै ॥१७॥
गुरु किरपा नरकी बुद्धि पाई । पशू वृत्ति सब दूर गुमाई ॥
आप नमै गुरु दीरघ देखै । ताशिखको कृत लागै लेखे ॥१८॥
जो नर गुरु का अवगुण धारै । होय मनमुखी गुरु बिसारै ॥
सो नर जन्म-जन्म दुख पासी । गुरुद्रोही जमद्वारे जासी ॥१६॥
गुरु मनुष्य बुद्धि जानो मत कोई । सतगुरु ब्रह्म बुद्धि सम जोई ॥
सतगुरु सकल कालको काल । सिखाँ निवाजण दीनदयाल ॥२०॥

---

दोहा —सतगुरु कूँ मस्तक धरै, राम भजन सूँ प्रीति ।
रामचरण वै प्राणिया, गया जमारो जीति ॥१॥
साँचा सतगुरु सेइये, तजिये कूडा मत्त ।
रामचरण सांचा मिल्या, दर्शेगा निज तत्त ॥२॥
गुरु महिमा सीखै सुणै, हृदय करै विचार ।
रामचरण तत शोधले, सोहि उतरे पार ॥३॥
॥ इति ग्रन्थ गुरु महिमा सम्पूर्ण ॥

---

# अथ ग्रंथ नाम प्रताप लिख्यते

स्तुति.—रमतीत राम गुरु देवजी, पूनि तिहु काल के सन्त ।
जिनकूं रामचरण की, वन्दन वार अनत ॥१॥
दोहा:—महिमा नाम प्रताप की, सुणो श्रवण चितलाय ।
रामचरण रसना रटो, तो सकल झड़ि जाय ॥२॥
जिन जिन सुमर्‍या नामकूं, तो सब उतर्‍या पार ।
रामचरण जो विसरिया, सोही जम के द्वार ॥३॥

## :: चौपाई ::

राम नामकू जिन जिन ध्यायो, भनकू छेद परम पद पायो ।
शिवजी निशदिन राम उचारे, राम बिना दूजो नही धारे ॥१

पार्वतीकू राम सुनायो, राम बिना सब झूठ बतायो ।
सोही राम सुन्यो शुकदेवा, गर्भवास मे लाग्यो सेवा ॥२'

राम सुमर सब मोह निवार्‌यो, मातपिता तज बनहिं सिधार्‌यो ।
रामप्रताप रम्भा गई हारी, सुमरत राम कामना मारी ॥३।

ब्रह्म पुत्र चार सनकादिक, राम नाम के भये सवादिक ।
रामप्रताप गर्भ नहिं आवे, सुमरत राम परम सुख पावै ॥४।

राम नाम नारद मुनि गावै, हृदय प्रेम अति प्रेह बधावै ।
शेप रसातल राम पुकारे, रसना लिख कबहू नहि टारे ॥५।

उभय सहस रसना है जाकै, राम राम रटना नहि थाकै ।
नरनारी सुमरे नहि रामा, एकही जीभ भई बेकामा ॥६।

राम नाम ध्रुव ध्यान लगावै, वास वैकुण्ठ वहुर नहि आवै ।
राम भजन छूटा सब कर्मा चन्दरु सूर देय परिकर्मा ॥७॥

राम राम प्रल्हाद पुकार्‌यो, ताको पिता बहुत पच हार्‌यो ।
सकट सह्यो पर राम न छाड्‌यो, रामभरोसे मरणोहि माड्‌यो ॥८॥

अगिनधार पर्वतसू राख्यो, सिंह सर्प गज परिहरि नाख्यो ।
अन्धकूप मे राम बचायो, जन को जश हरि जग दिखलाये ॥९॥

कोप्यो असुर खडग लियो करमे, जनके हित प्रगटयो हरि खभ मे '

द्विज अजामिल मद मांस अहारी, गणिका रत विषय अति भारी ।
कर्म करत तृप्ति नही भयो, विषय सग आयु क्षीण है गयो ॥१२॥
अत समय यमदूत ने घेर्यो, नाम नारायण सुतके हित टेर्यो ।
जमदूतन सूं लियो छुडाई, अपणो जाण रुकरो सहाई ॥१३॥
ऐसो पतित और नहीं कोई, राम कहा वाकी गति होई ।
अजाण भज्याका एसहनाणा, तो जान भज्याका कहाँ बखाणा ॥१४॥
गणिका एक गरक कर्मन मे, हरिकी शक नही कछु मन मे ।
जाकूं सन्ता सैन बतार्यो, राम राम कहि कीर पढायो ॥१५॥
सुवा पढावत विषया भूली, रामप्रताप सुखसागर झूली ।
रामप्रताप जुग जुग मे गावै, मूरख नर कोई भेद न पावै ॥१६॥
हनुमान अजनि को पूता, रामचन्द्र को कहिये दूता ।
सो भी रसना राम उचार्यो, रामप्रताप कारज सब सार्यो ॥१७॥
रामचन्द्र जब लक सिधाया, सिन्धु तरण की करै उपाया ।
विश्वामित्र कहै समझाई, राम नाम लिख पत्थर तराई ॥१८॥
ए देखो नहकेवल कर्ता, अवतारा का कारज सर्ता ।
भक्त हेतु अवतारहि धरही, राम रट्या सब कारज सरही ॥१९॥
वाल्मीक वहु जीव सताया, जीव शीव का भेद न पाया ।
संता शब्दमरा कहि भाख्यो, गहि विश्वास हृदय धरि राख्यौ ॥२०॥
तीजे शब्द उलटि भये रामा, वाल्मिकी का सरिया कामा ।
शतकोटी रामायण गाई, रामप्रताप एसो है भाई ॥२१॥
बहुरि कहू पडबाका जिगकी, महिमा करि कृष्ण हरिजन की ।
रामप्रताप पचाइण वाज्यो, जोग जज्ञ जप तप सब लाज्यो ॥२२॥
रामप्रताप नीच भयो ऊँचो, राम बिना ऊँचो कुल नीचो ।
रामजना की भ्राति न कीजै, भ्राति किया नर नरक पडीजै ॥२३॥

गहि गज ग्राह समद मे घेर्यो, राम राम ऊँचे स्वर टेर्यो।
रटत राम छूट्या सब फन्दा, मुक्त भयो तत्काल गयदा ॥२४॥

फद मे पड्या पशु सी ध्यावै, नरगृह बध्यो शुद्धि नहिं पावै।
जाकू कैसे राम उबारे, जन्म जन्म भवसागर डारे ॥२५॥

राजा जनक जज्ञ अनि कीन्हों, नव जोगेश्वर दर्शन दीन्हो।
राजा मनको साशो बूझै, तुमकूं भक्ति भेद सब सूझै ॥२६॥

दास कबीरा भये उजागर, रामप्रताप भक्ति को आगर।
राम राम रट राम समाया, बहु जीवन कूं भेद बताया २७॥

कृष्णदास पयहारी कहिये, राम बिना दूजो नही गहिये।
अग्र श्याम अगी अरु तुरसी, देव मुरारि भया वध कुरसी ॥२८॥

कीता धारम कूबा केवल, राम राम रट भया निकेवल।
राम राम रटियो हरिदासा, जगत जाल सू भयो उदासा ॥२९॥

ज्ञानी गर्क भया अरु परसा, रामसुमर जग जाण्यो निरसा।
दादूदास जन्म कुल नीचे, राम रटत पहुच्यो पद ऊँचे ॥३०॥

नीच ऊँच कुल भेद विचारै, से तो जन्म आपणों हारै।
सन्ता के कुल दीसै नाही, राम राम कह राम समाहीं ॥३१॥

परसुराम खोजी वाजिन्दा, हरिदास जन हरि का बन्दा।
पहली नीचा कर्म कमाया, राम सुमर उज्वल पद पाया ॥३२॥

सन्तदास कलि भया कबीरा, रामभजन रस सन्त सुधीरा।
पर उपकार धरी दिन देहा, छके ब्रह्म रस रहै विदेहा ॥३३॥

कृपाराम सन्त का बाला, ज्यू कबीर घर भया कमाला।
दया देश परमारथ पर॰ [illegible]

सायर कहो ऐसो कुण थागै, जितो पियो अपनी तृष भागै ।
राम सन्ता का अन्त न आवै- आप आपकी बुद्धि सम गावै ॥३६॥

रामप्रताप सुनो अब ऐसो, भजता भयो कहू सो तैसो ।
रामरटत गुप्ता रस चाखै, सत शब्दो मे प्रगट भाखै ॥३७॥

प्रथम राम रसना सू गावै, मनकूं पकड एक घर लावै ।
राखै सुरति शब्द ही माही, शब्द छाड कहू अन्त न जाही ॥३८॥

तब रसना सिर छूटै धारा, चलै अखण्ड नही खण्डै लगारा ।
जल पीवन की श्रद्धा नाही, मति यो अमृत दूर होई जाही ॥३९॥

रसपीवत क्षुधा सब भागी, कठा शब्द टगटगी लागी ।
नाडिनाडि मे चलै गिलगिली, सुखधारा अतिवहै सिलसिली ॥४०॥

मुख सू कछु न उचरै बैना, लग्या कपाट खुलै नही नैना ।
श्रवणां चर्चा सुणै न कोई, कठ ध्यान यह लक्षण होई ॥४१॥

कठ के ध्यान कमकमी जागै, रोम रोम सीतग सो लागै ।
हियो गदगदै श्वास न आवै, नैणा नीर प्रवाह चलावै ॥४२॥

इक दिवस इक भया तमाशा, कण्ठ हृदय बिच उठ्यो हुलासा ।
ज्यूं पालाकी डोरण छूटी, हृदय सीर सुखम रस उठी ॥४३॥

शब्द हृदय किया वासा, ज्यू रैण अधेरी चन्द्र प्रकाशा ।
भर्म कर्म सांसो गयो भागी, हृदय ध्वनी अखण्ड लिव लागी ॥४४॥

कहा कहूं या सुख की महिमा, और सुख सब दीशै पलमा ।
हृदय ध्यान ध्वनी जब होई, दूजो साधन रहै न कोई ॥४५॥

हिरदा सू लय धरणी गई, नाभि कमल मे चेतन भई ।
शब्द गुन्जार नाडि सब जागें, रोम रोम मे होइ रहि रागै ॥४६॥

नौसे नारी मगल गावै, जहाँ मन भँवरा अति सुख पावै ।
शीतल भई सबै ही काया, शब्द ब्रह्म रस अमृत पाया ॥४७॥

अबतो शब्द गगनकूं चढिया, पश्चिम घाटि होइकै अनुसरिया।
घाटी वीस भैरु को छेकी, इकवीसे गढ गया विशेखी ॥४८॥

पहिली वैठा त्रिकूटी छाजै, जाकै ऊपर अनहद वाजै।
त्रिवेणी तट ब्रह्म न्हाया, निर्मल होई आगेकू ध्याया ॥४९॥

दोहा:—इगला पिंगला सुषमणा। मिलै त्रिवेणी घाट॥
जहा जावे जल झुलके। निर्मल होइ निराट ॥१॥
अब त्रिवेणी न्हायकै। किया गगन परवेश ॥
तीन लोकसू अलक सुख, यो कोइ चौथा देश ॥२॥

## :: चौपाई ::

अब चौथे घर पहुचा जाई, जहाँ का चहन मै कहूं सुणाई।
घरर घरर अनहद घररावे, परम ज्योति दामिणी झलकावै ॥५०॥

सुषमण नीर लुम्ब झड़िलाई, भीजत सुरति गर्क होई जाई।
अर्ध उर्ध जहाँ कमल प्रकाशा, सुरति भँवर होई करत विलासा ॥५१॥

घुरे अखण्ड अनहद वाजा, प्राण पुरुष जहाँ तख्त विराजा।
झिलमिल झिलमिल नूर प्रकाशै, अनंतकोटि रवि प्रगट्या भासै ॥५२॥

या तो वात अतोल है भाई, मुखसू कहा तोल व्है जाई।
पवन कहो कैसे गह हाथा, कैसे भरे गगन की वाथा ॥५३॥

रूप वर्ण कैसो तडका को, ऐसो कहाँ बखानों जाको।
हाक वाक रहे कहत न आवै, पहुच्या होय सोही भल पावै ॥५४॥

दोहा:—अनहद गरजै नभ झरै, दामिणि ज्योति उजास।
रामचरण सुनि सायरा, हंसा करत निवास ॥१॥

ब्रह्म परश्या की दशा बताऊँ, वाहिर के लक्षण पिछ्रणाऊँ।
जाके रंक एक ही राऊ, माया सेती करे न भाऊ ।।५६।।

जाके अन्दर ब्रह्म रस बूठा, सकल व्यवहार हो गया झूठा।
कनम कामनी करै न नेहा, छक्या ब्रह्म रस रहै विदेहा ।।५७।।

जैसे बून्द मिली सागर मे, कंसे पकड़ सके कोइ कर मे।
जीव ब्रह्म मिल भया समाना, ब्रह्म मिल्या कर्म करै न आना ।।५८।।

दोहा:—एह चहन दर्श्या विना, मति कोई छोड़ो ध्यान।
रामचरण इक राम विन, सब ही फोकट ज्ञान ।।१।।

रामचरण भज राम कूं, ब्रह्म देश कू जाय।
जहाँ जम जोराँ का भय नही, सुखमे रहे समाय ।।२।।

रामचरण कहे राम को, बडो प्रताप जग माँहि।
अनत कोटि जिन उधरिया, भजै जो भरमे नाहि ।।३।।

।। इति ग्रन्थ नाम प्रताप सम्पूर्ण ।।

---

# अथ शब्द प्रकास लिख्यते

स्तुति :— रमतीत राम गुरु देवजी, पुनि तिहू काल के सन्त।
जिनकूँ रामचरण की, वन्दन बार अनत ।।१।।

दोहा —राम नाम तारक मन्त्र, सुमरे शकर शेष।
रामचरण साचा गुरु, देवे यो उपदेश ।।२।।

सतगुरु वकसे राम नाम, शिख धारै विश्वास।
रामचरण निशदिन रटे, तो निश्चय होय प्रकाश ।।३।।

## :: चौपाई ::

अब सुणियो सब साधु सुजाना, राम भजन का करु वखाना
प्रथम नाम सतगुरु सूँ पाया, श्रवण सुनके प्रेह उपजाया ॥१॥
पुन रसना की श्रद्धा जागी, राम रटन निशि वासर लागी।
दूजी आशा सकल बुहारी, तब राम नाम मे सुरति ठहारी ॥२॥
पद्मासन निश्चल मन कीया, नासा निरति धार धर लीया।
श्वास उवास धवनि लगाई, आरत करके विरके विरह जगाई ॥३॥
रसना अग्र खुली इक सीरा, प्रथम वाको पयसो नीरा।
रटता रटता भयो मिठास, हर्ष भयो आयो विश्वास ॥४॥
कई दिवस रसना रस गटक्यो, पीछे शब्द कण्ठ मे उटक्यो।
कण्ठ स्थान बहुत कठिनाई, मुखसू वकन न बोल्यो जाई ॥५॥
खान पान केपे रुचि रहे थोरी, मारग रुक्यो जाय कह औरी।
क्षीण शरीर त्वचा कसुचानी, नील नस दीसे झलकानी ॥६॥
पीरो बदन नेतरा लाली, मुकुर ज्योति ज्यू दीपे कपाली।
चलै कमकमी रु थररावै, छाती रुधे श्वास नही आवै ॥७॥
ऐसी विधि विरहनि की होई, विरह जाण के सतगुरु सोई।
एक दिवस ऐसी बणि आई, शब्द सरक गयो हिरदा माही ॥८॥
परम सुख हिरदै प्रकाशा, ज्यू रवि कीन्हो तम को नाशा।
सहजै सुमरण हिरदै होई, बाहिर भेद न जाणे कोई ॥९॥
सोवत जागत डोरी लागी, वनबस्ती की [illegible]

नाभि कमल मे शब्द गुजारे, नौसे नारी मगल उचारे ।
नाभि हौद काया वन पीवै, ता रस साधु जुग जुग जीवै ।।१२।।

रोम रोम झुणकार झुणकै, जैसे अन्तर तार ठुणकै ।
माया अक्षर यहां निलाया, ररकार इक गगन सिधाया ।।१३।।

पश्चिम दिशा मेरु की घाटी, वीसू गाठ घोर से फाटी ।
त्रिकुटी सगम किया स्नाना, जांय चढ़्या चौथे अस्थाना ।।१४।।

जहा निरंजन तख्त विराजै, ज्योति प्रकाश अनन्त रवि राजै ।
अनहद नाद गिणत नही आवै, भाँति भाँति की राग उपावै ।।१५।।

सरव सुखमरण नीर फुहारा, शून्य शिखर का यह विव्हारा ।
झरै पणग मोती सा ढ़लकै, जाकी ज्योति अरुण सी झलकै ।।१६।।

सागर जहाँ विना घरिया, हसै वास तास मधिकारिया ।
सुखमण मोती करै अहारा, निज हसा का येही चारा ।।१७।।

शुन सायर हसा का वासा, भवसागर सुख भया उदासा ।
दरिया सुख को अन्त न आवै, छीलर काल वाज झपटावै ।।१८।।

सुखसागर मिल सुख पद पाया, सो शब्दो मे कह समझाया ।
विन देख्या परतीत न आवै, तासूं कैसे भेद बतावै ।।१९।।

अर्ध उर्ध कमला जहाँ फूल्या, भँवर रूप होई हसा भूल्या ।
भँवर गुजार गगन गिरणाया, होय मस्त अलि तहाँ लुभाया ।२०।।

ऐसो पद विरला जन पावै, सो भवसागर नाही आवै ।
राम रट्या का यह प्रकाशा, मिल्या ब्रह्म पद भव भया नाशा ।।२१।।

रामचरण कोई राम रटेगा, सो जन येही धाम लहेगा ।
राम नाम निशि वासर गासी, सो नर भवसागर तिर जासी ।।२२।।

राम नाम विन आन उपाई, ज्यूं डूल्याँ का खेल कराई ।
बालक वेलु मन्दिर बणाया, तामें दैस कूण सच पाया ।।२३।।

राम भजन विन खालो करणी, ज्यूं विन विज सुधारी धरणी ।
राम बीज साधन हल हाकै, तो रामचरण खेती फल पाके ।।२४

दोहा —वरणि कहा सक्षेप सो, दरिया कैसो पार ।
जिन परशी या धाम कू, सो लीज्यो सन्त विचार ।।१

रामचरण रट राम नाम, पाया ब्रह्म विलास ।
ई साधन कोई लागसी, जाके होसी शब्द प्रकाश ।।२

।। इति शब्द प्रकाश सम्पूर्ण ।।

---

# अथ ग्रंथ चिन्ताकणी लिख्यते

स्तूति —रमतीत राम गुरुदेवजी, पुनि तिहू काल के सन्त ।
जितकूँ एक चिन्तावणी की, वन्दन बार अनन्त ।।१

दोहा.—प्रथम वन्दन गुरुदेव कूँ, पूनि अनत कोटि निज साध ।
कहू एक चिन्तावणी, धो वाणी विमल अगाध ।।२

वधै स्वाद रस भोग से, इद्रया तणें अरत्थ ।
उन जीवन के चेतबे, करु चिन्तावणी ग्रन्थ ।।३

रामचरण उपदेश हित, कहू ग्रन्थ विस्तार ।
परयो प्राण भव कूप मे, सो निकसे अर्थ विचार ।।४

अब तू राम रसना गाया, बीतो जन्म अहलो जाय।
तेरा जन्म की सुण आदि, मूरख खोइए नहि बादि ॥३॥
पाई दुर्लभ मिनखा देह, अब हरि सुमर लाव्हा लेह।
गाफिल होय मति भाई, अवसर बहुरि नही पाई ॥४॥

दोहा.—बहुत कष्ट करि पाइयो, मिनख जन्म अवतार।
ताहि सुफल करि लीजिये, भज कै सिरजन हार ॥१॥
नरतन कूँ सब चहै, ब्रह्मा करत हुलास।
रामचरण यासूँ लहै, ब्रह्म ज्ञान प्रकाश ॥२॥

## :: चामर छन्द ::

प्रथम पिता के घट जाय, द्वितिये मात के गर्भ आय।
धरियो नीत कै संग तोय, तामे बहुत विष्ठा होय ॥५॥
ऐसा गर्भ का कहूं दुख, तामे रती नाही सुख।
आंतां रहमे तू लिपटाय, नाही श्वास लीयो जाय ॥६॥
ऊंछे शीश उर्ध पाव, जठरा अग्नि को बहु ताव।
तामे कृमि चूंटया खाय, जहां तू रहो हरिकूं ध्यान ॥७॥
अब तू काढ सांई मोहि, निशि दिन विसरु नाही तोहि।
यो दुख बहुत है भारी, अब मैं शरण हूं थारी ॥८॥
ता दिन पिता नाही माय, का सू कहे दुख समुझाय।
जा दिन नही भाई बन्ध, ता दिन नही सगा सम्बध ॥९॥
जा दिन एक दीनाथ, ता बिन और नाही साथ।
अब कै काढि मोकू देव, निशिदिन करुगो हूं सेव ॥१०॥
तुजि बिन आन जाचूँ नाहि, राखू सुरति तुझ ही माहि।
मैं तो बचन को साचो, मुझ पर महर कर बाचो ॥११॥

दोहा:—गर्भ कोल काठा किया, जीवनदास दे मुज्ज ।
आठ हहर चौसठ घडी, साई सुमरूँ तुज्ज ॥१॥
आठ पहर सुमरत रहूँ, साँई श्वासो श्वास ।
अरज करु कर जोड़ के, मेटो राम तरास ॥२॥
रामचरण सकट पडया, जीव करैं सव फाद ।
रंचक कवहू लहै, तो वचन जाय सव वाद ॥३॥

## :: चामर छन्द ::

अव तैं जन्म लियो आय, ता दिन कष्ट अधिको पाय ।
जैसे जन्नि काढ्यो तार, ता दिन लह्यो पीर अपार ॥१२॥
माता मई आपो भूल, निकस्यो रुधिर के सग भूल ।
झल्यो एक कपडा माहि, अव हरि चित आवै नाहि ॥१३॥
वधावा वाप के गावै, कुटुम्बी वहुत सुख पावै ।
नान्हो फालणै झूल्यो, अन्तरगत धणी कू भूल्यो ॥१४॥
वारण वेग चाई चाल, घर घर वधै वादरवाल ।
वधाई नेवगी पावै, भलो दिन आज का भावै ॥१५॥
भूवा ढूंढ ले आई, स्वरथ आपके ध्याई ।
भतीजो गोदि मे लीन्हो, हिरदो प्रेम सूं भीन्हों ॥२६॥
फली है साख अव म्हारी, करे छी आशा हूं थारी ।
लेस्यू दभ्रती [illegible] [illegible]

भरणां चालवा लागो, फिरे घर आँगणे भागी।
रमै जाइ बालकाँ के साथ, लकड़ी गेडियो गह हाथ ॥२०॥

अब उठ बाप सग चाल्यो, अपना किसब मे वाल्यो।
किया है व्याह का साजा, वाजै आँगणै बाजा ॥२१॥

सब मिल किया ऐसो सूल, बध्यो गृह दुख को मूल।
दुलहनि भावती आई। निशिदिन चित मै भाई ॥२२॥

दोहा:—वर्ष चतुर्दश को भयो, अब तरुण पाकी वेस।
तरुणो सेती मन बध्यो, मही भक्ति परवेस ॥१॥

वालपणी खोयो ख्याल मैं, तरुणा अधेरी वेस।
रामचरण गुरु ज्ञान को, रागै नहीं उपदेश ॥२॥

बालक बुधि उपजी नहीं मात पिता सूं हेत।
खान पान रुचि पाय कै हरि सू भयो अचेत ॥३॥

## :: चामर छन्द ::

कियो नारि सूं अब हेत, मात पिताकू दुख देत।
चालै आपणै जोरै, तरुणी चित कू चोरै ॥२३॥

काठो झूलणो भावै, ढीलो दाय नही आवै।
वाई पागड़ी बाधै, पल्ला दोई लटकता कांधै ॥२४॥

दुपटो केसरिया कीयो, पयको कमर कस लीयो।
बनाती मोचड़ी पहरै, सादी और की चहरे ॥२५॥

मेल्है घमंकि धरणी पाव, वांगा वावडयां अति चाव।
कसूंबा घोटके पीवै, अमल बिन पलक न्ही जीवै ॥२६॥

मारी पारकी ताकै, नेणा कसर की झाकै।
ऐसी अन्ध बेईमान, कीयो कामना हैरान ॥२७॥

छायां निरखंतों चालै, बाधा गर्भ की पालै ।
नागर पान सूं अति जीर्ण, बीडी लिया पोखै पावे ॥२८॥

मूंछां अधिकणोहाली, जुलप्यां सोहती काली ।
सूधां अंतर सूं भीनी, बीन्दी भाल पर दीनी ॥२९॥

हिलावै कान मे मोती, गिने नहीं दूबला गोती ।
कर की अगुलीयां बीटी, गला मे मांदल्या कण्ठी ॥३०॥

न्यारो बाप सूं होई, तिरिया पुरुष रह दोई ।
माया सर्व है मेरी, हवेली खोसल्यूं तेरी ॥३१॥

सनेही सासरयां भावै, कुटुम्बी देख दुख पावै ।
माता पिता कूं दे गार, बोले नहीं शब्द बिचार ॥३२॥

तृष्णा लोभ की अतिलाय, धनकू फिरै चहु दिशि ध्याय ।
कामी कुटिल मतिको अति हीन, मूरख विषय मे परवीण ॥३३॥

हरि को नाम सुमरै नाहि. इस विध जन्म अहलो जाहि ।
बाचा गर्भ की भूल्यो, सुख संसार के भूल्यो ॥३४॥

करे नही नारि कूं, हिरदै बस रही प्यारी ।
कोई भक्ति की भाखै, तासू बैर करि राखै ॥३५॥

दोहा —राम भक्ति जाणै नही, कर्मां सूं हुशियार ।
यह तरुण तन अवस्था, खोवे काली धार ॥१॥

वर्ष पचीसां पर भयो, अब ज्वनी को जोर ।
.त कन्या स हित कियो, नजर न आवै ओर ॥२॥

धन की चातुरी जाणै, निन्दा नाम को ठाणै ।
राखै जगत को नातो, तोडयो नाम को तातो ॥३७॥

जवानी जम की दासी, लियाँ कर जम की फाँसी ।
किया वस जीव घेरे घाल, नही सकै जवानी पाल ॥३८॥

मूरख विषय सूं रातो, फिरै घर धन्ध मे तालो ।
हरि की वात नहिं भावै, साधु देख जल जावै ॥३९॥

आपणा स्वारथाँ रुडो, हरि की भक्ति सूं कूड़ो ।
करे नही साध को सगा, अतरगत जगत को रगा ॥४०॥

मेरे कवीलो भारी, मो विन होय सव ख्वारी ।
मैं तो सवन को प्रतिपाल, भासै नही सिर पर काल ॥४१॥

करता कर्म सव दिन जाय, स्वप्ने सुख नांही पाय ।
लियो सव आपणै सिर भार, कवीलो चले नाही लार ॥४२॥

झूठो मोह वाँधे काहि, तेरे देखता सब जाहि ।
तेरो वाप कहां भाई, इस विध छोड तू जाई ॥४३॥

साँचो सार है इकराम, ता विन जगत सव वेकाम ।
जोवन पाव्हणो भाई, दिन दस देखता जाई ॥४४॥

काचा कली का सा रग, जोवण भक्ति पाडै भग ।
वुढापो शीश पर आयो, जोवन देख थरायो ॥४५॥

सव ही लूट लेसी माल, करसी वुढापो वेहाल ।
कुटुम्वी कार नही मानै, तिरिया शक नही आनै ॥४६॥

दोहा —चालीसा के ऊपरे है, वृद्ध अवस्था होय ।
चिन्ता चितकू ग्रास है, निशदिन वाढै सोय ॥१॥

अमर वेल ज्यू वृक्ष को, सूस लियो सव तत ।
रामचरण यू जगत को, लियो कवीले अन्त ॥२॥

## :: चामर छन्द ::

अव तो चेत रे अन्धा, घर का फेरिया कधा ।
नारी करै नाही नेह, सुत वारणा नित लेह ॥४७॥

तन को घट गयो जोरो, दुनिया सव कहे भोरो ।
वेटा वोल माने नाहिं, ऊठे कल्पना मन माहि ॥४८॥

तन की त्वचा सल पडिया, नैणा नीर अति झरिया ।
पलटया श्याम सव ही केश, सो तो शुक्ल हुआ भृश ॥४९॥

माथो हालवा लाग्यो, करां को जोर सव भागो ।
पगा में पड़त है आँटी, हो गई देहली घाटी ॥५०॥

श्रमणा सुणे नाही वैन, रूझै शातलो लो नैण ।
वाचा ठीक नही वोले, मनसासा पड गई झोले ॥५१॥

मुख मे दाँत नाही डाढ, देही खडखडे सव हाड ।
जठरा अग्नि भी भागी, वूढा की क्षुधानही जागी ॥५२॥

भोजन स्वाद नही लागै, मुरख रोइ रोइ त्यागै ।
घर मे हुकुम चालै नाहि, चुगली खाय पचा माहि ॥५३॥

वेटा कटकडी कीन्ही, खटोली पोल मे लीन्ही ।
मर भी जाय नही डाकी, न जाणै किता दिन वाकी ॥५४॥

प्यासा जल नही पावै, वैठण ढिग नही पावै ।
करि है कल्पना भारी, सवकू देत है गारी ॥५५॥

वाचा चूकियो अज्ञान, कियो नाहि हरि को ध्यान ।
बोल्यो गर्भ माँही बोल, नीसर भूलियोसब कोल ।।५८।।

कुटुम्बी आपणा कीया, बुढापे दूर करि दिया ।
झाड़ खाट मे जावै, ऐसा दुख भजन विन पावे ।।५९।।

अब तो भई पूरण आव, जम कै दूत घाल्यो घाव ।
आयो सावठो साथा, नही रोइ चार की बाता ।।६०।।

आवत देख बिललायो, स्यो जमदूत को भाग्यो ।
बुलावे आपणी नारी, खड़ो तू भावती म्हारी ।।६१।।

बुलावै सेन सू पूता, लियो मोही पकड जमदूता ।
करो कोई साहि अब म्हाकी, करी छी बैठ मैं थाकी ।।६२।।

दुख मे निकट नही आवै, टल टल दूर होई जावे ।
उलटी करै सब हाँसी, खड़ी रहो वहुत दुख पासी ।।६३।।

जोवन किया कर्म खोट, ताते सहे जम की चोट ।
पासी पड़ी गलकै माहि, तो भी मोह छाडे नाँहि ।।६४।।

जम का दूत ले गया मार, पहुच्यो धर्म के दरबार ।
कुटुम्बा पालियो आयो, जिन हरि नाम विसरायो ।।६५।।

दोहा.—पकडि दुत जम ले गया, राख सक्यो नही कोय ।
रामचरण झुटो जगत, अन्त रह्यो सब रोय ।।१।।

## :: चामर छन्द ::

अब तो मर गयो पापी, राक्यो रेण मे छापी ।
गाव में डर भयो भारी, लागै रैण या खारी ।।६६।।

कुटुम्बी कपट सू रोवै, हिरदय अधिक सुख होवै ।
मिटयो है आज दुख भारी, निशिदिन काडतो गारी ।।६७।।

राखी रोकि आवी पील, उज्वल करो लीप रु ढोल ।
हमारे आज अति ही सुक्ख, वुढो ले गयो सब दुख ॥६८॥
याकू वाल आओ वीर, लागी छोत अधिक शरीर ।
पीछे नीर मे न्हाया, दिवालय होय कर आया ॥६९॥
दोहा—जीवत एता दुख लह्या, वीना भज्यां भगवत ।
अब चौरासी जूणि मे, भुगते कष्ट अनन्त ॥१॥
कहा कहूं या जगत सू, मानै नही लगार ।
सब ही देखत जात है, भजै न सिरजनहार ॥२॥
मुख फेरे हरि भक्ति सू, सनमुख रहै ससार ।
रामचरण वे मावी, झुले नरक मझार ॥३॥

## :: चामर छन्द ::

कहूं अब नरक का वहुभेद, तामे जीव पावै केद ।
अष्टावीस कुण्डँ भारी, झुले अधम नरनारी ॥७०॥
थावा सार का ताता, तिन सू भरावै वाथा ।
रह्यो तू नारी सू लिपटाय, सो अब थब भैटो आय ॥७१॥
सरिता रुधिर की बहु धार, तामै वहै जीव अपार ।
काटा सार का शुला, तापर चाल रै भूला ॥७२॥
हरि कि राह नही चाल्यो, गरु का शव्द कू पाल्यो ।
तासू चलो काटा माहि, यो दुख मिटै कवहु नाहि ॥७३॥
स्वारथ हेत कि[illegible] तास नर[illegible]

हिरदय ध्यान नही धारयो, अन्तर रोग विस्तारयो।
कर सू कीयो सुकृत नाहि, गोला दिया हाथामाहि ।।७६।।
कियो नही साध को दीदार, निजरयां मेख मारै सार।
दर्शण जात असलक्यो, बेलुयु तपन मे न्हाख्यो ।।७७।।
दुख तो बहुत है भाई, कहा लग कहूं समुभाई ।
कहता ओड़ नही आव, दुख को पार नही पावै ।।७८।।

दोहा—लख चौरासी भुगततां, बीत जाय जुग चार।
पीछे नरतन पायगा, ताते राम सभार ।।१।।
राम राम रसना रटो, पालो शील सन्तोष।
दया भाव क्षमा गहो, रहो सकल निर्दोष ।।२।।
यो भूठो ससार है, भूट कुटुम्ब को हैत।
छूटै मृग जल ध्यान कै, भूल्यो मूढ अचेत ।।३।।

## :: चामर छन्द ::

अब मैं देहु भूट बताय, सुणिये प्रीति सोचित लाय।
दीसे दष्टि मे जेता, ते सब जायेगे तेता ।।७९।।
रहे नही ब्रह्मा बिष्णु महेश, नही रहै शेख भू नरेश।
रहै नही धरणी अरु आकाश, जासी मेरु मंड कैलाश ।।८०।।
नही रह सरित सागर सात, नही धर सूर शशि कुशलात।
नही रह पवन पाणी बीर, ये सब अथिर नाही धीर ।।८१।।
नही रह मेघ माला इन्द, खासी काल कर कर छन्द।
नही रह धर्म धर्म का दूत, जासी माय मा का पूत ।।८२।।
उपज्या जाय सब ही बीत, केता कहूं कर कर चीत।
समझै सैन मे स्याना, न जाने अन्ध निज गयाना ।।८३।।

कहाँ शंखासि ब्रह्म छलन, कीधो मच्छ होय निर्दलन ।
कहाँ गिरि मेरु कूरम जुथ्यो, धारयो पीठ सायर मथ्यो ॥८४॥
कहाँ हिरणाक्ष धरणी हरी, जा हित देह वराह धरी ।
मारयो असुर कीन्हो नाश, मेटी धरित्री की त्रास ॥८५॥
कहां हिरणाक्ष हरिसू द्रोह, कियो पुत्रसूं अति श्रोह ।
जब हरि धरियो नरहरि रूप, राख्यो भक्त मारयो भूप ॥८६॥
वलिकै धरयो वावन रुप, जगमे आप जाच्यो भूप ।
यो पाताल मेल्यो जाहि, भूपर निजर आवै नाहि ॥८७॥
जोधा एक सहरार त्राह, नितही चलै छतर छांह ।
जाको अधिक कहिए जोर, वा सम दूसरो नहीं और ॥८८॥
धरियो बिप्र को अवतार, ताकू मार कियो रुवार ।
कहा रे लक को राजा, जाके कनक का छाजा ॥८९॥
खाई समद कचन कोट, मारयो काल एकहि चोट ।
लियो मारकै रघुनाथ, लका चली नाही साथ ॥९०॥
रहयो नही कंस मथुरा मल्ल, महलां बैठ करतो हल्ल ।
जाकू कृष्ण लीन्हो मार, अब मैं कहत हूं पुकार ॥९१॥
सब ही गाया मारनहार, धरिया देह सब अवतार ।
जासी देव अरु दाणा, न रहसी रक अरु राणा ॥९२॥

फा गुरु ज्ञान की समसेर, कीजै सबल बैरी जेर।
इनकू मार रे भाई, सुमरो राम सुखदाई ॥९६॥

नही कोई राम बिन तेरा, झूठा जगत उल झैरा।
नवा सूं नेह मति राखै, थे तोहि गर्भ मे न्हाखै ॥९७॥

बध्यो वासना के हेत ताते, जन्म फिर फिर लेत॥
निशिदिन रामकू गावो, जामण मरण नही आवो ॥९८॥

भजन सू वासना जल जाय, दूजी नहि ओर उपाय।
अब मैं कही है सुण तोहि, हृदय धार चेतन होई ॥९९॥

रसना रामकू रटिए, सतगुरु शरण ही गहिए।
शासा जीवन सब जाय, रहसी ब्रह्मपद समाय ॥१००॥

दोहा—यह चिन्तावणी ग्रथ सुण, हरिसूं करे सनेह।
रामचरण साची कहै, फिर न धरे न दूजी देह ॥१॥

रामचरण भज राम कू, छाडि देहादिक परिवार।
झूटा तज रच साचसू, तो छुटे जम मार ॥२॥

रामचरण भज राम कूं, संत कहे समुझाय।
सुख सागर कू छाड कै, मत छीलर दुख जाय ॥३॥

सोरठा—धरियादिक कलि जाय, शब्द ब्रह्मनाहीं कले।
रामचरण रट ताहि, चौरासी का भय टलै ॥१॥

चौरासी की मार, भजन बिना छुटे नही।
ताते होइ हुसियार, यह शीख सतगुरु कही ॥२॥

॥ इति ग्रंथ चिण्तावणी सम्पूर्ण ॥

# अथ मन खण्डन लिख्यते

स्तुति — रमतीत राम गुरु देवजी, पुनि तिहूं काल के सन्त ।
जिनकू रामचरण की, बन्दन बार अनत ॥१॥

दोहा:— अलख निरजन बीनऊ, लागू सतगुरु पाय ।
मन खण्डन की जुक्ति होइ, सो मोही दोउ बताय ॥१॥

मन तन पर असवार है, गुण इन्द्री सब साथ ।
फिरे सबादा वस भयो, क्यूं करि आवै हाथ ॥२॥

---

## :: चौपाई ::

सप्त धातु काया अस्थान, चेतन राजा मन परधान ।
मन के तीन अपर्वल जोध, तामे दोय न मानै बोध ॥१॥

पाच पयादा मन की लार, पुन पांचा पंच पच आगार ।
अपणा अपणा चाहै भोग, ज्यू ज्यूं नगरी बाधै रोग ॥२॥

तिव नरपति इस मतो बिचारयो, मन खडन निजमन विस्तारियो ।
मंन की चोरी निज मन पावै, नरपति आगै सब गुदरावे ॥३॥

नरपति को निज सदा हजुरी, परकृति मन मुख बाधै धुरी ।
मैं तो हुकम राय को करि हो, तेरी चोरी कागद धरिहों ॥४॥

तेरा पाँच पियादा मारु, रज तम दोई टूक कर डारु।
सात्विक कूं मैं लेहूं फेर, काढू नगर पचीसू हैर ॥७॥
जब परकृति मन बाग उठवै, ज्ञान खडग ले निज मन ध्यावै।
मनवो जाय आकासां भँवै, निज मन हते करि नीचो दवै ॥८॥
मनवो नीची दशा बिचारै, निज मन पकड गगन की धारै।
मनवो करै उठन का दाव, निजमन काठा रोपै पाँव ॥९॥
मनवो मुख भोगा मैंकरे, निजमन उलट अफूटो धरे।
विषय वासना मन का भोग, निजमन इनको जाणे रोग ॥१०॥
दोहा:—सुण प्रकृति निजमन कहै, मुझ सिर नरपति हाथ।
तोहि चरणतल चूर हूं, पकडू तेरो साथ ॥१॥

---

# अथ मन खण्डन लिख्यते

जब मन खाटा मीठा चाव्है, तब निज फीका भोजन पावै।
मनवो ऊँचा नेतर न्हाले, तब निज चख का पडदा ढालै ॥११॥
मनवो नासा चाव्है गध, निजमन देखे दुर्गन्ध।
राग रग श्रवणा कर भावै, तब निज हरि का गुण सभलावै ॥१२॥
स्पर्श इन्द्री चावै भोग, निजमन गहे शील का जोग।
कर सूं मन सब काज सवारै, निजमन आरभ सकल निवारे ॥१३॥
चचल होय चरणा सूं चालै, निज पगो होई क भून ही हालै।
छादन त्वचा सुहाय माँगै, निजमन सबही बिस्तर त्यागै ॥१४॥
तब मन पलग पथरना हेरै, निज भूपन आसण कर फैरे।
वनवो वास महल मे करे, निजमन आसन चौडे धरे ॥१५॥
मनवो वस्ती सू मन लावै, निजमन लै वन खण्ड मे जावै।
मनवो शत्रु मित्र दोई भाखै, निजमन दोऊ समकर राखै ॥१६॥

मनवो करे मित्र से मोह, जबही निजमन ठाणै द्रोह।
मनवो वैर शत्रु सूं करे, तासू निजमन हित विस्तरे ॥१७॥

मनवा माया कूं उपजावै, निजमन दृढ वैराग उपावे।
मनवो सत्सगति सूं भागै, निजमन उलट चौगुणो लागै ॥१८॥

मनवो रामभजन सू हारै, सिर में निजमन मुद्‌गर मारै।
मनवो आडो आसण भावै, निजमन उलट खडा ठहरावै ॥१९॥

ज्यूं ज्यूं मनवो ओल्हा हेरे, जहाँ जहाँ निजमन जाइ घेरे।
कहूं न मन को लागै दाव, निजमन को छाती पर पॉव ॥२०॥

निजमन है नरपति को दास, प्रकृति मन को नहि विश्वास।
जो प्रकृति मन कै चलै सुभाय, तो अनत जूणि मे गोता खाय ॥२०॥

जीव ब्रह्म निज एको करै, चचल मन निहचल मे धरे।
ऐसे मन कूं खण्डो भाई, यह सीख सतगुरु सू पाई ॥२१॥

मन खण्डन का यह उपाव, ओर न कोई दूजा दाव।
मन कै मतै कबहु नही चालै, मनकू उलट अफूटो पालै ॥२३॥

सब जीवा कू मन भरमावै, मन कै सग दुखसुख कूं पावै।
सतगुरु शब्दा पकडे मन कू, रामचरण परम सुखै है जिनकू ॥२४॥

मन का मारया जो नर मरै, लख चौरासी घट वे धरै ॥
मन कू मार मरेगा कोई। परम धाम मैं वासा होई ॥२५॥

दोहा—मन खण्डै रामै भजे, तजै जगत गृह कूप।
रामचरण तब परसिए, आतम शुद्ध स्परुप ॥१॥

## राग—भैरव

भजरे मन राम निरजन कूँ । जन्म मरण दुख भजन कू ॥
अर्ध नाम शिल सायर पाटयो । रामचन्द्र दल तारणकू ॥१॥
जल बूडत गज के फद काटे । अजामेल अघ जारण कू ॥२॥
राम कहत गणिका निसतारी । जुग जुग अधम उधारण कूँ ॥३॥
ऊच नीच को भ्राति न राखै, शरण को प्रति पालण कू ॥४॥
रामचरण हरि ऐसे दीरघ । अवगुण गुन्ह निवारण कु ॥५॥

## पद—२

पतित उधारण विडद तुम्हारो । अव के राम पतितकूँ त्यारो ॥टेक॥
भक्त विठ्ठल कू भक्ति पियारी । हमतो पतित पापकी क्यारी ॥१॥
अजामील गणिका सी त्यारी । उनसू मैली नीति हमारी ॥२॥
कामी कपटी मैं पराहारी । लोभी लपटि चिक्ल विकारी ॥३॥
तनमन अशुचि नही आचारी । परपची अरु परधन हारी ॥४॥
गुण करता सू प्रवगुणकारी । अपणो अवगुण गुण विस्तारी ॥५॥
रामचरण मन येहि विचारी । गुण सागर मै शरण तम्हारी ॥६॥

## राग—बिहंग

राम रस पलकन कीजे न्यारो ऐसी सूज बहुरि नहि पावे ।
नरतन को अवतारो ॥टेक॥

लखचौरासी भ्रम श्रम पायो, भुगत्यो कष्ट अपारो ।
भाग भलो मिनखा तन पायो, भजलै सिरजन हारो ॥१॥

ऐसो रस और नहि कोई, पीवत लगै पियारो ।
ई अवसर मैं पीलै प्राणी, होय होय हूसियारो ॥२॥

शिव सनकादिक शेष पिवत है, अनत कोटि जन धास्यो।
राम शब्द निर्दाण पुकारे, जिन शिर भार उतास्यो ॥३॥
माया मोह नारि सुत वधु, त्यागयो सकल पसारो।
रामचरण ताकी वलिहारी, जाकै या रसको अधिकारो ॥४॥

## पद–१

रामजी सवका सिरजनहारा। ऊच नीच कोई भेद न जाणै।
भज्या उतारं पारा ॥टेक॥
पडित गावै वेद पुरणा, दुनिया आंन पसारा।
हरि मारग की खवर न पाई, भूल्यो सव ससारा ॥१॥
सत मिल्या सवही विधि पावै, भजन भेद अधिकारा।
रामनाम निर्पक्ष बतावै, नहि कोइ म्हारा थारा ॥२॥
घट घट व्यापक राम कहीजे, उतम मधिम विहारा।
जो ध्यावै सोही पद पावै, जामै फेर न सारा ॥३॥
तन मन जीत रामरस पीवे, जीवै ई आधारा।
रामचरण ताहि और न भावै, सव रस लागै खारा ॥४॥

## पद–२

नरतू यहा क्यू आय भुलांनो। बहूत अरज ग्रभ मांही कीन्ही।
प्रभुजी मेरी मानो ॥टेक॥

गुप्त प्रगट तूं पाप करत है, सो नहि कर्ता छांनो ।
काल केहरि शिर ऊपर गाजै, निशिदिन करत पयानो ॥३॥
तजि संसार विकार कर्म तजि, हरि सैं वाणक थानो ।
रामचरण ऐसी करणी करि, आया जी घर जानो ॥४॥

## पद—राग बिहंग

बाबा सतगुरुकी बलिहारी । मोह जाल सुलभाई आँटी,
काटी बिपति हमारी ॥टेर॥
शरणै राखि करी प्रतिपाला, दीरघ दीन दयाला ।
राम नाम सूं लगन् लगाई, भान्या भ्रम जजाला ॥१॥
काछ बाछ का कलंक मिटाया, शील साच पकडाया ।
स्वाद शृंगार न ब्यापै माया, निज निर्वैद धराया ॥२॥
रामचरण जन राम स्वरूपा, भक्ति हेत भू आया ।
किरपा करिकैं ज्ञान प्रकाश्या, श्रवण द्वार सुणाया ॥३॥

## राग—टोडी

मनरे यो संसार असारो ।
ते वधू सार जाण के पकड़यो, क्यूं भूल्यो करतारो ॥टेर॥
तन धन जोबन फल सेमल ज्यूं, सुवा सेई मनलायो ।
चाह्र पसार रु चाखण लागो, पटेम उडयो पिछतायो ॥१॥
माता पिता दारा सुत बन्धु. ये सब हरि की माया ।
इन कूं तू अपणी मति जाणै, मोहिनी रूप भुलाया ॥२॥
इनके हर्ष शोक नहीं बहिये, यह समर्थ की बाजी ।
रामचरण भज रामस्नेही, तजिये सर्व अकाजी ॥३॥

## राग–धमाल

कोई करियो रे ऋतु को विचार ।
साख निपजसी समय वार ।।टेर।।

सतजुग सत्य त्रेता तप अधार, जुग द्वापर पूजा अरु आचार ।
अधिक आव तन कष्ट लार, कलिजुग मैं केवल नाम सार ।।१।।

इक न्हावै पूजे जपि है जाप, इक जोग जिग्यतन तपि है ताप ।
कोइ न देखे हृदे जाग, ऋतु ही बिना भूला भर्म लाग ।।२।।

ऋतु बिना तरुणी गर्भ नाहि, ऋतु ही ऋतु मोती सीप माँहि ।
ऋतु बिना वहयो बीज जाय, फल लाभ नहीं वहु खेद पाय ।।३।।

वेद साध कहे वार वार, कलि राम नाम निज तत्वसार ।
रामचरण हम देख्यो जोय, ऋतु की बाहयां ऋतु लाभ होय ।।४।।

---

## राग–काफी धमाल

मोहि राम दया कर दर्श घो हीं,
दर्श घो मेरा मन की पुर्वो आस ।।टेर।।

तुम हो दयाल दया के सागर, निरधारां आधार ।
जग जीवण जगदीश गुसाईं, सब विधि जाँण न हार ।।१।।

तुम रीझो सो हम नहि साध्यो, भई है दुहागाण नारि ।
अधम उधार पतित के पावन, अपणो विडद सभार ।।२।।

मेरी विरह बुझाय गुसाईं, बरसि प्रेम जल धार ।
विरहनि कू व्याकुल नहि कीजे, कंथ तुम्हारे भार ॥५॥
तुम्हारे हमसी नारि घणेरी, तुम हो हमारे एक ।
रामचरण कू करो रावरो, बक्सीजे गुन्हा अनेक ॥६॥

## राग–धमाल

मेरे महल पधारया प्रीतमा हो, सखीरी मेरी साहिब सुनी है पुकार ।
पण कर पांव भाव करि काथी, चूनो कर्म जलाय ।
सांचसुपारीसाज करि बिडलो, मोहि सतगुरु दियो है झिलाय ॥१॥
प्रेम का दीपक जोय मन्दिर में, प्रीति का पिलंग बिछाय ।
शीलशृंगार साज पिव पकशू, अंग सू अंग लगाय ॥२॥
उर आनन्द उछाव भयो अति, लग्यो है नवेलो नेह ।
तन मन धन न्योछावर करि हूं, साहिब कू आपा देह ॥३॥
बहुत दिना से प्रीतम पाया, सरया है मनोरथ काम ।
पाव पलक ढोला नहि छोडूं, घर आया केवल राम ॥४॥
अब तो मेरा भया है भावता, दरिसा सब ही सन्त ।
शिव सनकादिक शेष रटत है, सोही मैं पाया है कन्त ॥५॥
शोशो शोक दुहाग दुस्वो सब, सुन्दरि लह्यो जी सुहाग ।
रामचरण पूरण पद पयो, पिया सग जाग्यो है भाग ॥६॥

## राग–कनड़ी

निशि वासर हरि आगे नाचूं । चरण कमल की सेवा जांचूं ।टेर॥
स्वर्गलोक का सुख नही चाहूं । जनम पाय हरिदास कहाहूं ॥१॥

च्यांरे पदार्थ मनां विसारुं। भक्ति विना दूजो नहिं धारुं ॥२॥
ऋद्धि सिद्धि लक्ष्मी काम न मेरें । सेऊँ चरण शरण रहूं तेरे ॥३॥
शिव सनकादिक नारद गावे । सो साहिब मेरे मन भावे ॥४॥
राम राय इक अर्ज हमारी । रामचरण कूं द्यो भक्ति तुम्हारी ॥५॥

---

निशि वासर भज राम स्नेही । नाम लियां निर्मल नरदेही ॥टेर॥
चौरासी तज नर तन पायो । अब भ्रम को शिर भार उठायो ॥१॥
अडसठ कहो काहे कूं फिरिये । सुरति समेटि नाम मे धरिये ॥२॥
घट घट रमता राम न सूझे । संतगुरु विन बाहरि फिर बूझे ॥३॥
निकट नीर की खबर न जाणी । मृगतृष्णा में खोजे पाणी ॥४॥
जिन पाया जिन घटही में पाया । बाहिर फिरफिर जन्म गुमाया ॥५॥
रामचरण मोहि इचरज आवें । पूरब वस्तु पिछमकू ध्यावे ॥६॥

## राग–कनड़ी

रे मन राम निरंजन जप रे ॥टेर॥
सकल शिरोमणि नाम परम निधि । ताँसो शोक न लिपरे ॥१॥
राम नाम भवसागर तारण । पाप कर्म जाइ खप रे ॥२॥
अजामील गज गणिका त्यारी । जम दूतन को रिपु रे ॥३॥
जोग जिज्ञ ताके तुलि नाही । पहुंचि सकें नहीं तप रे ॥४॥
रामचरण तजि आन उपासक । चरणी शरण रहो छिप रे ॥५॥

---

अनन्त कोटि जन सुमर सुमर के । सब सुख माहि समया रे ॥४॥
रामचरण कहू गया न आया । घट ही मैं दर्शाया रे ॥५॥

---

## धमाल राग–हिंडोल

मोद भयो करुणानिधि मिलिया, खुलिया भाग हमाँरा हो ।
गिगनमडल मे राम निरजन, मेरा निज कर्तारा हो ॥टेर॥

जासू जोग जुर्यो जन किरपा, अब नाही होय न्यारा हो ।
अविनाशी अविचल पद दीया, किया वहुत उपकारा हो ॥१॥

अपना जान आप ढिग लीया, जन का जन्म सुधारा हो ।
अक मिलाय पाय रस अणभो, मेट्या भय भ्रम सारा हो ॥२॥

निर्भय भया निरजन शरणे, अजन सव ही टारा हो ।
रामचरण जहाँ रमै निरतर, अन्तर प्रेम उजारा हो ॥३॥

---

प्रेम जग्यो परमातम परचै, आतम जोग जुराना हो ।
वेहद माहि वसन्ता खेलै, पैले आवन जाना हो ॥टेर॥

अति मन मोद वोध को केसर, धीरज होद भराना हो ।
भक्ति गुलाल जहाँ रग भीनी, जाका कहा वखाना हो ॥१॥

और सखी सब ठाढी देखे, प्यारी पीव खिलाना हो ।
भर भर भाव पौटरी ढौरे, खुशी होय सुख दाना हो ॥२॥

अपणे ढिगले ढवका मेट्या, मेट्या परम सथाना हो ।
रामचरण बर अमर अमूरति, सुरति करै तहाँ वाना हो ॥३॥

---

## राग–टोडी

मन रे मार्ग कठिन करारा ॥
जो पहुचे सो जुग जुग जीवे, पीवे अमृत धारा ॥टेर॥
आशा नदी अपूर्ण आडी, लालच लोभ किराडा ।
तृष्णा तरंग उठै बहु तेरी, कामिणी काम दराडा ॥१॥
मोह मान ममता वड तस्कर, बन मे इनका धाडा ।
आयुध लेले आडा फिरिहै, करि है बहु विधि राड़ा ॥२॥
रामचरण कह मुक्ति पथ मैं, बिकर्म हरस उजाडा ।
समता बक्तर पहरि पहूचे, कोई पहुच न सके उघाड़ा ॥३॥

---

## राग–आसा

अब मैं सतगुरु शब्द पिछाण्या ।
भागी भूल भया मन चेतन, घर ही गोविन्द जांण्या ॥टेर॥
दशू दिशा में उलट अफूटी, सुरति निरन्तर लागी ।
राम राम रटि भाव बधाया, दूजी भावट भागी ॥१॥
कोई ध्यावै पीर पैगम्बर, कोई दशूं अवतारा ।
हम तो सकल एक करि देख्या, अक्षर दोय मझारा ॥२॥

## राग आसासिंधु

राम राम प्रहलाद उचारै, होरी जर भई छाराहो ।
जै जै कार भयो हरिजन कै, राम विमुख मुख काराहो ॥।॥टेक॥

साध समागम जहा अति आनन्द, राम भजन भरपूरीहो ।
हरणाकुश होरीका सगो, पडत असुर मुख धूरीहो ॥१॥

विकल भया होरी कूं हेरै, डार शीश मैं छाराहो ।
गाम गली बाजार माँही, फिट फिट करत पुकाराहो ॥२॥

भक्ति उथाप दास को द्रोही, ये चठ दाग न खुटैहौ ।
रामचरण जुग च्यार वदीते, तोभी मार न छटे हो ॥३॥

राम राम प्रहलाद पुकारै असुरनकू नहि भावै हो ।
हरणाकुशकी हाक न मानै, प्रेम मगन गुण गावे हो ॥

राजा सहित सभा सबही मिल, निशि वासर समझावे हो ।
राम रसायण का मतवाला, कूवर के दाय न आवै हो ॥१॥

साडा मर्गा करत वीनती, राम नाम छाडि वाला हो ।
मेरो कहयो सत्य करि मानो, कोप कियो भूपालो हो ॥२॥

को तुमही भूपाला वचन है, वद करो बकवादू हो ।
रामस्नेही जीवन मेरा, इष्ट हमारो आदू हो ॥३॥

काढि खडग हिरणाकुश कोप्यो, इष्ट कहां अब तेरो हो ।
मोमै तो मैं खड्ग खम्भे, सकल वियापी नेरो हो ॥४॥

रामचरण नरहरि होइ प्रगटे, जनको कारज सारयो हो ।
राम विमुख भक्तन को द्रोही, राक्षस मार विडारयो हो ॥५॥

---

रुठा राम रिझाय मनाऊ, निशि वासर गुण गाऊ हो ।
नटवा ज्यू नाटक करि ओहूं सिधु राग सूणाऊ हो ॥टेक॥
शील सतोष दया आभूषण, खम्या भाव ववाऊहो ।
सुरति निरिन साँई मै राखू, आन दिशा नहि जाऊ हो ॥१॥
गर्व गुमान पावसू पेलू, आपों मांन उडाऊ हो ।
साहिव को सखियन सू कवहूं, राग द्वेप नहि लाऊ हो ॥२॥
पाँचू पकड पचीसू चुरु, तिरगुण कूँ विसराऊ हो ।
चोथो दाव चेतके खेलु, मोज मुक्ति की पाऊ हो ॥३॥
इस विधि करिके राम रिझाऊ, प्रेम प्रीति उपजाऊ हो ।
अनत जन्म को अतर भागो, रामचरण हरि भाऊ हो ॥४॥

---

## राग–जैजैवंती

आज को आनद मेरै, अगही न माय है ।
उमग उमग मेरो. हिर्दा सिरायहै ॥टेक॥
आश को विनाश भयो, कामना कलेश गयो,
विपता बिखेप लेप, ममता विलाय है ॥१॥
समता सतोप धन, पायो है तृपति मन ।
अचल अभग भयो, कभू न चलाय है ॥२॥
फकत फकीरी पाई असल उजीरी आई ।

आज मेरे जै जै कार: जैजैवती गाय है।
पचसखी मिल आय, हर्ष बधाय है ॥टेक।
पिया को समाज भयो, भूम भूत आज गयो।
मनहो मृदंग लीधा, अनंद बधाय है ॥१॥
प्रीति के कपाट खुले, प्रेम के प्रवाह चले।
रोम रोम रस भरे, अछक छकाय है ॥२॥
सुन्दरि सुहाग पायो, सेभ को अर्थ आयो।
एकही इकत भायो, दूजो न सुहाय है ॥३॥
श्यामचरण राम गायो, नेमसे निटक ध्यायो।
सतगुरु सैन बैन' अभै घर पाग है ॥४॥

---

## राग—कनड़ी

र तू क्यूं आप भुलानो,
त अरज गर्भ माहीं कीन्ही, प्रभुजी मेरी मानो ॥टेर॥
ल बोल सब ही तू बिसर्यो, जाग न भयो सयानो।
ुजी भूल पर्यो जीव परबस, जम के हाथ बिकानो ॥१॥
सारी तू केलि करानो, माया मोह लिपटानो।
देह पाय पशु क्रम कीन्हो, राम सगो बिसरानो ॥२॥
प्रगट तू पाप करत है, सो नहि कर्तो छानो।
न केहरि शिर ऊपर गाजे, निशि दिन करत पयानो ॥३॥
संसार विकार कर्म तजि हरि से बाँणक बानो।
चरण ऐसी करणी करो, आवा जो घरा जानो ॥४॥

---

## अथ राग वसंत

मेरे सतगुरु वकस्या रामनाम, मोहि खारा लागै सकलै कांम ।।टेक।।
जगत जालका काट फंद, मेरा दूर किया सब दुख द्वंद ।
मै निशि दिन सुमरु अष्ट जाम, मेरैं मुख हिरदै रहे राम राम ।।१।।
मैं जन्म मरण कों लह्यो न पार, मेरी जन्म सुफल भयो अबकी वार ।
मैं सतसग पाया अगम भेव, देखी राम शब्द मैं सकल सेव ।।२।।
सब घट व्यापक राम राय, सुखिम थुल भइया एक भाय ।
काकू भजु तजू कुण हीन, मेरी सुरति शब्द मैं भई है लीन ।।३।।
जप तप करणी करो कोय, इक राम बिना नहि मुक्ति होय ।
रामचरण हम कही न राखि, जाकी अनत कोटि जन भरत साखि ।।४।।

---

मरे मनेत्र कियो गुरु शब्द वास, मोहि फीकों लागै जग विलास ।।टेर।।
जैसै वस वास कियो अरदवान ह, जहा दशू दिशा है जल संथांन ।।
निजर न आव आन धाम, तव समझ समझि रहे एक ठाम ।।१।।
जैसैं नीर मीन मिली कियो है सग, जब बिछुरै तब प्राण भग ।
यू सुरति शब्द मै वसी है जाय, अब ओत पोत भइ एक भाय ।।२।।
अब कोण करै दूजी उपाय, मेरी सुरति बसी निज नगर जाय ।
रामचरण जहा नित आनन्द, अब पर्शें पूरण परमानद ।।३।।

---

कपिल देव अरु बालमीक, जहा ध्यान धरै शुक अम्बरीष ॥२॥

जेहा रामानंद नीमानंद नामि, तहां माधवाचार्ज विष्णुश्याम ।
और शिखा लिया संग साथ, इन च्यारन पकरयो सबको हाथ ॥३॥

जहां गोरख भरथरि गोपीचद, तहां नानक फरिदा अरु बाजिंद ।
महमद दादू करि निवास, जहां सहित एकादश हरीदास ॥४॥

अल्प अकल गिणती न आय, या पदकी महिमा कही न जाय ।
अगम पुरी भरपूरी बास, जहां घर घर आनंद सुखबिलास ॥५॥

जहां सब संतन को पाय शीत, चरणां जल रजसूं गेयो है भीत ।
मैं सनदास कौ पनई दास, राखौरामचरण कूं चरणा पास ॥६॥

---

## अथ राग मंगल

सतगुरु होय दयाल दया मोहि कीजिये ।
जीव पलट होई हंसे सोही बुधि दीजिये ॥टेक॥

मै पडयो माया जाल काल पीछै लग्यो ।
भवसागर वेहाल फिरत भागो भग्यो ॥१॥

काम क्रोध मद लोभ मोह ममता तजो ।
परिहरे विषै विकार राम रमता भजो ॥२॥

राग दोष अहंकारिक दुवध्या त्यागिये ।
साच शील संतोष दया दिशि जागिये ॥३॥

आशा तृष्णा जीत वासना जालिये ।
ये सतगुरुजी की शीख हंस वृति पालिये ॥४॥

राम राम सुख गाय सुरति नहचल करो ।
रामचरण होइ हस जीव बुधि परिहरो ॥६॥

---

सतगुरु दया विचार कि मोहि जगाईया ।
भरम अधारा मेट कि पंथ बताईया ॥टेर॥

सतगुरु शब्द विचार समज हिरदै धरया ।
मोक्ष मारिग किया गमन कर्म पंथ परिहरया ॥१॥

रसना रामहि राम रेण दिन गाईया ।
बिसरया बस विहार हंस पद पाईया ॥२॥

बंकनाल के घाट अमी रस आदरा ।
उडि बैठा आकाश जहां सुख सागरा ॥३॥

मुक्त अबोधा खाय बीध नहि आदरे ।
रामचरण सुख सिन्धु हंस कैला करै ॥४॥

---

## राग–जैतश्री

थो जग स्वारथी, बिन स्वारथ कोइ नांहि ॥टेर॥

ठिग मुस कै पर धन घर ल्यावै सब घरका गिल खावै ।
जब कर गोडा कॉपण लागा, तब ढीलो छिटकावै ॥१॥

मरती विरियां भय उपजावै, मडो मडो सब भाखै ।
बेगा बगी बाहिर काढै, घडरे पलक नहि राखै ॥२॥

च्यार पोट धांणा दे साथै, बस्ती बाहर काढै ।
पूत कुटुम्बो गांवा गोती, कोई प्रीति न बाढै ॥३॥

रामचरण ससार कीरे, झूठी सकल सगाई ।
आदि अत मधि राम सगो है, ताहि समझ भज भाई ।।६।।

---

सगो इक राम है, हम देख्या सोच विचार ।।टेक।।
सैमल ज्यू पूता फलयो रे ,जहा भयो सुख बासी ।
ई झूठी डमरी डहकायो, काम पडया पछितासी ।।१।।
केसू ज्यूँ फल्यो फिररै, मैमैरी भरमायो ।
हूबड हूबड भयो जगतमे, हरि हिरदै विसरायो ।।२।।
सुख स्वारथ सवको सगारे, दुख मैं निकट न आवै ।
दुख परिहारो राम स्नेही, ताकूं कॉहि न गावै ।।३।।
लख चौरासी घट घरयारै, जहा कछु न आई ।
ई अवसर नर को तन पायो, ताहि सुफल फरि भाई ।।४।।
माता पिना कुल सुत वित नारी, येह्वसव जम की पासी ।
रामचरण इन को सगतजिये, भज भूवर अविनासी ।।५।।

---

## स्वामीजी श्री रामचरणजी महारा को आरती

आरती रमता राम तुम्हारी, तुमसे लागी सूरत हमारी ।।टेर।।
रमता राम सकल भरपूरा, सूक्षम स्थूल तुम्हारा नूरा ।।१।।
आरती सुमिरण सेवा कीजे, सव निर्दोष ज्ञान गह लीजे ।।२।।
येही आरती येही पूजा, राम विना दर्श नही दूजा ।।३।।
शिव सनकादिक शेष पुकारे, यह आरति भवसागर तारे ।।४।।
रामचरण ऐसी आरती ताके, अष्ट सिद्धि नवसिद्धि चेरी जाके ।।५।।

---

## स्वामीजी श्री रामचरणजी महाराज की द्वितीय आरती

आरती अलख अमर अविनाशी, पूरनब्रह्म सकल सुख राशी ।।टेर।।
रमताराम सूरत के स्वामी, अलह अमूरत अन्तर्यामी ।।१।।
सूरत मूरत आदि न अन्ता, सबसे निर्वृत सब बरतन्ता ।।२।।
चौदह तीन लोक पति साई. सप्त दीप नवखण्ड दुहाई ।।३।।
वार पार कहूं थाह न आवे, सुमर सुमर जन माहि समाये ।।४।।
ऐसा साहिब खामिन्द मेरा, रामचरण चरणो का चेरा ।।५।।

---

## स्वामीजी श्री रामचरणजी महाराज रचित तृतीय आरती

आरती अचल पुरुष अविनाशी, घट घट व्यापक सकल प्रकाशी ।।टेर।।
प्रथम आरती मन्दिर बुहार्या, राम राम रट कर्म निवार्या ।।१।।
दूसरी आरती दीपक जोया, हृदय प्रेम चान्दना होया ।।२।।
तीसरी आरती कुम्भ भराया, नाभि कमल से गगन सिधाया ।।३।।
चौथी आरती चौक बिराजे, जहाँ अनहद का बाजा बाजे ।।४।।
पाचवी आरती पूरणकामा, सुरति परसिया केवल रामा ।।५।।
सेवक स्वामी भया समाना, रामहि राम और नही आना ।।६।।

होय सुखारी थारी शरणा, करुणाकर मेटो मम मरणा ॥२॥
किरति रसना राम उचारु, एक पतिव्रत उर मे धारु ॥३॥
अनन्त लोक ब्रह्माण्ड अनन्त, तुमरो वार पार नही अन्ता ॥४॥
ऐसे स्वामी राम हमारे, राम जन्म को पार उतारे ॥५॥

---

## स्वामीजी श्री दुल्हेरामजी महाराज की आरती

आरती राम चिदानन्द तेरी, सचराचर मे व्यापक रहेरी ॥टेरी॥
रूप न रेख वरण से न्यारा, ऐसा स्वामी राम हमारा ॥१॥
पूरब रसना रटण लगाई, भरम करम सब गया विलाई ॥२॥
द्वितीय प्रेम उर उदय कराई, पी अमृत मन मगन रहाई ॥३॥
गया द्वन्द्व निर्द्वन्द्व घर पाया, अगम चिन्ह गति शब्द लिखाया ॥४॥
भया आनन्द गुरु गम से भाई, दुल्हेराम यह आरतो गाई ॥५॥

---

## स्वामीजी श्री चत्रदासजी महाराज की आरती

ऐसी आरती करो मन भाई, गोविन्द मे सब बस जाई ॥टेर॥
गुरु मूरत सुरत पहिचानी, यह आरती निर्दोष करानी ॥१॥
रमता राम अमूरत स्वामी, सब घट व्यायक अन्तर्यामी ॥२॥
नाम रूप यह आरती कीजे, चत्रदास भव सकट छीजे ॥३॥

---

## स्वामीजी श्री नारायणदासजी म. की आरती

आरती कीजे अन्तर माही, वाभ्म भर्म सब दूर विसाहि ॥टेर॥
किस विध आरती कीजे जाकी, मूरति दृष्टि पड़ै नही ताकी ॥१॥

मन मन्दिर मे सुन्दर ज्योती, शब्द अनाहद जहाँ ध्वनी होती ॥२॥
जाके अग न सग न रगा, सब घट पूरण एक अभगा ॥३॥
नारायणदास यह आरती गावे, गुरु ब्रह्मन एक लखावे ॥४॥

---

## स्वाभीजी श्री हरिदासजी म. की आरती

आरती राम गुरु जन केरी तन, मन, धन सब वारु फेरी ॥टेर॥
देही देवल माही अमूरत, ताकी सेव करे नित सूरत ॥१॥
आरती सूंज [विनाऊ नीकी, वस्तु अनुपम घर हूं नजाकी ॥२॥
द्वीप द्वीप सातो प्रकाशा, जाके अन्दर माहि उजासा ॥३॥
झालर घझट कण्ठ मध्य बाजे, शब्द अनाहद अद्‌भुत गाजे ॥४॥
शक निशक होय गुण गावे, लोक लाज सब ही विसरावे ॥५॥
यह आरती हरिदास उचारे, सदा शरण मे रहू तुम्हारे ॥६॥

---

## स्वामीजी श्री हिम्मतराम महाराजजी की आरती

आरती कीजे राम निरजन । ज्ञान नीर करिये मन मन्जन ॥टेर॥
कर विचार दीपक उर अन्दर । मिटे तिमिर दर्शं सुख सुन्दर ॥१॥
चित चन्दन चेतन चचावे । घंटा अनहद शब्द बजावे ॥२॥

## स्वामीजी श्री दिलशुद्धरामजी महाराज की आरती

आरती राम गुरु की करना । सुरत निरत निज पद मे धरना ।।टेर।।
आरती रसन राम मुख गावो । काम क्रोध सब दूर हटावो ।।१।।
रसन रटत रस अमृत पाया । नाभि कमल में शब्द समाया ।।२।।
उलट जाय त्रिवेणी नहाया । चौथे धाम परम पद पाया ।।३।।
अरस परस मिल सेवक स्वामी । निज सुख माहि पडे नही खामी ।।४।।
दिलशुद्धराम ये आरती करि है । जन्म मरण तन फेर न धरि है ।।५।।

---

## स्वामीजी श्री धर्मदासजी महाराज की आरती

आरती अलख पुरुष की कीजे । तन मन लाय चरण चित दीजे ।।टेर।।
अलख होय सो दृष्टि न आवे । विन देखां कैसे मन लावे ।।१।।
सत् गुरु शरण जीव जब आवे । ज्ञान पाय अज्ञान मिटावे ।।२।।
आतम ज्ञान उदय होई आई । पावे अलख पुरुष घट माही। ।३।।
अलख नाम सोहि राम कहावे । शिवसनकादिक ताकूं ध्यावे ।।४।।
ऐसे राम की आरत्ती करि है । धर्मदास भव बन्धन टरि हैं ।।५।।

---

## स्वामीजी श्री दयारामजी महाराज की आरती

आरती रामनिरंजन थारी । किया होय जग जीव सुख्यारी ।।टेर।।
प्रथम जीव गुरु शरणे आवे । राम निरन्जन रसना गावे ।।१।।
गुरु उपदेश राम परतापा । मिटे सकल भय भय सन्तापा ।।२।।
तवै जीव सुखिया होय जावै । जन्म मरण सब रोग विलावे ।।३।।
आरती राम गुरु की करिये । दयाराम तन फेर न धरि है ।।४।।

---

## स्वामीजी श्री जगरामदासजी महाराज की आरती

आरती अलख निरंजन तेरी, तुम चरणों में लज्जा मेरी ।।टेर।।
बहु अपराध पार नहो स्वामी । सो सब जानों अन्तर्यामी ।।१।।
जम अनेक गर्भ मे आयो । कृपा कर मोहि शरण लगायो ।।२।।
विरद रावरो कहा लग वरणो । शिवसनकादिक करिहे निरणो ।।३।।
जगरामदास यह आरति गावे । तुमरे चरण कमल चित लावे ।।४।।

---

## स्वामजी श्री निर्भयरामजी महाराज की आरती

आरित अलख पुरुप अविनाशी, सेवत ताहि सकल दु.ख जासी ।।टेर।।
प्रथम रसन रट अमृत पीजे । तज अवगुण गुण को गह लीजे ।।१।।
शील दया समता उर धारो । गुरु की आज्ञा कब हुन टारे ।।२।।
रहे अचाहो वृति निराशा । गहे सर्वज्ञ राम विश्वासा ।।३।।
इस विधि आरति जो कोई करिहे । निर्भयराम तन फेर न धरि है ।।४।।

---

## स्वामीजी श्री दर्शनरामजी महाराज की आरती

आरती रामगुरु की कीजे । जनम मरण भव बन्धन छीजे ।।टेर।।
राम राम रट

## संतकबीरदासजी की आरती

ऐसी आरती करोमन ज्ञानी । पलक न विसरु सारग पाणी ।।टेर।।
पाच पच्चीसका करो बिचारा । जामे आतम राम पियारा ।।१।।
प्रेमको तेल सुरतकी वाती । ब्रह्मकीज योति अखण्ड दिन राती ।।२।।
गुरु गोविन्दजी की आरतो करहूं । कहे कबीर भव सागर तिरहू ।।३।।

---

## संत नामदेवजी की आरती

आरति जग पति देव मुरारी । चवर ढले जाउ तिहारी ।।टेर।।
चहूदिस आरति चहूं दिस पूजा । चहू दिस राम और नही दूजा ।।१।।
आरति कीजे अैसे जैसे । ध्रुव प्रहलाद करी शुक जैसे ।।२।।
आरति कीजे प्रीत लगाई । जन्म का प्राश्चित जाई ।।३।।
आनन्द आरति आतम पूजा । नामदेव भणे मेरे देव दूजा ।।४।।

---

## श्री योगी शुकदेवजी की आरती

अटल आरती हरि अविनाशी । आन धर्म सब ही रूप जासी ।।टेर।।
देवी देवल भरम पसारा । राम विना नाही निस तारा ।।१।।
जप तप जोग नेम आचारा । ये कली बार नाम ततसारा ।।२।।
आदि अतमधि आरती जाकी । ब्रहमा विष्णु महादेव साक्षी ।।३।।
परा परे परम गुरु सेवा । राम रटो यु कहै शुकदेवा ।।४।।

---

## गुरु स्तुती

॥ बेताल छन्द ॥

आप हो गुरु देव दिन पति अगम ज्ञान प्रकाश है।
उर नयन के तुम देव, वायक अज्ञता तिम नाश है॥
यथा निज पद पाइयो हम आप किरपा पूर है।
नर्मो जो रिछपाल सतगुरु काल कटक दूर है॥
सग सतगुरु देवजी की महा भागी पाय है।
भरम करम अरु शरम ससय शोक सारो जाय है॥
शुद्ध आतम अमल पेखे पाय नहचो नाम को।
अहकृत अज्ञान भागो रंग लागो राम को॥
गुरु नित गुणाकार प्रकट दीन के दयाल ही।
रामचरण चितचरण लियो कियो मोय निहाल ही॥१॥

---

स्वामीरामकिशोरजी तो भक्ति के अवतार है,
दीन बन्धु कृपा सिन्धु ज्ञान के भण्डार है।
मधुर वाणी आपकी है, गग जैसी धार है।
स्वामी रामकिशोरजी महाराज का सर्वत्रजयजय कार है॥

---

रामरसायन इम्रतप्याला बात, सटनहों आवेरे ।
सतगुरु दया विचार तोनकी सहजे श्राय पिलावेरे ॥१॥
पीवेसोही जुगे जुगे जीवे जनम मरण मिटालेरे ।
अहकार ववण सवछूटे निज मद माहि समावेरे ॥२॥
पारस के तुल श्रोरनकोई वेद व्रह्मादि वतावेरे ।
साधन अर आरा धन केता करि करि जगथपि जोवेरे ॥३॥
परे पेप अर उपजे विनसे तासू चित न लावेरे ।
रामजन एरुया लायी वे राम निरजन गावेरे ॥४॥

---

सोवे काहा जागी मन मेरा तेरा औसर आया रे ॥
सूता सूता सदिन बीता कालि महारिपु खायारे ॥टेर॥
जातनकू व्रह्मादिक वडे सोतन तजो पायारे ।
या कू ठोडि ठिकाणे लियोरी वोहोदिन ढवका खायारे ॥१॥
चौरासी तन धरिया रे हाट हाट विका यारे ।
मोही मतवाले नाहि हेती दियो सुति जायारे ॥३॥
जव जमकि कर मापकडि देऊ डे नरक पठायारे
जहा न तेरे सगोन साथी जाती लोग विलायारे ॥४॥
ऐ दु ख देख एक हरि भजीरे' सावधान होय भायारे ।
सावधान होय सुनि गुरु वायक लायक हे नर कायारे ॥५॥
राम राम रसना सू सुमरो ऐ गुरु भेद वतायारे ॥६॥
राम जम, जागति जन धन है वाधन नाहि मुसाया रे ।
सूता जागत विगूता सारा सुपना मे उर भाया रे ॥७॥

---

राम राम रटि जगति इतराना मारना सिर पर आया रे ।
करम भार क्यूं वाध प्राणी सग वले नहि कायवे ।.टेक।।
पलक माहि कर कूच चलेगो धूरी रहेगी मायावे ।
अन्तकाल कोई सग साथी क्या हाथी व्दार वधायावै ।।१।।
दासी दूत दमामा हैवर तेरा नहि सुजाया वै ।
इथ सु खयाल करहा अरकर सल झूठे मे उर झाया वै ।।२।।
लख जाना मुलक मोही बति ऐ गति जक्त भुलाया वै ।
ग्भमवास की त्रास कारी वैदिन चित्र न आयावै ।।३।।
मैलमालीया सेझ सवारी नारी नेह पाया वै ।
ए सब छाडी मसाणा वासा करि के उडायावै ।।४।।
ए ससार सुपनसम देखी ऐको पलन रहायावे ।।५।।
रामजनु भ ज रामनिरजण सतगुरु जो समझायावै ।।६।।

---

## राग–विहंग

तजपरि पच हरिजन जागे, राम राम अव रटवा लागे ।।टेर।।
जिनके भाव भगति मे पूरा, निरखे एक निरंजन नूरा ।।
सदा सुचेक्त हेतु सुखदाई, बाकी कहिये कहा बड़ाय ।।२।।
भूलन परे भरम के माही, तृष्णा जीत तरग कहू नाहि ।।३।।
रामर्जुन ऐसे हरिदासा, पाय रहे वे परम निवासा ।।४।।

---

करम कटाया आन मिटाया, कीया नैन उजियाराजी ।
दरशण करिये धनवा धरिये, कारज सरिये साराजी ।
पर उपकारी दे उपदेशा, आप रहे जग न्याराजी ।
शरणा तुम्हारी अन्तर जाणी, सतगुरु ज्ञान भण्डाराजी ।
राम जन्म जस हरखर गावे, तुम गुण भोजल पाराजी ।

---

ानम सुधारो नर अरु नारी, रामचरण पद पारियेजी ।
ोर ठोर बहो तेरा फिरीऐ, कही न कारज सरीऐजी ॥टेर॥
मे वनीया युग जुगमे ऐसी केसी, वरणी उचरीयेजी ।
रम पोत भवसागर उपर, वैठ माही भोतिरीयेजी ॥१॥
ापन चाहे ज्ञांन द्रिढावे, पर कारज उचरीऐजी ।
ाया विघन माहि नही आवे, सतगुरु शब्द उचरीऐजी ॥२॥
ामजन तुम चरणा चेरो, मेरो जनम सुधरीऐजी ।
ामचरण सतगुरु शिर उपर, जमखू नाही डरीऐजी ॥३॥

---

न रे उत्तम ज्ञान बिचारो ।
निरसे होइके सुख बिल, सो रसना राम उचारो ॥
ा फेलाब सिमट के रहिये, फेल परया दुख भारो ।
उलझ भुलज पहयो मनोरत, रह न तेरो सारो ॥
वू विषया परतर भाई, आस त्रिपना जारो ।
ज्यू उलझीये जिव के केरो, सहजे हीय उजारो ॥
टया से आप निरजन, अजन सू चितरायो ।
भजन मन ही की रचना, मन सुन्दर निवारो ॥

---

मन रे नि वैरागी होना ।
राजा रंक एक करि जाने, ज्यूं ककर ज्यूं सोनो ॥टेर॥

तब पुर वास उदासी बिचरां, मत कोइ वाधो भवना ।
गिर तरु मण्डी मसांणा, रहिये केकोई देवल सूना ॥१॥

शीत निवारण जीरण केथा, जाके थेगल जूना ।
भूख लगे जब भिक्षा करीहै, कर कर लेना दूना ॥२॥

आशा तृष्णा मेल निवारो, हरी भज हिरदा घोना ।
तव दिल पाक दया निधि, पावे गावे वड वड मोना ॥३॥

तन मन जित प्रित सतगुरु सु, घर है ध्यान अकोना ।
राम जन्म जन कहै वैरागी, रामचरण का छौना ॥४॥

---

## श्री दुल्हैरामजी महाराज का भजन
### पदराग चरचरी

राम राम कहो राम राम कहो बिरारे ।
ढील करो मत पाव पलक की अवध जाय सर तीरारे ॥टेर॥

महा कठिन दुल्लभ नर देही ब्रहमा लहेन धीरारे ।
योती दाव बणयो हे तोकू भजन को मन हीरा रे ॥१॥

सनक सनदन शिवजी सुखसे षेश लहे सुख सीरा रे ।
ओर सत बोहो तेरा समरे ... भये थीरारे २

## पद राग बड़वा

सतगुरु वलीहारी वलीहारी ।
वार वार मैं वारी सतगुरु वलीहारो वलिहारी ।।टेर।।
गदा सेती वदा कीया गरदगो दूर निवारी ।
कामदाम की कालफा छूटी लख चौरासी भारी ।।१।।
एक निजरम ऊपर कीन्ही तांकी मैं वलिहारी ।
मेरीनिजर दुखी सब आवे भजन बिना नरनारी ।।२।।
नीचो मन अति होतो मेरो ऊची कृपा तुम्हारी ।
मनों कामना क्षीण भई रसनां राम उचारे ।।३।।
भयो भीखारी राम तुमारा शीलदया उखारी ।
आनद देवकू कबहूंन सुमरु अज्ञायण जरी ।।४।।
हीय आसीक महबूब मिलेगे लगी लगन जो थारी ।
दुल्हैराम गुरु गम जिन परख्या अपनो बिडद सम्हारी ।।५।।

---

## अथस्वामी जी श्री चत्रदासजी महाराज का भजन

### राग ललित

मन रामचरण चरण ध्याय आनदपद केरी ।
जनम मरण जाल कटे सुफल जनम तेरी ।।टेर।।
बडे बडे देवमुनी चाहत सुख सेरो ।
बेद अगम पुराण कहे भव बारिध भेरी ।।१।।
जन्म मरण पाप करमा वध्यो शिर ढेरी ।
रामचरण सरण गहया करम को निवेरी ।।२।।

बार वार मिले नाहि रतन जनम नेरो ।
सतगुरु अरसत कहे माँन वचन मेरो ॥३॥
मअत अमत पार नही चतुरासो फेरो ।
अव के योडाव मिल्योमोक्ष मारग हेरो ॥४॥
हस जनम पाय मुढ काम करम गेरो ।
चत्रदास रामचरण रेणदिवस टेरो ॥५॥

---

सतजन आए आज मेरे मिझमाना हरिके मिलाप ।
काज आगम आगम एहजांना ॥टेर॥
उनही को रुप पनिरख अतर हलराणा ।
मुगैने मिष्ठानखा यो मनही मुस्कांना ॥१॥
आनद की वात एह कह वेमेन आना ।
वेद अरु सत जन सवहि मायल्ल जाना ॥२॥
इनकी सुख सोभ देख वार फेर जाना ।
चत्रदास, मुक्ति रुप सत ऐं वखाना ॥३॥

---

## श्री नारायणदासजी महाराज का भजन

### पद राग बिहंग

जनम अनेक महा दुख भारी । परुची चरणा में आई ।
अब का औगुण माफ करो गुरु राखो सदासरणाई ॥२॥
औगुण खान महामद भागा । लोभ घटा शिर छाई ।
नीचहि नीच कीया सब कारज । नाकछु बणी भलाई । ३ ॥
चरण शरणऐ दास नारायण । गुरु शरणे बणी भलाई ।
जनम जनम मे यही रामचरण मुनिराई ॥४॥

---

## अथ स्वामीजी श्री हरिदासजी म० का भजन

### पद राग कनड़ो

विनती सुणों दिलदार हमारी. शरणागही सुखकार तुम्हारी ॥टेर॥
बह्यो जात भवसागर माही, अबके नाथ समावो वायो ॥१॥
मेरे अवगुण दृष्टि न दीजे, विरद तुमारो हे सोहि कीजे ॥२॥
दीन अवीन [अर्ज पण भाखू नाहिन ओर भोरोसो राखू ॥३॥
मैं पापी अप थापी देवा, तुमकू छोड नमवत उर भैवा ॥४॥
कह हरिदास खम मे तेरा, जनम मरण को मेटो फेरा ॥५॥

---

## अथ स्वामीजी श्रीहिम्मतरामजी म० का भजन

### पद राग विहंग

भजन बिना नर लूका मन रे ।
फिरत रादा फेरत ज्यूं वन में करतं रेण दिन कूका ॥टेर॥
बराईस आदेसन सुमरयो पंथ परातम चूका ।
मसक इसकी मगत पर हर जाय कुमगन ढूका ॥१॥

शुद्ध स्वरूप आतम पद परसे लागा भरमबि झूका।
पार जात तन पायां पुरससूं भया भाव विन भूका ॥२॥
मोहमान माया मद मातो वचन बिसार गुर का।
गुरु विन ज्ञान भिधों नही हिरदे ज्यू पाषाण महीका ॥२॥
जढता त्याग आघसम जव लग तज कर कनक विंदू का।
हिम्मतराम एक राम सुमरिये तिरे भुवन सिर टीका ४॥

---

# अथ स्वामीजी श्री दिलसुखरामजी म० का भजन

## पद राग चरचरी

अव के जनम सुधारो रामजी अवके पार उतारो।
बार बार मैं करू बीनती कदि न भूलूं उपगारो ॥टेर॥
पती जाणो तो मेरे कुंण हे औगुण को भारो।
दास जाणो तो दया करो स्वामी ने फन जर भर न्हारो ॥१॥
पापरि पोट मेरे शिर उपर ताकूं वेग निवारो।
फूंक फूक पग धरु धरणी पर ताके लगावो मति करो ॥२॥
मैं सुकृत कछु एकन कीन्हो ओगण अनन्त अपारो।
मेरा ओगुण हष्टि न दीजे अपनो बिड़द बिचारो ॥३॥
गुण अवगुंण देखो मति मेरा तेरं नाव विकाउ।

### राग केदारो

सुमरसि रजण हार मनतू सुमर सिर जाण हार ।
मिनखा देहीयां इकेरेक्यू भूल्यो करतार ।।टेर।।
हरिजन हीरा देत हेरे लेत नही अज्ञान ।
सम्रथ राम बिसार केरे राच्चो भोग अयांन ।।१।।
लख चौरासी जूण मेरैं धरसी जनम अनेक ।
अब तो राम पिछाण मेरे राखि हिरदे टेक ।।२।।
मैं मेरी मे लाग करे पाप कू-मायो अपार ।
दिलसुख तो कहत हेरे बूडो गेभव धार ।।३।।

---

## स्वामीजी श्री धर्मदासजी महाराज का भजन

### 'राग बिहंग

सतगुरु शब्द विवेकी । ग्यान पाय अग्यान मिटाया मनो
वासनाछेकी ।।टेर।।
इस दरीया मे वृक्ष मेरा खड़ा है जाके पातन पेडी ।
इसबृक्षन के धुपन छाया छाया रह्यो चोफेरी ।।१।।
इस दरियाव मे बाजा वजत है वाजत साझ सवेरी ।
ताल मृदग पितावल बाजे वाजे मुरली भेरी ।।२।।
उलटा वाण गिगन से लागा जहा निरजण राया ।
यासू अमल दूसरो न कोई जासूं जित लगाया ।।३।।
सतगुरु शब्द बिवेकी मेरा जाने शब्दा हेरी ।
धर्मदास सतगुरु के सरणं निगूंणमाला फेरी ।।४।।

---

# स्वामीजी श्री दयारामजी महाराज का भजन

## राग बिहंग

गुरु किरपा से पाये रामजी ।
गुरु विन कोई सिद्धि नही है वेद पुराण बतावे ॥टेर॥
गुरु को भ्यास सव ने को कहिये कहु दाद नहो पावें ।
जनक राय की क्रिपा भई जब तुरत वैकूठसि धावे ॥१॥
नारद पुत्र ब्रहमा का कहीये गुरु विन छोत जणावे ।
गुरु क्रिपा जब भई नारद पर हरिहस कठ लगावे ॥२॥
गुरु वदन अवतार करत है देव सकल सिर नावे ।
गुरु सिर लिया अगमसुख विलसे नूगारा दो जिग जावे ॥३॥
रामचरण गुरु मोसिर राजे जो सरेण सुख पावे ।
दयाराम कह तीन लोक मे गूरु महिमा सब गावे ॥४॥

---

## राग बिहावल

दीन निवाजण रामजी। शरणे सुख दीज्यो ॥
दया बिचारो दीनकी मेरी सुधि लीज्यो ॥टेर॥
अरजी सुणी गज राज की प्यादो होय ध्यायो ।
देरकरी नहिंदास की अरजी सुणि आयो ॥१॥
अजामल कू त्यारिके वाकी पतराखी ।
अगनि जलत प्रहलाद की प्रतग्याराखी ॥२॥

## स्वामीजी श्री जगरामदासजी म० का भजन

### राग चरचरी

अज श्रो चेते क्यून नचीता मन रे ।
लोभ मोह मे सवदिन वीता रामनामनही घीतारे ॥टेर॥
ईतनू कू देवादिक वछे कहत भागवत गीता ।
सो तन पाय वालपण माही खेल वीच दिनवीता ॥१॥
तरुणाई मे तन सुघ नाही अति सयछ क्यो अनीता ।
चार दिना की चमक अगाधी होसी घणा फजीता ॥२॥
वृघायण चिंता मे खोयो रहयो विन भजन रीता ।
सव धन कुटव त्याग कर चाल्यो लदीया पापस लाता ॥३॥
आन जार नहिं पार लगावे भठकत दिवस वदीता ।
करि सुक्रत यू समेत है अवसर जाय वछीता ॥४॥
पाचू पच हला हलमाही हरि रस क्यो नही पीता ।
सर्व भरोसो त्याग हरि सुमरी जके जमारो जीता ॥५॥
गुरु रामचरण चरणाविन्द को धारोहिरदे पर तीता ।
कहे जगराम दास हरि सुमरो करो सुक्रत का लीता ॥६॥

---

## स्वामीजी श्री निर्भयरामजी महराज का भजन

### राग बिहरंग

राम रसायन भावे मोमन ।
और रसायन दाय न [आवै भ्रम टल जावेरे ॥टेर॥

राम रसायन का जो स्वादी जाकू यो रस भावै रे ।
दूजा कू कोई गमन पडत है भूल्या भटका खावे रे ।।१।।
या रस का स्वामी है शकर शेष निरतर ध्यावे रे ।
संनकादीक मुनि नारद शारद ध्रुवजी ध्यान लगावेरे ।।२।।
नाम कबीर और प्रहलाद क्या रस कू जाणे रे
संतदास अरु क्रियारामजी सोभी मो जा माणे रे ।।३।।
या रस कू जै जै नर धारया ते फेर नग् भमे आवे रे ।
रामचरणमहारा या रस को भेज आप वला रे ।।४।।
याके चरण शरण मे रहकर सब हि दुख मिट जावेरे ।
निर्भंयराम कहे जो सुमरे सो भवपार लावे रे ।।५।।



## पद राग चरचरी

गुरुरामचरण जी की महीमा भरी कहो पार कुणपावेरे ।
शेष सहत्र दोय रसना सेती तोभी पारन आवेरे ।।टेर।।
सतगुरु मेरा परम दयाला भक्ति राहा बतावेरे ।
ज्ञान भक्ति बैराज्ञ द्राढोव संत सतोष लखावेरे ।।१।।
वेद वेदान्त सिध्यान्त बतावै गुरु महिमा स बगावेरे ।
नेति नेति वेभीजो कहत है ब्रह्मा पार न पावैरे ।।२।।

# स्वामीजी श्री रामचरणजी महाराज की लावणी

प्रगटे रामचरण भारी, जान कलियुग मे अवतारी ।।टेर।।

देश ढुंढाड जिके मांही, शहर निज सोडो है भाई।
अवतरे जहां आप आई, गोत बीजावर्गो मांही ।।
सतरासे आरु छियतरो, माघहा शुद विचार ।
चवदश वार शनिसर के दिन, लिया आप अवतार ।।
मगन भये सब ही नरनारी, प्रगटे भये. . ........ .. ।।१।।

हूंकम चालत सबहिन माही, करै सो होवे हे भाई ।
एक दिन ऐसी चल आई, आप कुछु कारज कू जाई ।।
मध्यान समय इक हाट मे, सूता सुपना आय ।
स्नान करत इक नदिया माही, बया धार के मांही ।।
सन्त काढे पर उपकारी । प्रगटे ...... ..... . .... ।।२।।

जाग मन सोच कीयो भारी, यीतोजग झुठो है सारो।
डुबता राख्यो जीव मारो, शरण अब उनही की धारो ।।
ढूढत ढूढत आईया, नगर दातड़ा माय ।
स्वामी सन्त कृपोलजी, जहां वैठै ध्यान लगाय ।।
दर्श कीनो अति सुखकारी । प्रगटे ... . . . .... .... ........ ।।३।।

दीन होय कीनी लघुताई, नाथ मैं तुमरी शरणाई ।
आप विन मेरे कोई नाहि, डूबता राखयो भव माहि ।।
अब तुम किरपा कीजिये, दीजे मोहि वैराग ।
इतनो सुण स्वामीजी बोल्हा, धन शिख तेरो भाग ।।
बुधि अति निर्मल है थारी । प्रगटे ... .. ........ ... .... . ... ।।४।।

कण वैराग वृतधारी, गुरु आग्या मे अनुसारी ।।
मुठ सुमरण पर अति भारी, लगन लागी है इकसारी ।।

एक समें भण्डार में करत रसोई आप ।
अग्नि जलत कीडी निकसाई, देख कीयो सन्ताप ।।
जीव की करुणा दिलधारी । प्रगटे ·········· ········ ··· ··· ।।५।।

तरक कर निकस्या है वहासे, वीनती कीनी गुरु पासे ।
जीव की मुक्ति होय कैसे, सोई गुरु फरमावो मोसे ।।
तव गुरु ऐसे वोलीया, सुण शिख एक विचार ।
निरवृती होय भजन कर भाई, आरम्भ सकल निवार ।।
जीव हिंसा तज दो सारी । प्रगटे ··· ··· ··· ····· ······ ·· ·· ।।६।।

फकीरी लीनो लैजाकी, ओपमा कहा कहू जाकी ।
गला मे कथा सो नाकी, हाथ में हाडी इक राखी ।।
भवर अजमरी स्तुति घर, तरक त्याग वैराग ।
निरदावे विचरे जगमाहि, नही किसीं सू राग ।।
तजी है माया अरु नारी । प्रगटे ·· ···· ··· ·· ·· ·· ··· ·· ।।७।।

विचर है अपनी इच्छा हो, जगत की परवाहा कछु नाहि ।
सहज मे भीलाडे आये, भेद काहूं ने नही पाये ।।
नवलराम इक दिवस में, सहज भाव चलि आय ।
परमारथ हेत वचन फरमावे, नही आपके चाय ।।
सुणत वाणी लागी अति प्यारी । प्रगटे ····— · · ····· ·· ।।८।।

कही है अणभे मुख वाकी, मुक्ति की जाणो निशानी ।
शासतर वेद युक्त आणी, जगत मे सारेहि जाणी ।।
वाणी सुण जिग्यास जन, चरण लागे आय ।
कहः पुरुष नारी कहा कोई, गिणती गिणन जाय ।।

श्रीरामचरण महाराज के, शिख भये अपरम्पार ।
वड शिख रामप्रतापजी, ज्यौ वडो त्याग वैराग ॥
जाण सवहिन मे अधिकारी । प्रगटे ...... .... " ........ ॥१०॥

उन्हो के शिख एक जाणो, रामलोचनजी परमाना ।
विदेही [देह रहित मानो, दर्श करता सुख उपजानो ॥
उनकी खानाजाद मैं, अनुचर वालक जान ।
लवलीनराम लावणी गाई, अष्ट पदी परमांण ।
लाज तुम रखजो गुरु मारी । प्रगटे ... " ... " .... .... ॥११॥

---

## परोखती पद

### राग चरचरी

पद—राम नाम सुमरें किन प्राणी, ज्यूं छुटै भव फेरारे ।
बाहुत भांति करि करि के दिख्या । हुजा नाहि सेरारे ॥टेक॥

माता पिता भाई सुत बधू, रोम लि जाणै मेरारे ।
घडी पलक मे छाँडि चलेगा, विन मेरु गाडेरारे ॥१॥

माया देखिको हासू फूल्यो, समझै क्यू सवेरारे ।
रावरंक कैसगिन चालो, मत काल की वेरारे ॥२॥

राम भज्या जे ब्रहम समाया, सुखसुद जाही पायारे ।
जन चेतन सतगुरु कैसरणां, हरि खि हरिखि जस गायारे ॥३॥

---

गुरु का सबद सांच करि पकडै, भैंकामारया जागारे ।
जाका चित सता का चरणां, दिन दिन दूणा लागैरे ॥टेर॥

अजंद भेद लहया सो जीया भोगरोग होइ लागारे ।
आगेही कोई भौगी डूवा तातै सुखदेव भागारे ॥१॥
निरमल नहीं जकं नर डूवा, होदा जाका हेरै रे ।
औरस कल भौ सागर मांही, नाम विया तेरुरे ॥२॥
दास कबीर सकल जग परगट, पीपै परचा पायारे ।
भोसागर परि भैराबाधा रे, लगता भेद बतायारे ॥३॥
जनरै दासनीचकुल ऊंचे, तीनं लोक ताहि जाणंरे ।
हरीदास जन निरभै देख्या, तातै उलटी ताणंरे ॥४॥

---

गुरु शबद लै जाग पीयारा, अब क्या सोवै गिवारारे ।
काल गजब सर आण खड़ा है, मारै पकड़ पसारेर ॥टेर॥
अधनीद मैं जै नर सूता, भौ सागर की धारा रे ।
ग्यान विचार भया जो चेतन, परस्या अलक अपारा रे ॥१॥
रावत राणा और [पातसा, फौजा लाख हजारा रे ।
ईनकूं जातन धारन लागै, तेराकूण बसारा ॥२॥
गोपी चन्द बलख पत मै मंद, भर भरिसे मतवाला रे ।
नांनग नाम कबीर फरीदा, हररस पीवण हारा रे ॥३॥
सतदास दादू वाजीदा, गे साहिब का प्यारा रे ।
सुरतराम के शोस बिराजे, राम चरण गुरु मारा रे ॥४॥

---

चार वेद जाकूं नितरटतहै, सेस सहस मुख गावै ।
सुर नर मुनी ताको ध्यान घरत है, ब्रहमा पारन पावै रे ॥२॥
राम नाम स्विरी फल पाया' राज वभीषण पावै ।
अत काल में भै नही व्यापै, राम नाम लिव लावै ॥३॥
राम नाम सू अहल्या तारी, सायर सिला तिरावे रे ।
राम नाम प्रहलाद प्रत ग्या, ध्रुव अटल पद वी पावै रे ॥४॥
राम नाम हनूमान प्रतग्या सायर पार लगावेरे ।
राम नाम सिता आभूपण दास नामदेव गावैरे ॥५॥

---

## राग भैरु

जाग पियारै अब कहाँ सोवे । रेणि गई दिन काहे कू खोवे ॥टेर॥
जन जाग्या जन माणहक पाया । हैम दिभागण सोहि गुमाया ॥१॥
पीव चतुर म्है मूरख नारी । अपना पिया की सेज न सुहारी ॥२॥
म्है भौरी भौरो पन कीन्हौ । भर जोवन मैं पीवन चीन्हौ ॥३॥
कहै कवीर मन तन गुण थईया । तज अभिमानी सुमरिल्है रमईया ।४।

---

जप रै मन मेरा राममा । रे राममा त तरे राम न मा ॥टेर॥
ऋप्टा नोदस चत्र कप्ट मे । सार वताया रे राम मा ॥१॥
सत कौटि रामायण मथ कै । सवत तका ग्रार राम मा ॥२॥
रावण मार रघुवर ध्याया । पुल वाधी लखर राम मा ॥६॥
अवम उघारण जनम सूं घारण । भवसि त्यारण रराम मा ॥४॥
रामचरण एहौ करके स्वामी । मन्त्र गढाया रराम मा ॥५॥

---

रामचरणजी राम स्वरुपा, जिनका दर्शन कीजे हो।
गर्भवास मे फेर न आवे, अमर जुग जुग जीजे हो ।।टेर।।
ध्यनदेश मेवाड मुलक मे, भिलाडो निज धाम हो।
जहाँ प्रगटै रामचरणजी, सब सन्तन मिल गाना हो ।।टेर।।
सुखदेव जैसा त्यागी कहीये, ध्रुव मे ध्यानी सोई हो।
गोरखवसा जत देख्या उनके, सतमानो सब कोई हो ।।१।
सोम सरीसा शीतल कहिये, रवि जैसा प्रकाशी हो।
कमला जू अलिपत जग माहि, सदा रहे इक रासी हो ।।३।
महिमा माये कहत न आवे, ध्यन ध्यन गुरुदेवः हो।
जन तुलसी पर किरपा कीन्ही, दीया नाव निज भेवा हो ।।४।

---

रामजी साधु सगति मोहि दीजे ।
वेर वेर मे करू बीनती, कृपा मोही पर कीजे ।।टेर।
साध सगति ब्रह्मादिक बछै, सनकादिक मुनि ज्ञानी।
जासु रह पावे साधु सगति मे, सो सुख नाही रजधानी ।।१।
करू करुणा उपदेश वतावे, बूढत भुजा पसारै।
साध सगति मे रह बडाई अनेक जतन कर त्यारे ।।२।
सदा आनन्द रहै हिरदे मे हरिदा मे आनन्द मे झुले ।
तिनकी सगति जो किरपा करि छिन भर रामन भूले ।।३।

स्वामी रामचरण बिन कोई जगत मे कर उन चरणो की सेवा ॥टेर॥
राम नाम तुमही से पायो अति गुभ्क भवा ॥१॥
भव सागर के पार करण कू नाम नाव तुम खेवा ॥२॥
आप अचाही अगम अगोचर माथा के नहि लेवा ॥३॥
मुरलीराम राम भजि भाई ये तेरा गुरुदेवा ॥४॥

---

## पद राग चरचरी

नमी नमो सतगुरु के चरणो बार वलिहारो।
दुखी जीव जिन शरणे लिया विपत हमारी ॥टेर॥
राम मत्र कृपा कर दिनो जामै सूज है सारी।
ज्ञान भक्ति वैराग्य बदोतर समता सील विचारी ॥१॥
राम मत्र कू शिवजी जप है ध्रुव प्रहलाद सभारी ।
शीष स हुस दोय रखना सेती लाग रहा एक तारी ॥२॥
यही नाम सनकादिक रटि है कटि है कर्म करारि ।
भर्म भीत भव चक मिट जावे नाम समरथ भारी ॥३॥
माया मोय सकनक कामनी सवही लागे खारी ।
पयारी लागे अन्तर माही निसदिन धुन ररंकारी ॥४॥
धन धन सतगुरु रामचरणजी जिनय हृदया विजारी।
भगवानदास मे उनको चेरो शरणागत सुखकारी ॥५॥

---

पइसो प्यारो लागे कामण गारो रे ॥टेर॥
पइसा से नर ख्यारो लागे हे काजल से कारो रे।
अजब चीज पइसो दुनिया मे कहे जग यो सारी रे ॥१॥
पइसा से नर आदर पावे आधा आप पधारो रे ।
निर्धन वेठो टग मग जोवे लागे सव ने खारो रे ॥२॥

काणो खोडो लुलो लगडो यो पइसो परणावे रे ।
विन पइसा वालो छिल छवीलो नार न पावे रे ॥३॥
पइसा आगे पतो न चाले नही परमेश्वर ध्यावे रे ।
भरी जवानी अधाधुन्ध मे राम न गावे रे ॥४॥
पइसा खातीर परमेश्वर की सो सो सोगन्ध खावे रे ।
वाल वच्या ने छोड परदेशाजावे रे ॥५॥
कहत कबीर सुण भाई साधु पइसा खेल करावे रे ।
बिन पइसा वालो कोई जगत मे दाय न आवे रे ॥६॥

---

मानो वचन हमारो राजा । पांच गांव पडवा कुदीजे ओर
सब राज तुम्हारो ॥टेर॥
दखण शहर दिल्ली भीदीजे मांडू शहर सिनारो रे ।
वेठण कू हस्तिनापुर दीजे गढ गिरनार बिचारो रे ॥१॥
ये नही दूगासुई के अग रे रण सग्राम विचारो रे ।
राज नित कि ऐही वडाई कोई जीतो कोई हारो रे ॥२॥
यो भार धम लो नही राजा अति अहकार निवारो रे।
घर टूटे और घर त्या पड़ है वहसीख ड़ग दुधारो रे ॥३॥
कते कृष्ण मून दुरयोधन क्यू करे कुटुम्ब सहारो रे ।
भीडो होकर वेगा आज्यो देखूं जौर तुम्हारो रे ॥४॥
भरी सभा मे राजा वोल्यो कोन करे बिष टालो रे ।
राजनिती की तुम नही जानो धेनू चरावहन हारो रे ॥५॥
सुणरै अव अध का जाया बोलत वचन अकारो रे ।

रामचरण प्रमकिम पधारो रे कर गये ज्ञान प्रकास ।।२।
साघ हजारो रामस्नेही आवत फागुण मास ।।३।।
फूल डोल के उछत्र करहे, हिलमिल दास जिज्ञास ।।४।
रामभजन सव रसना गावत. जहान ही ग्रान उपास ।।५।
कलजुग मे सतजुग वरतारो, समझे सुघड सुदास ।।६।
जगन्नाथ परसे जहाँ दर्शे, दशू दिशा जस तास ।।७।

---

## पद राग विहंग

मन रे ऐसी पकड करारी, राम भया सतगुरु की किरपा ।
निम दिन राम उचारी ।।टे
तजि ससार स्वाद्द तन मन का, गहै वैराग अपारी ।
सवि सगति मिल हरि गुन गावे, ऐज्यू छूटं जम मार ।।१।
नर तन दुरलभ जांन वावरे, ब्रह्मा करत पुकारी ।
सोतन रोते वाद गुमायो, विखे विकारा हारी ।।२।
कनक कामनी दोन्यू तजिये, वा सग उछिघारी ।
यामै पड़ीया सुलभै नाही, गौतम गौता भारी ।।३।
गह वकवास उसी दृढ गहीये, हरि भजन उतरो पारी ।
ब्रह्मदास भजराम अमृत, सतगुरु शरण विचारी ।।४।

---

मनरे गह सतगुरु की शरणा. राम नाम निस वासर सुमरो ।।टे
मन चचल नी चल सू ल्यावो, सुरत शव्द मे घरना ।
इस बिधि ध्यान घरो घट भीतर, राम शव्द उचरना ।।१।
सास उसासा सुमरण करीये, झूठ कपट सूं टरना ।
राग दोप अर मान वडाइया मे भूल न करना ।।२।
होय निवाणा हरि रस पीजै कीजे निवन निरणा ।

निर पर वचन राम की चरचा, परवा परवी नही करना ।।३।।
सतगुरु चरणा मिटै है मरणा, सविसगति सुख शरणा ।
ब्रह्मदास, राम तव राजी, तजो आॅन का शरणां ।।४।।

---

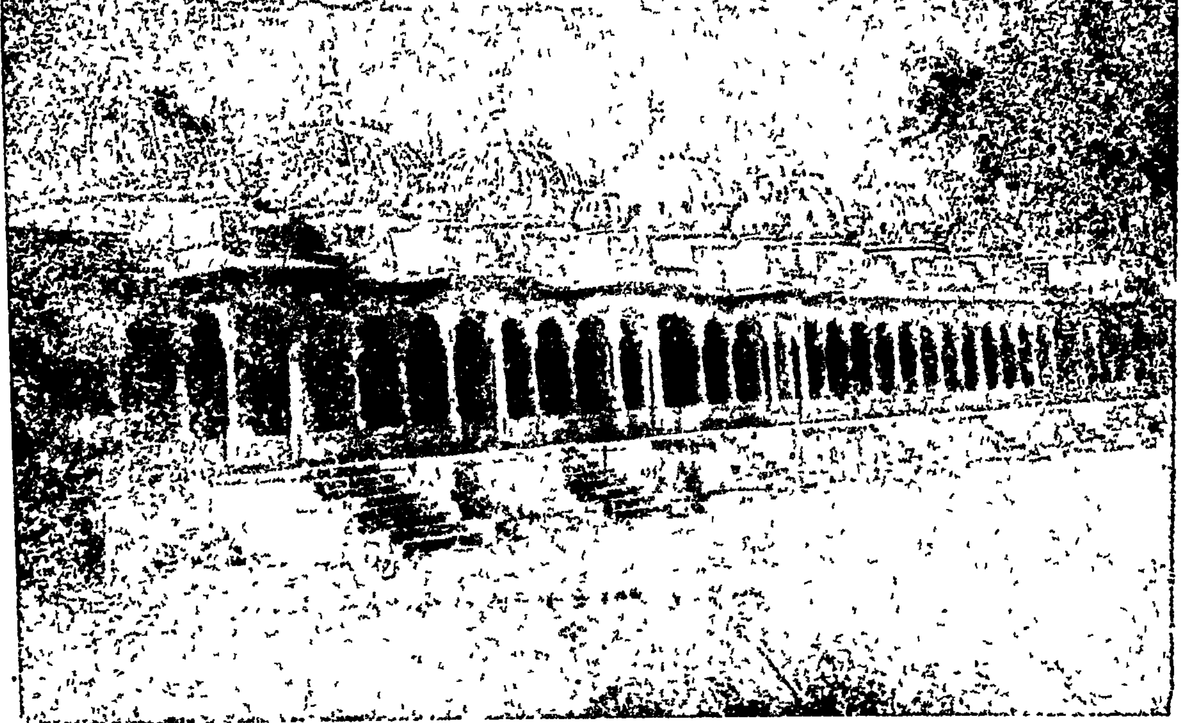
## राग चरचरी

जन्नीया की मोजा भोजा चली नगारा देती है रे ।
पीछा सु दलबदल वादल उल्टयो जुरारमण भव साती रे ।।टेरे।।
काया कोठज लागी चोटज वतीस कागरा दूटावे रे ।
काला वाल गिरदमें मिल्या धोला थांणा देतीवे ।।१।।
खूणे वेठो मूंडज घूणै सुरत गई सव ऊठीवे ।
नेण नासिका भरवा लागा देह वद गया छटी वे ।।२।।
वालपणी अर भर जोवन मे सेवा सुमरण कीजे वे ।
नरसी नो स्वामी अतरजामी चरण कवल चित दी जेवे ।।३।।

---

## पद राग चरचरी

नोजन ऊधोमोहिन बिसारो ताहिन बिसारो पलपाव घडो रे ।।टेर।।
जो महि भजू मे भजू वाकु न भूनू छिन पाव घडी रे ।
जनम जतम के फदा काटू राखू सुख आनद घडी रे ।।१।।
चतुर सूजान सभा मे वैठा दुस्सासन अन हीतकारी रे ।
सुमरण कियो द्रोपति जबही चीर बढायो रे उसी घडी रे ।।२।।
ध्रुव प्रहल्लाद प्रेम से ध्यावे प्राप्त भये बैकूंठपुरी रे ।
भारती मे भवरी का इडो तिन पर गज की घट घरी रे ।।३।।



पीठाधीशों एवं प्रमुख सन्तों की समाधियां, शाहपुरा (भीलवाड़ा) राज०